जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

उदयपुर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 33 संख्याः 13 प्रभात उदयपुर, शुक्रवार, 14 नवम्बर, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

क्या नीतीश कुमार, लालू यादव का प्रस्ताव स्वीकार करेंगे, साल भर के लिए मु.मंत्री पद संभालेंगे

लालू यादव की सोच है कि अगर नीतीश ने पाला बदला तो अतिरिक्त लाभ यह होगा कि केन्द्र में मोदी सरकार भी संकट में आ जाएगी

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 नवंबर। सारी नज़रें अब नीतीश कुमार पर टिकी हैं, उस व्यक्ति पर जो 20 साल तक सत्ता में रहने के बाद एक बार फिर "राजा" बनना चाहता है।

उन्हें कभी "सर्वाइवर इन चीफ़" तो कभी "पलटू राम" कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने बार-बार अपनी राजनीतिक निष्ठा बदली है, कभी भाजपा के साथ, फिर लालू यादव के साथ, फिर दोबारा भाजपा के साथ, और यह सिलसिला जारी रहा है।

इस बार भी वे भाजपा के साथ गठबंधन में रहते हुए लालू यादव के साथ बातचीत में जुटे हैं। लेकिन भाजपा द्वारा अब तक उन्हें मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित न करने से तनाव और असंतोष का माहौल बन गया है। अगर भाजपा और जद (यू) का प्रदर्शन उम्मीद से कम रहा, तो इसका एक बड़ा कारण कार्यकर्ताओं में नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री प्रत्याशी न बनाए जाने से उपजा आक्रोश भी हो सकता है, और इसकी जिम्मेदारी भाजपा पर आ सकती है।

लालू यादव की ओर से नीतीश कुमार के लिए प्रस्ताव अब भी खुला है,

- जैसा कि विदित ही है, दिल्ली में मोदी सरकार को जीवित रहने के लिए चंद्रबाबू नायडू व नीतीश कुमार का समर्थन अनिवार्य है।
- ऐसा माना जा रहा है कि जदयू व भाजपा का सपोर्ट बेस काफी सिकुड़ा है। हालांकि, एग्ज़िट पोल कुछ भी आकलन लगा रहे हों, दोनों पार्टी गत चुनाव के मुकाबले काफी कमज़ोर होंगी, इस बार।
- एनडीए के लिए यह शुभ समाचार नहीं है।
- अतः एनडीए को यदि बहुमत नहीं मिल पाया तो लालू के नीतीश कुमार को दिए गए प्रस्ताव में काफी दम आ जाएगा।

वे आरजेडी-कांग्रेस गठबंधन में शामिल हों और एक साल के लिए मुख्यमंत्री बनें। इसके बाद तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री बनेंगे और नीतीश कुमार के बेटे को उपमुख्यमंत्री बनाया जाएगा। लालू यादव की गणना यह है कि अगर नीतीश कुमार पाला बदलते हैं तो इसका सीधा असर नरेन्द्र मोदी की केन्द्र सरकार पर पड़ेगा। भाजपा ने पिछला लोकसभा चुनाव 240 सीटों के साथ जीता था, जबकि एग्ज़िट पोल्स ने उसके लिए 400 सीटों का अनुमान लगाया था, इसलिए अब भाजपा अपनी सरकार को बचाए रखने के लिए चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार पर निर्भर है।

भाजपा पिछले छह महीनों से बिहार चुनाव को सूक्ष्म स्तर पर नियंत्रित करने में लगी हुई है और हर हाल में सत्ता में लौटने की उम्मीद कर रही है।

लेकिन ज़मीनी स्तर पर लोगों का कहना है कि, भाजपा और जद (यू) दोनों के समर्थन आधार में बड़ी गिरावट आई है। यह सत्तारूढ़ गठबंधन के लिए बुरी खबर है, भले ही एग्ज़िट पोल्स एक चमकीली तस्वीर पेश कर रहे हों। इतिहास बताता है कि बिहार के मामले में एग्ज़िट पोल्स शायद ही कभी सही साबित हुए हों।

तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार की जान ली

जयपुर, 13 नवम्बर। हरमाड़ा थाना इलाके के सीकर हाईवे पर गुरुवार को फिर एक तेज रफ्तार डंपर ने बाइक सवार युवक की जान ले ली और दूसरे को गंभीर रुप से घायल कर दिया। हादसे के बाद डंपर चालक गाड़ी छोड मौके से फरार होने में कामयाब हो गया। हादसे के बाद हाईवे पर लंबा जाम लग गया। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल युवक को उपचार के लिए एक निजी अस्पताल में भिजवाया। वहीं, मृतक के शव को अपने कब्जे में लेकर

- जयपुर-सीकर हाईवे पर बाइक को कुचलने के बाद चालक डंपर छोड़कर भाग गया।

पोस्टमार्टम के लिए कांवटिया अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया।

दुर्घटना थाना वेस्ट में तैनात हेड कॉन्स्टेबल भरत सिंह ने बताया कि मध्य प्रदेश निवासी सोनू (30) अपने साथ गौरीशंकर (29) निवासी बरवाड़ा सामोद निवासी के साथ सोलर प्लांट लगाने का काम करता है। दोनों दोस्त गुरुवार सुबह साढ़े 10 बजे अपने किसी काम से सीकर हाईवे पर स्थित टोडी मोड़ तिराहे से होते हुए चौमू से जयपुर आ रहे थे। इसी दौरान टोडी मोड़ पर तेज रफ्तार डंपर ने पीछे से बाइक को जोरदार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'अगर सरकार नहीं बनी तो नीतीश का हम क्या करेंगे'

भाजपा में इस असमंजस की स्थिति को लेकर काफी सोच व चिंतन चल रहा है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 नवम्बर। बिहार में 14 नवंबर को होने वाली मतगणना से ठीक पहले, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शीर्ष नेतृत्व में असमंजस और बेचैनी का माहौल है। चिंता इस बात की है कि अगर पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर नहीं उभरती, तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से कैसे निपटा जाए।

अत्यधिक महत्वपूर्ण बिहार विधानसभा चुनाव को भाजपा के लिये प्रतिष्ठा की लड़ाई माना जा रहा था, लेकिन इसके नतीजे आने से पहले ही पार्टी के राज्य और केन्द्रीय नेतृत्व के बीच रणनीति, नेतृत्व और भविष्य के गठबंधनों को लेकर पुराने मतभेद, अप्रत्याशित रुप से, फिर उभर आए हैं।

भाजपा के वरिष्ठ सूत्रों के अनुसार, "नीतीश फैक्टर" ने बिहार भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) दोनों के भीतर गहरी हलचल पैदा कर दी है। अंदरूनी सूत्र बताते हैं कि मुख्य विवाद उस राजनीतिक जोखिम को लेकर है, जो भाजपा ने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद का चेहरा न बनाकर उठाया, जबकि पार्टी के कुछ कार्यकर्ता और मतदाता जमीनी स्तर पर उनके जबरदस्त समर्थक थे।

- इस संभावना से भाजपा नेतृत्व में भी मतभेद उभरने लगे हैं, पार्टी की चुनावी रणनीति को लेकर।
- साथ ही भाजपा व आरएसएस में भी इस विषय से खिंचाव पैदा हो रहा है कि क्या नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री प्रोजेक्ट नहीं करने का निर्णय सही था।
- भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व ने पक्का मन बना लिया था कि नीतीश को मुख्यमंत्री नहीं बनाना चाहिए और भाजपा को बिहार में अपनी स्वतंत्र पहचान बनानी चाहिए।
- भाजपा के रणनीति विशेषज्ञ भी अब यह स्वीकार कर रहे हैं कि अगर आरजेडी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरती है और कांग्रेस का प्रदर्शन भी कुछ बेहतर होता है तो मोमैन्टम तेजस्वी यादव के पक्ष में हो जाएगा, इसलिए आरजेडी बड़ा आक्रामक रूख अपना रही है और भाजपा को किसी भी तरह से राजनीतिक चालबाजी का मौका नहीं देना चाहती तथा जल्द से जल्द बहुमत प्रदर्शित करना चाहती है।

पटना में भाजपा के एक शीर्ष पदाधिकारी ने स्वीकार किया कि नेतृत्व ने शायद नीतीश कुमार की निरंतर राजनीतिक प्रासंगिकता को कम करके आंका। उन्होंने कहा, "केन्द्रीय नेतृत्व बिहार में भाजपा की स्वतंत्र पहचान स्थापित करने के लिए कटिबद्ध था।" लेकिन अब पीछे मुड़कर देखें तो नीतीश को अलग रखना महंगा साबित हो सकता है। उन्होंने यह भी इशारा किया कि अगर नतीजों के बाद संख्या बल की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सख्त सुरक्षा इंतजामात के बीच सुबह आठ बजे मतगणना शुरु होगी पटना में

भाजपा ने जीत की खुशी में आयोजित होने वाले आयोजनों के लिए भारी मात्रा में लड्डुओं का ऑर्डर दिया है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 नवम्बर। 2025 बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों से पहले, जहाँ एक ओर आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है, वहीं, दूसरी ओर जश्न की तैयारियाँ भी जोरों पर हैं। भाजपा ने अपनी संभावित जीत के जश्न के लिए लड्डुओं का ऑर्डर दे दिया है।

पटना में माला बेचने वाले भी उम्मीद कर रहे हैं कि जीत चाहे किसी भी पक्ष की हो, उनका कारोबार तो अच्छा ही रहेगा।

मतगणना शुक्रवार, 14 नवंबर को सुबह 8 बजे शुरु होगी। अगर एग्ज़िट पोल सही साबित हुए और सत्तारुढ़ एनडीए (जेडीयू-भाजपा गठबंधन) की लहर चली, तो शुरुआती रुझान जल्द ही

- माल बनाने वाले भी बहुत खुश हैं, चाहे जो जीते और जो हारे, उनका धंधा खूब चलेगा शुक्रवार को।
- सुरक्षा व्यवस्था दो चक्रों में की गई है, अंदर का चक्र केन्द्रीय अर्द्ध सैनिक बल को सौंपा गया है तथा बाहरी चक्र राजकीय पुलिस संभालेगी।
- वोटिंग मशीनें डबल लॉक सिस्टम से सुरक्षित कर स्ट्रॉंग रूम में रखी गई हैं तथा 7.4 करोड़ मतदाताओं का निर्णय दोपहर तक सामने आ जाएगा।

साफ हो सकते हैं।

इसी बीच, विपक्ष ने गुरुवार को एक बार फिर "चुनावी गड़बड़ी" की आशंका जताई है और कहा है कि हाल के समय में एग्ज़िट पोल तो कई बार गलत साबित हुए हैं।

नतीजे तय करेंगे कि क्या राज्य के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे जेडीयू प्रमुख नीतीश कुमार एक बार फिर शपथ लेंगे, या फिर विपक्षी महागठबंधन, जिसमें इंडिया ब्लॉक की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नई भर्ती में 2021 के अभ्यर्थियों को आयु में छूट नहीं

जयपुर, 13 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने पेपर लीक से प्रभावित एसआई भर्ती-2021 में शामिल रहे अभ्यर्थियों को साल 2025 की भर्ती में आयु सीमा में छूट देने के संबंध में एकल पीठ की ओर से दिए आदेश की क्रियान्विति पर रोक लगा दी है। अदालत

- हाई कोर्ट की खंडपीठ ने एकल पीठ के आदेश पर रोक लगाई।

ने माना कि एकलपीठ की ओर से अपने आदेश में की गई टिप्पणियां अनावश्यक थीं। एक्टिंग सीजे संजीव प्रकाश शर्मा और जस्टिस बीएस संधू की खंडपीठ ने यह आदेश राज्य सरकार की अपील को स्वीकार करते हुए दिए।

अपील में महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि एकलपीठ के समक्ष केवल यह विचारणीय बिंदु था कि एसआई भर्ती-2021 में शामिल हुए अभ्यर्थियों को नई भर्ती में आयु सीमा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मोदी सरकार की लाल किले के पास हुए आतंकवादी विस्फोट पर प्रतिक्रिया कुछ ज्यादा संयमित नहीं थी?

द वायर के संपादक सिद्धार्थ वर्धराजन ने इस संयमित प्रतिक्रिया का कारण ट्रंप व अमेरिका की अपरिपक्व सोच बताया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 नवम्बर। दिल्ली में सोमवार को लाल किले के पास हुये बम विस्फोट में 13 लोगों की मौत के बाद मोदी सरकार की प्रतिक्रिया बेहद संयमित रही। मंगलवार को केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में केवल एक सामान्य प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें न तो किसी संगठन का नाम लिया गया, न ही किसी देश पर उंगली उठाई गई। यह प्रतिक्रिया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उस कड़े बयान से बिल्कुल अलग थी, जो उन्होंने 12 मई को "ऑपरेशन सिंदूर" को "रोकने" के तुरंत बाद दिया था:

"पहला, अगर भारत पर आतंकी

- शायद सरकार को आशंका थी कि यह कहना मुश्किल है कि ट्रंप इस विध्वंसकारी गतिविधि का कौन सा पहलू पकड़ कर अनर्गल बयानबाजी शुरु कर दें, जैसा ऑपरेशन सिंदूर के बाद हुआ था।

हमला होता है, तो उसका माकूल जवाब दिया जाएगा...

"दूसरा, भारत किसी भी तरह के परमाणु ब्लैकमेल को बर्दाश्त नहीं करेगा। भारत उन आतंकी ठिकानों पर सटीक और निर्णायक प्रहार करेगा, जो परमाणु धमकियों की आड़ में विकसित हो रहे हैं...

"तीसरा, हम आतंकवाद को पोषित करने वाली सरकार और आतंक के सूत्रधारों के बीच कोई फर्क नहीं करेंगे।

"द वायर" के सम्पादक सिद्धार्थ वरदराजन लिखते हैं, दिल्ली धमाके के बाद दिखाई गई इस संयमित प्रतिक्रिया का कारण शायद यह है कि घटना की पूरी तस्वीर अभी साफ़ नहीं है। हालाँकि यह सवाल भी उठता है कि अगर स्थिति इतनी अस्पष्ट थी तो प्रधानमंत्री ने पहले से इतना आक्रामक और अव्यावहारिक रुख क्यों अपनाया था। वे यह भी लिखते हैं कि यह इसलिए भी हो सकता है कि प्रधानमंत्री को पता है कि जब भारत ने पहले पहलगाम हमले के बाद सैन्य कार्रवाई की थी तो विश्व समुदाय, खासकर अमेरिका और उसके राष्ट्रपति, ने कैसी प्रतिक्रिया दी थी।

सरकार की चुप्पी के बावजूद, मीडिया के कुछ हलकों में "तुर्की एंगल" को लेकर अटकलें शुरू हो गईं। इस पर अंकारा (तुर्की) ने कड़ा बयान जारी करते हुए "भारत और तुर्की के द्विपक्षीय संबंधों को नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से चलाई जा रही दुष्प्रचार मुहिम" की कड़ी निंदा की।

विजयता सिंह कहती हैं, जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा जिस "आतंकी मॉड्यूल" की जांच की जा रही है, उससे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारत ने लद्दाख में 1962 से बंद एयर बेस चालू किया

नयी दिल्ली, 13 नवम्बर। भारत ने पूर्वी लद्दाख में अपनी सैन्य तैयारियों को पुख्ता करते हुए चीन के साथ 1962 की लड़ाई के बाद से बंद पड़े सामरिक रूप से महत्वपूर्ण न्योमा एयर बेस को एक बार फिर से सक्रिय रूप से चालू कर दिया है।

वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए पी सिंह ने बुधवार को खुद वहां जाकर

- वायुसेना के प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने सामारिक रुप से महत्वपूर्ण एयर बेस का उद्घाटन किया।

इसका उद्घाटन किया। एयर चीफ मार्शल वायु सेना के भारी भरकम मालवाहक विमान सी-130 जे से वहां उतरे और एयर बेस का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उनके साथ वायु सेना की पश्चिमी कमान के प्रमुख भी थे।

दुनिया के सबसे ऊंचे हवाई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बांग्लादेश सरकार इस्लामिक ताकतों के आगे झुकी तथा फरवरी 2026 में चुनाव कराने की घोषणा की

बांग्लादेश की इस्लामिक ताकतें नहीं चाहती थीं कि अन्य राजनीतिक दलों को मौका मिले चुनाव प्रचार करने का या संगठित होने का और यकायक चुनाव करा दिये जाएं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 13 नवंबर। पड़ोसी देश बांग्लादेश फरवरी 2026 में आम चुनाव कराने जा रहा है। इसी के साथ एक "राष्ट्रीय चार्टर" पर जनमत संग्रह भी कराया जाएगा। फरवरी में चुनाव कराने की इस अचानक घोषणा से कई लोग हैरान है, क्योंकि इसके लिए तैयारी का समय बहुत कम बचा है।

वर्तमान अंतरिम सरकार, जिसके मुखिया मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस हैं, एक तरह से बांग्लादेश की राजनीति में इस्लामिक ताकतों के दबाव में झुकती दिख रही है, क्योंकि इन्हीं तत्वों ने जल्दी चुनाव कराने की मांग की थी, ताकि मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टियाँ अचंभे में पड़ जाएँ और तैयारी न कर सकें।

भारत के दृष्टिकोण से बांग्लादेश में स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से चुनी गई सरकार का गठन स्वागत योग्य होगा, लेकिन अंतरिम सरकार के कुछ कदम, खासकर इस्लामिक और आतंकी संगठनों को फिर से बांग्लादेश में पैर जमाने की अनुमति देना, भारत के लिए गंभीर सुरक्षा चिंता का कारण बन रहे हैं।

हाल की रिपोर्टों के अनुसार, पाकिस्तान के कुख्यात आतंकी मसूद अजहर का एक शीर्ष सहयोगी हाल ही में बांग्लादेश में था। उसने भारत-बांग्लादेश सीमा के कुछ हिस्सों का दौरा भी किया, संभवतः भारत के खिलाफ किसी गतिविधि की योजना के लिए।

- जैसा कि विदित ही है, प्रमुख राजनीतिक पार्टी अवामी लीग पर अभी भी प्रतिबंध लगा हुआ है तथा राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने का मौका नहीं दिया गया है उन्हें।
- गत वर्ष विद्यार्थियों के एक आंदोलन में अवामी लीग की सरकार का तख्ता पलट कर नया भ्रष्टाचार युक्त सिस्टम स्थापित करने का संकल्प लिया था।
- अभी छात्र आंदोलन भी चुनाव करवाने के पक्ष में नहीं हैं व नया संविधान बनाना चाहते हैं, जिससे बहु जाति, बहु धर्म, बहु भाषा से सुसज्जित राष्ट्र बने बांग्लादेश।
- पर, किसकी चलेगी, राष्ट्रवादी छात्र आंदोलन की या इस्लामिक ताकतों की, जो पाकिस्तान के आतंकवादी संगठनों से सहयोग करना चाहती है, इस्लामिक एकता के नाम पर।

ऐसी खबरें आ रही हैं कि पाकिस्तान भी बांग्लादेश में अपने भारत-विरोधी षड्यंत्रों के लिए फिर से प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।

वर्तमान सत्तारूढ़ तत्व कट्टर भारत-विरोधी हैं और उन्होंने पाकिस्तान और उसके आतंकी संगठनों को बांग्लादेश में अपनी पकड़ मज़बूत करने में मदद दी है।

इन घटनाओं पर प्रतिक्रिया देते हुए पूर्व प्रधानमंत्री और उनकी पार्टी ने मांग की है कि बांग्लादेश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव तभी संभव हैं, जब आवामी लीग पर लगा प्रतिबंध हटाया जाए। अवामी लीग, जिसने देश की आज़ादी के बाद अधिकांश समय शासन किया, को सरकार के खिलाफ सफल जनविद्रोह के बाद प्रतिबंधित कर दिया गया था।

पिछले वर्ष हुए छात्र आंदोलन ने अवामी लीग सरकार को सत्ता से बेदखल कर दिया और प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़ने पर मजबूर कर दिया। शेख हसीना भारत में शरण लेकर अब यहीं रह रही हैं। बांग्लादेश सरकार ने भारत से उन्हें सौंपने की मांग की है, ताकि उनके विरुद्ध चल रहे मुकदमे की सुनवाई आगे बढ़ाई जा सके।

बांग्लादेश में छात्र आंदोलन और व्यापक हिंसा के बाद, आंदोलनकारी छात्र नेताओं और अन्य समूहों ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पुणे में 25 गाड़ियां टकराईं, 9 की मौत

पुणे, 13 नवम्बर। पुणे के बाहरी इलाके में नवले ब्रिज के पास गुरुवार शाम एक ट्रक का ब्रेक फेल होने से 20 से 25 गाड़ियां आपस में टकरा गईं। ट्रक सबसे पहले एक कार से टकराया। कार आगे जा रहे कंटेनर से भिड़ गई और

- ब्रेक फेल होने से ट्रक कार से टकराया, जो कंटेनर से टकराई और आग लग गई, फिर और गाड़ियां टकराती गईं।

उसमें आग लग गई। ट्रक भी जल गया।

हादसे में कार सवार 5 लोग जिंदा जल गए। ट्रक ड्राइवर समेत 9 लोगों की मौत हो गई। हादसे में करीब 20 लोग घायल भी हुए हैं।

पुलिस के मुताबिक हादसा पुणे-नासिक हाईवे पर भोरगांव के पास हुआ। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार बुरी तरह से कंटेनर और ट्रक के बीच दब

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

ज्ञानी जन विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से,
अज्ञानी पुरुष आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। –कौटिल्य

ईज ऑफ जस्टिस के बिना अधूरी है, ईज ऑफ डूईंग तथा ईज ऑफ लिविंग की परिकल्पना

दिनांक 8-9 नवम्बर, 2025 को दिल्ली में नालसा (नेशनल लिगल सर्विसेज ऑथोरिटी) द्वारा राष्ट्रीय अधिवेशन सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली की प्रिमीसेज में आयोजित किया जाता था। चर्चा का विषय था 'कानूनी सहायता वितरण तंत्र को सशक्त बनायें'। इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री मोदी ने किया था। अपने उद्घाटन भाषण में मोदी ने कहा, 'कानूनी सहायता वितरण तंत्र की दृढता तथा कानूनी प्रक्रिया से सम्बन्धित यह कार्य प्रणाली न्यायिक व्यवस्था को शक्तिशाली धरातल देगा अत: आयोजन के हेतु आप सबको बधाई देता हूँ। साथ ही मोदी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि ईज ऑफ जस्टिस के बिना ईज ऑफ डूईंग और ईज ऑफ लिविंग तभी संभव है जब ईज ऑफ जस्टिस अर्थात् न्याय आसानी से अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच सके। मोदी ने ईज ऑफ जस्टिस पर यह भी घोषित किया कि कानून की भाषा सरल सुगम्य होनी चाहिये ताकि न्याय प्राप्त करने वाला व्यक्ति इसे समझ सके।

राष्ट्रीय अधिवेशन में जस्टिस सूर्यकान्त की उपस्थिति बहुत ही प्रभावशाली थी। अपने Valedictory भाषण में उन्होंने ईज ऑफ जस्टिस की बहुत सुन्दर व्याख्या की। जस्टिस सूर्यकान्त नालसा के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं। उनका कहना है कि नालसा ने न्याय की चाह को देश के कोने-कोने तक पहुँचाया है। वहाँ तक पहुँचाया है जहाँ वे लोग हैं, जो देश की निगाहों में खो चुके थे, जिनकी आवाज अनसुनी थी।

राष्ट्रीय अधिवेशन दो दिन का था। कई विषयों पर चर्चायें इन दो दिनों में की गईं। जस्टिस सूर्यकान्त ने ऑपनिंग सेशन्स में "Institutional Defence for Inclusive Justice" विषय पर चर्चा प्रारम्भ करते हुये नालसा की भूमिका को सराहा। उन्होंने पेनल लॉयर्स (PLVS) द्वारा कानूनी सहायता दिये जाने को अभूतपूर्व कर्म की संज्ञा दी।

जस्टिस सूर्यकान्त के अतिरिक्त सुप्रीम कोर्ट के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई और जस्टिस विक्रमनाथ का भाषण भी बहुत प्रभावशाली व ज्ञानवर्धक था। ईज ऑफ जस्टिस की भूमिका का विस्तार से उन्होंने विवेचन किया था उनका कहना था न्याय के दरवाजे सबके लिये खुले हैं, यहाँ धर्म जाति आदि के भेदभाव का कोई बंधन नहीं है। भारत के मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई ने जो नालसा के Patron-in-Chief हैं, ने उन न्यायायिक अधिकारियों को जो डेपूटेशन पर भेजे जाते हैं, आव्हान करते हुये कहा कि न्याय आसान हो, तब ही सम्भव है, जब वह संवेदनशील और मानवीय होकर न्याय चाहने वालों तक सुगम व त्वरित गति से पहुँचाया जा सके।

न्याय केवल वह न्याय नहीं है जो विवाद होने पर दो पक्षों में के मध्य न्यायालय करता है। संविधान के प्रियम्बल में तीन प्रकार के न्याय की बात कही गई है सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय। इसे क्रमश: हम देखें तो पायेंगे कि सामाजिक न्याय की प्रथम आवश्यकता तथा आर्थिक न्याय दूसरे और राजनीतिक न्याय तीसरे स्थान पर रहता है।

राष्ट्रीय अधिवेशन में, जिसका उल्लेख ऊपर किया है देश के प्रधानमंत्री और सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि न्याय की भाषा वही हो जो न्याय पाने वाले को समझ में आये। संविधान की 8वीं अनुसूची में दी गई भाषायें ही भारत की भाषायें हैं इनमें विदेशी भाषा अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है। फिर अंग्रेजी अभी तक क्यों?

इस देश में पैदा होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को मूल अधिकार दिये हैं, जिनका उल्लेख संविधान के तीसरे अध्याय में दिये हैं। ये राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक अधिकार हैं। दूसरे व तीसरे अधिकारों का उल्लेख संविधान के चतुर्थ चेप्टर में दिये हैं। इनकी पूर्ति करना राज्य का कर्त्तव्य है।

आरक्षण का अधिकार सामाजिक न्याय का एक पहलु है। संविधान ने अनुच्छेद 14 में घोषित किया कि राज्य देश में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से या विधियों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा। अनुच्छेद 15 में धर्म, जाति, या जन्म स्थान लिंग के आधार पर विभेद का प्रतिषेध किया गया है।

न्याय आसान तभी होगा जब न्याय सभी को मिले, जिसे नागरिक अपनी भाषा में समझे। जीवन को आसान बनाने के हेतु न्याय में सुगमता और पहुँच तथा त्वरित जरूरी है।

मोदी जी ने सही कहा है कि न्याय में सुगमता सुनिश्चित हो, न्याय सभी के लिये हो, समय पर मिले, हर व्यक्ति तक पहुँचे वह भी सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से बिना भेदभाव किये। न्याय प्रत्येक पीडित व्यक्ति को उसकी अपनी भाषा में मिले।

हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले को जहाँ 7 माननीय जज एक बात कहते हैं तो 6 न्यायाधीश दूसरी बात। जब इस पहेली का निर्णय बडे-2 न्यायाधीश भी नहीं कर पाये हैं तो एक बिना लिखा व्यक्ति क्या उस निर्णय को समझ सकता है। सुप्रीम कोर्ट के दो जजों की पीठ के कई निर्णय हैं जहाँ वे आपस में सहमत नहीं है, फिर गरीब के पास साधन कहाँ है कि जीवन भर मुकदमा लड़ता रहे? वह तो भूखा ही कोर्ट गया था भूखा ही मर जावेगा।

वर्तमान समय में सुप्रीम कोर्ट ने 80000 से ज्यादा निर्णयों का 18 भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराया है। यह एक सराहनीय कदम है। पुराने सैकड़ों कानूनों को समाप्त किया है नये युग के हेतु नये कानून बनाये हैं 1949 में जब आजादी के बाद राजस्थान राज्य बना, उस समय राजस्थान हाईकोर्ट की भाषा हिन्दी थी (देखिये राजस्थान हाईकोर्ट ऑर्डिनेन्स, 1949)। आज भी देश के हाईकोर्ट्स व सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी ही है। हाँ राजस्थान में 1987 के बाद से हिन्दी में कुछ नगण्य निर्णय हुये हैं। किन्तु सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी है। अनुच्छेद 348 के अनुसार सुप्रीम कोर्ट व हाईकोर्ट्स में प्रयोग की जाने वाली अंग्रेजी भाषा रखी गई है किन्तु यह प्रतिबंध स्थायी नहीं है, संसद कानून बनाकर हिन्दी को उसका स्थान दे सकती है। हिन्दी राज्य भाषा है, इसमें कोई शंका नहीं है। (पढ़िये अनुच्छेद 343)।

उपरोक्त राष्ट्रीय सम्मेलन ने सर्वोच्च न्यायालय के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश और नये होने वाले मुख्य न्यायाधीश व अन्य न्यायाधीशों ने तथा पी एम मोदी ने एक स्वर में कहा है कि न्याय आसान हो वह तभी हो सकता है जब न्याय प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा में समझे। फिर समझ से परे है कोर्ट्स की भाषा अंग्रेजी क्यों है, क्यों नहीं संसद इस हेतु कानून बना दे? संविधान के अनुच्छेद 120 में संसद की भाषा हिन्दी 26 जनवरी 1965 के बाद हो चुकी है तो फिर विलम्ब क्यों? राष्ट्रीय अधिवेशन में, जिसका उल्लेख ऊपर किया है देश के प्रधानमंत्री और सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि न्याय की भाषा वही हो जो न्याय पाने वाले को समझ में आये। संविधान की 8वीं अनुसूची में दी गई भाषायें ही भारत की भाषायें हैं इनमें विदेशी भाषा अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है। फिर अंग्रेजी अभी तक क्यों? लेखक के कहने का यह अभिप्राय नहीं है कि अंग्रेजी के प्रयोग को तत्काल समाप्त कर दिया जावे। हाँ, इसका प्रयोग प्रारम्भ कर दिया जावे और 15 वर्ष की अवधि के बाद सुप्रीम कोर्ट का कार्य पूर्ण रूप से हिन्दी में स्वत: हो।

सत्यमेव जयते!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन,
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

भगवान बिरसा मुंडा और गोविंद गुरु : जनजातीय अस्मिता, स्वाभिमान और स्वतंत्रता चेतना के अमर प्रतीक

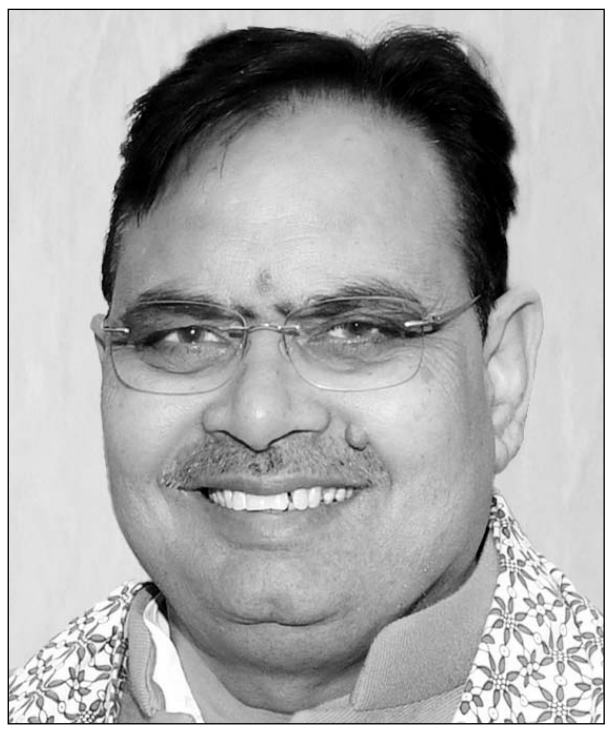

भजनलाल शर्मा

भारत का स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आदिवासी समाज ने अपने साहस, स्वाभिमान और अदम्य इच्छाशक्ति से अंग्रेज साम्राज्य की नींव हिला दी। इनमें भगवान बिरसा मुंडा का नाम सर्वोपरि है। बिरसा मुंडा ने अपने अल्प जीवन में ही आदिवासी चेतना, स्वतंत्रता और संस्कृति की मशाल जलाकर एक अमर अध्याय रचा।

झारखंड के खूंटी जिले के उलिहातु गांव में 15 नवंबर 1875 को जन्मे बिरसा मुंडा ने यह दिखा दिया कि आयु नहीं, उद्देश्य की गहराई ही इतिहास रचती है। मात्र 25 वर्ष की आयु में वे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक विराट आंदोलन के जनक बने। उन्होंने आदिवासी समाज को 'उलगुलान' अर्थात महान जनविद्रोह के लिए संगठित किया। यह केवल अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ नहीं, बल्कि जल, जंगल और जमीन के अधिकारों की पुन: प्राप्ति का आंदोलन था।

बिरसा मुंडा का उदघोष अबुआ दिशुम, अबुआ राजअर्थात हमारा देश, हमारा राज आदिवासी अस्मिता की पहचान बन गया। उन्होंने अंग्रेजों के आदिवासियों की पारंपरिक खुंटकटी व्यवस्था समाप्त करने के भूमि कानूनों को चुनौती दी। आदिवासियों की भूमि बाहरी जमींदारों और महाजनों के कब्जे में चली गई थी। बिरसा ने इस अन्याय के विरुद्ध स्वराज का शंखनाद किया।

उनका संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का प्रतीक भी था। उन्होंने 1895 में एकेश्वरवाद पर आधारित बिरसाइत धर्म की स्थापना की। उन्होंने अपने अनुयायियों को अंधविश्वास, शराब, जादू-टोना और पशु बलि जैसी कुरीतियों से मुक्त होकर सत्य, संयम और सेवा का मार्ग अपनाने का संदेश दिया। उनका संदेश था कि ईश्वर हर मनुष्य में विद्यमान है, सच्ची पूजा सेवा में है। उन्होंने औषधीय जड़ी-बूटियों से लोगों का उपचार किया। उन्हें आत्मनिर्भरता सिखाई और आत्मसम्मान की भावना जगाई। उनके विचारों ने आदिवासी समाज को यह विश्वास दिया कि वे स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हैं। ब्रिटिश सरकार ने 3 फरवरी 1900 को गिरफ्तार कर उन्हें रांची जेल में बंद कर दिया। मात्र 25 वर्ष की आयु में 9 जून 1900 को उनकी रहस्यमय मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद भी आंदोलन की लहर नहीं थमी। उनकी स्मृति में छोटा नागपुर टेनेंसी एक्ट, 1908 लागू हुआ। आदिवासियों की भूमि की रक्षा के लिए यह ऐतिहासिक कानून सिद्ध हुआ।

बिरसा मुंडा की रांची के कोकर में स्थित समाधि पर हजारों लोग हर वर्ष उन्हें नमन करते हैं। उनकी तस्वीर संसद भवन में स्थापित है और उनके जन्मदिन 15 नवंबर को भारत सरकार ने जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाना आरंभ किया है। यह केवल उन्हें श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि भारत के प्रत्येक आदिवासी वीर को सम्मान देने का प्रतीक है।

राजस्थान की जनजातीय चेतना : गोविन्द गुरु का आंदोलन

बिरसा मुंडा के समानांतर, राजस्थान की भूमि पर भी गोविन्द गुरु के नेतृत्व में एक ऐसी ही तेजस्वी क्रांति हुई और वे बांसवाड़ा-डूंगरपुर क्षेत्र में जनजातीय समाज के पथप्रदर्शक बने। उन्होंने भील, गरासिया और अन्य जनजातियों में व्याप्त अंधविश्वास, मद्यपान और शोषण के खिलाफ आंदोलन चलाया। गोविन्द गुरु ने भगत आंदोलन के माध्यम से आदिवासियों को अपनी भूमि, जल और जंगल की रक्षा स्वयं करने का संदेश दिया। उन्होंने सत्य, संयम और एकता को जीवन का आधार बनाया। उनका आंदोलन धीरे-धीरे सामाजिक सुधार से बढ़कर स्वतंत्रता संग्राम का रूप ले गया।

गोविन्द गुरु के नेतृत्व में मानगढ़ पहाड़ी पर 17 नवंबर 1913 को हजारों भील पुरुष, महिलाएं और बच्चे स्वतंत्रता के लिए एकत्र हुए। अंग्रेज सेना ने इस शांतिपूर्ण सभा पर गोलियां चला दीं और सैकड़ों लोग मारे गए, हजारों घायल हुए। यह घटना राजस्थान का जलियांवाला बाग कहलाती है। गोविन्द गुरु को आजीवन कारावास दिया गया, लेकिन उनकी चेतना ने आदिवासी समाज को सदा के लिए जागृत कर दिया।

राजस्थान के मोती भाई, कालूजी, नाथू जी और जोगिया भील सहित अन्य भील नेताओं ने भी स्थानीय स्तर पर अंग्रेजी शासन को चुनौती दी। यह संघर्ष किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और न्याय की पुकार था। आज भी मानगढ़ पहाड़ी जनजातीय शौर्य और बलिदान का पवित्र तीर्थ है।

आज जब भारत विकास के नए अध्याय लिख रहा है, बिरसा मुंडा के विचार पहले से अधिक प्रासंगिक हो उठे हैं। उनका सन्देश प्रकृति के साथ सामंजस्य, संस्कृति के प्रति सम्मान और समाज के प्रति संवेदना और सतत विकास की असली नींव का था।

भारत सरकार ने प्रधानमंत्री जनजातीय न्याय महाअभियान, धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान और जनजातीय दर्पण जैसे अनेक कार्यक्रम आरंभ किए हैं। यह सभी कार्यक्रम बिरसा मुंडा की प्रेरणा से ही जनजातीय समाज के सशक्तिकरण की दिशा में अग्रसर हैं।

भगवान बिरसा मुंडा और गोविन्द गुरु जैसे जननायक केवल इतिहास के अध्याय नहीं, बल्कि भारत की आत्मा के जीवंत प्रतीक हैं। उन्होंने यह सिखाया कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक अधिकार नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, संस्कृति और न्याय की चेतना है। उनके संघर्ष ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत की आज़ादी की जड़ें गांवों, वनों और पर्वतों की मिट्टी में भी गहराई से धंसी हुई है। बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनकी उस लौ को सदैव प्रज्वलित रखें जो जल, जंगल और जमीन की रक्षा के साथ मानवता, समानता और स्वराज की राह दिखाती है। भगवान बिरसा मुंडा केवल धरती आबा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा के अमर दीप हैं।

-भजनलाल शर्मा,
मुख्यमंत्री, राजस्थान

औपनिवेशिक शोषण के विरोध व आदिवासी पहचान के प्रतीक बिरसा मुंडा को पीएम मोदी की सच्ची श्रद्धांजलि

राजस्थान सहित देशभर में धरती आबा अभियान से जनजाति वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा, राजस्थान देश में नम्बर-1

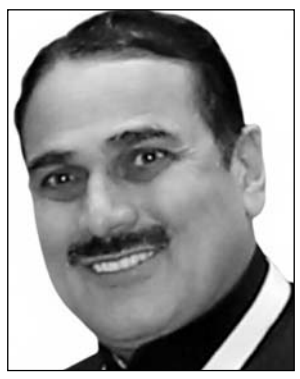

कुंजीलाल मीणा, आईएएस

15 नवम्बर को जब हम जनजातीय गौरव दिवस मना रहे हैं, महान आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक भगवान बिरसा मुंडा को याद करना न केवल हमारा कर्तव्य है बल्कि यह हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक भी है। "धरती आबा" यानी धरती के पिता के नाम से प्रसिद्ध बिरसा मुंडा ने मात्र 25 वर्ष की अल्पायु में राष्ट्र और जनजाति समुदाय के लिए जो कार्य किए, वे सदियों तक प्रेरणा देते रहेंगे।

भगवान बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर, 1875 को झारखंड के उलिहातू गाँव में हुआ था। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही आदिवासी समाज पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और ईसाई मिशनरियों के बढ़ते प्रभाव को महसूस किया। बिरसा मुंडा का जीवन ब्रिटिश उपनिवेशवाद, साहूकारों के शोषण और जमींदारी प्रथा के क्रूर गठजोड़ के खिलाफ एक अटूट संघर्ष था। उन्होंने देखा कि किस तरह उनकी मुंडा जनजाति की खुंटकट्टी (सामुदायिक स्वामित्व) कृषि प्रणाली को छीना जा रहा है और उन्हें बेगार (बंधुआ मजदूरी) करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। 19वीं शताब्दी के अंत तक ब्रिटिश शासन ने अपने क्रूर वन कानूनों (जैसे भारतीय वन अधिनियम 1865 और 1878) के माध्यम से आदिवासियों को उनकी पारंपरिक वन भूमि से वंचित कर दिया। उन्होंने जंगलों को व्यावसायिक लाभ के लिए आरक्षित वन घोषित कर दिया जिससे आदिवासियों को लकड़ी काटने, मवेशी चराने, वनोत्पाद इकट्ठा करने या पारंपरिक शिकार करने से रोक दिया गया। इससे आदिवासियों की आजीविका और उनकी प्राचीन जीवनशैली पर सीधा हमला हुआ। बिरसा मुंडा ने इस शोषणकारी नीति और पर्यावरणीय विनाश के खिलाफ पुरजोर आवाज़ उठाई। उनका मानना था कि भूमि, जल और जंगल पर आदिवासियों का सामूहिक अधिकार है और इन संसाधनों का उपयोग केवल सतत और न्यायपूर्ण तरीके से ही किया जाना चाहिए, न कि अनियंत्रित दोहन के लिए।

इस शोषण के विरुद्ध उन्होंने उलगुलान (महान विप्लव) आन्दोलन का आव्हान किया। यह केवल भूमि के लिए विद्रोह नहीं था, जल, जंगल और जमीन पर आदिवासियों के पैतृक अधिकार, उनकी संस्कृति और उनकी पहचान को बचाने की लड़ाई थी। बिरसा ने आदिवासियों को एकजुट किया, उनके बीच व्याप्त जाति और उपजाति के भेदों को मिटाया और उन्हें यह एहसास दिलाया कि वे भी सम्मान और अधिकारों के पात्र हैं। उन्होंने अपने लोगों को यह सिखाया कि अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना और अपनी गरिमा के लिए लड़ना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्होंने आदिवासियों को उनकी पारंपरिक न्यायिक प्रणाली, जैसे पड़ा पंचायत और मानकी-मुंडा व्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए प्रेरित किया ताकि वे अपने विवादों का निपटारा स्वयं कर सकें और बाहरी अदालतों पर निर्भर न रहें। उनका अबुआ राज (अपना राज) का विचार केवल ब्रिटिश शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि एक ऐसे समाज की कल्पना थी जहाँ सभी को समान अधिकार मिलें, जहाँ किसी भी प्रकार का शोषण न हो और जहाँ हर व्यक्ति गरिमापूर्ण जीवन जी सके।

बिरसा मुंडा ने अपने अनुयायियों को संगठित किया, उन्हें शस्त्रों के बजाय आत्म-विश्वास और सत्यनिष्ठा का बल दिया। 1897-1900 का बिरसा आंदोलन ब्रिटिश दमनकारी नीतियों एवं सामाजिक अन्याय के खिलाफ एक प्रत्यक्ष और सशक्त चुनौती थी, जिसमें आदिवासियों ने अपने अधिकारों के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध संगठित विरोध किये। जनवरी, 1900 में डोम्बरी पहाड़ी पर जन सभा को संबोधित करते वक्त अंग्रेज सेना के साथ बिरसा मुंडा का टकराव हुआ एवं फरवरी में चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से अंठोजों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। बिरसा मुंडा को अंग्रेजों ने कैद कर रांची कारागार में रखा, जहाँ अंठोजों द्वारा इस आदिवासी महानायक को कई कठोर याजनाऐं देते हुए अन्तत: कारागार में बिरसा मुंडा जी की रहस्यमी परिस्थितियों में 9 जून, 1900 को मृत्यु हो गई।

बिरसा मुंडा केवल एक महान योद्धा ही नहीं थे, अपितु एक दूरदर्शी समाज सुधारक भी थे। उन्होंने देखा कि जनजाति समुदाय में असंगठन, अशिक्षा, आर्थिक तंगी का गलत लाभ उठाते हुए ईसाई मिशनरियों द्वारा भोले-भाले आदिवासियों का धर्मान्तरण किया जा रहा है एवं आदिवासियों को उनकी गौरवशाली प्राचीन परम्पराओं से विमुख किया जा रहा है। बिरसा मुंडा ने आदिवासियों को उनके धर्म एवं परम्पराओं से जोड़ने के लिए कमर कसी एवं लगभग 1894-95 के आसपास बिरसा ने एक आध्यात्मिक और सामाजिक-धार्मिक आंदोलन की शुरुआत की, जिसे बिरसाइत पंथ के नाम से जाना जाता है।

यह पंथ मूल मुंडा परंपराओं और एकेश्वरवाद का एक अनूठा संगम था, जिसमें केवल सिंगबोंगा (सूर्य देवता) की पूजा पर जोर दिया गया और जनजाति समुदाय में साफ-सफाई, शुद्धता तथा नैतिकता को जीवन का आधार माना गया। उन्होंने जनजातीय समुदाय को अंधविश्वासों, पशु बलि और नशीले पदार्थों के सेवन से दूर रहने का उपदेश दिया। उनका यह प्रयास दिखाता है कि उन्होंने केवल बाहरी शत्रुओं से नहीं बल्कि आंतरिक बुराइयों से भी लड़ने का बीड़ा उठाया था। बिरसा मुंडा की शहादत के वर्षों बाद भी, उनका संदेश आज भी गूँजता है। उनके संघर्ष ने जनजातीय समुदायों को अधिकार और न्याय के लिए लड़ना सिखाया। उनकी प्रेरणा से ही, देश में वन अधिकार अधिनियम ,पेसा कानून और जनजातीय हितों की सुरक्षा के लिए कई संवैधानिक प्रावधान लागू हुए हैं।

बिरसा मुंडा हमें सिखाते हैं कि सच्चा नेतृत्व संसाधनों या उम्र से नहीं, बल्कि साहस, नैतिकता और अपने लोगों के प्रति समर्पण से मापा जाता है। आज के भारत में, जब हम समावेशी विकास और सामाजिक न्याय की बात करते हैं, तब हमें बिरसा मुंडा के उस सपने को याद रखना होगा जिसमे एक एक ऐसा समाज-निर्माण करने कि अभिलाषा है जहाँ हर व्यक्ति को गरिमा और स्वाभिमान के साथ जीने का अधिकार हो, और जहाँ प्रकृति का सम्मान सर्वोपरि हो। आइए, हम सब धरती आबा के दिखाए मार्ग पर चलें और उनके न्यायपूर्ण तथा समतावादी समाज के सपने को साकार करने में अपना योगदान दें।

भगवान बिरसा मुंडा ने जल, जंगल, ज़मीन की रक्षा के लिए जो आवाज़ उठाई, वह सिर्फ विद्रोह नहीं, आत्मसम्मान की आवाज थी। टंट्या भील, गोविंद गुरु और काली बाई जैसे योद्धाओं ने राजस्थान में इसी आवास को विस्तार से गूंज दी, इस मिट्टी को अपने लहू से सींचा ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी पहचान न भूलें।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं बिरसा की विरासत के संरक्षक :- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने इस सच्चाई को गहराई से समझा कि भारत की आत्मा उसकी जनजातियों में बसती है। सरकार विरासत भी, विकास भी के सिद्धांत पर काम कर रही है ताकि जनजातीय संस्कृति को संरक्षित रखते हुए उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिरसा मुंडा को सच्ची श्रद्धांजलि देते हुए धरती आबा अभियान शुरू किया। जनजाति बहुल क्षेत्रों में विकास कार्य व सरकारी सेवाओं की समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने, शिकायत निवारण प्रणाली को पूर्ण प्रभावी बनाने और जनजाति वर्ग के अधिकारों की अक्षरश: पालना, उनके कल्याण और उत्थान के लिए देशभर में संचालित धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान (डीएजेजीयूए) मामले में राजस्थान देश में नम्बर 1 पर है।

धरती आभा अभियान का मकसद अपने अधिकारों और सरकारी योजनाओं के प्रति जनजातीय समुदायों तक जागरूकता और पहुंच बढ़ाकर उनका सशक्तीकरण सुनिश्चत करना है। धरती आबा और पीएम-जनमन केन्द्र सरकार की बेहद उच्च प्राथमिकता वाले अभियान/योजनाओं में शामिल हैं, जिनकी प्रगति की मॉनिटरिंग करने तथा आवश्यकता वाले क्षेत्र में नवाचार के लिए बहुत उच्च स्तरीय सिस्टम कार्यरत है। इस अभियान में देश के 549 जिलों के 63,000 से अधिक जनजातीय बहुल गांव कवर किए गए हैं। राष्ट्रव्यापी जागरूकता और लाभ संतृप्ति अभियान के रूप में संचालित इस अभियान में 207 जिलों की 29,000 से अधिक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (पीवीटीजी) बस्तियां शामिल हैं।

मिशन के उद्देश्यों में व्यक्तिगत अधिकारों, हकों और प्रमुख सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना, दस्तावेजों और लाभों की घर-घर डिलीवरी सुनिश्चित करना, सामुदायिक लामबंदी के माध्यम से सहभागी शासन को बढ़ावा देना शामिल है।इसके साथ ही जनजातीय युवाओं को डिजिटल योद्धा और जमीनी स्तर पर परिवर्तन लाने वाले के रूप में सशक्त बनाना, गांव और बस्ती स्तर पर एससीडी स्क्रीनिंग, जागरूकता और परामर्श भी मिशन की प्रमुख गतिविधियों में शामिल रहा। इस प्रकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिरसा मुंडा के जन्म के 150 साल बाद उनकी विरासत, उनके स्वप्न, उनकी आंकांक्षाओं को राष्ट्रीय चेतना से एकाकार कर उनके सच्चे अनुयायी की भूमिका अदा की है।

कुंजीलाल मीणा, आईएएस,
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग,
राजस्थान

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 14 नवम्बर, 2025

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 9:21 तक, वैधृति योग शनिवार प्रात: 6:26 तक, वणिज करण दिन 12:12 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:51 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 9:21 तक है। भद्रा दिन 12:12 से रात्रि 12:50 तक रहेगी। बुध आज पश्चिम में दिन 1:28 पर होगा। आज वैधृति पुण्य, भगवान महावीर तप, कल्याणक दिवस है। आज जवाहरलाल नेहरू जयन्ती और बाल दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:10 तक, लाभ-अमृत 8:10 से 10:51 तक, शुभ 12:11 से 1:32 तक, चर 4:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:50, सूर्यास्त 5:33 तक

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

वृष

घर-परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद हो सकते हैं। आज व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में प्रगति होगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या एवं व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य योजना बन सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी एवं धन हानि हो सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि हो सकती है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

धनु

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कुंभ

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

मीन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

डीबीटी वाउचर योजना ऑनलाईन आवेदन 17 नवम्बर से प्रारंभ

डूंगरपुर, (निसं)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित समस्त स्नातक एवं स्नामकोत्तर (केवल शैक्षणिक पाठ्यक्रमों कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय हेतु) राजकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र जों घर से दूर रहकर अन्य स्थान पर कमरा किरायें पर लेकर (पेंड्रग गैस्ट के रूप में) अध्ययन करते है उन छात्रों हेतु आवास, भोजन एवं बिजली-पानी इत्यादि सुविधाओं हेतु पुनर्भरण (अधिकतम 10 माह हेतु) दी जाएगी। योजनान्तर्गत शैक्षणिक सत्र 2025-26 में अध्ययनरत छात्रों को लान दिया जावेगा योजनान्तर्गत एससी, एसटी, ओबीसी, एमबीसी, ईडब्ल्यूएस एवं माईनोरिटी के छात्र जो राजकीय महाविद्यालय की स्नातक अथवा स्नातकोत्तर कक्षाओं में नियमित रुप से अध्ययनरत छात्राओं को देय होगा।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी ने बताया कि आवेदन प्रक्रिया-योजनान्तर्गत इच्छुक छात्र द्वारा ई-मित्रए एस.एस.ओ.आई डी के माध्यम से उक्त पोर्टल पर जनाधार कार्ड के माध्यम से पद पर आमंत्रित आवेदन किया जावेगा। आवेदन हेतु जारी दिशा-निर्देश का विस्तृत विवरण विभाग की वेबसाइड पर उपलब्ध है। छात्र वर्तमान में जिस राजकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत है, उस महाविद्यालय के द्वारा ऑनलाईन प्राप्त आवेदन पत्रों की गहन जांच कर आवेदन पत्र स्वीकृतकर्ता अधिकारी (विभागीय जिलाधिकारी) को भिजवाया जावेगा।

NAME CHANGE

I have changed my name from Rajjak Mohammad to Rajjak Mohmmad for all purposes R/o- Pithawadi kala Chhoti sadri Pratapgarh (Raj.) 312604

राष्ट्रीय कृषि व पशुपालन उद्यिमता कार्यशाला का समापन

उदयपुर/जयपुर। राष्ट्रीय कृषि एवं पशुपालन उद्यिमता कार्यशाला के समापन सत्र के रूप में आयोजित बॉयर-सेलर मीट ने एसएचजी उद्यमों, उत्पादक समूहों, किसान उत्पादक संगठनों और देशभर के प्रमुख संस्थागत खरीदारों के बीच प्रत्यक्ष बाजार संवाद के लिए एक अभूतपूर्व मंच तैयार किया। राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) और ग्रामीण विकास मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित इस बैठक का उद्देश्य महिला संचालित ग्रामीण उद्यमों के लिए मूल्य श्रृंखला एकीकरण को मजबूत करना है।

■ **उच्च-स्तरीय खरीदार-विक्रेता बैठक के साथ, अग्रणी कंपनियों ने राजीविका एसएचजी उद्यमों के साथ हस्ताक्षर किए समझौता ज्ञापन**

बैठक की अध्यक्षता स्वाति शर्मा, आईएएस, संयुक्त सचिव (ग्रामीण आजीविका), ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार तथा नेहा गिरि,आईएएस, राज्य मिशन निदेशक, राजीविका ने की। इस अवसर पर आर.वी. शाजीवना, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, तमिलनाडु एसआरएलएम भी उपस्थित रहे, जिन्होंने बाजार पहुँच एवं उद्यम विकास के लिए टीएन-एसआरएलएम द्वारा अपनाई गई प्रमुख रणनीतियों को साझा किया।

- राजीविका द्वारा राजस्थान के 41 जिलों से बाजार-उपयुक्त उत्पादों का प्रदर्शन किया गया, जो मसाले, शहद, पशुधन उत्पाद, अनाज, प्राकृतिक खेती उत्पाद और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में संलग्न हजारों एसएचजी महिलाओं के कार्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। बॉयर-सेलर मीट में खाद्य, कृषि, मसाले, पशुधन, प्रसंस्करण और निर्यात क्षेत्रों की 25 से अधिक कंपनियाँ शामिल हुईं, जिन्होंने सामुदायिक संस्थानों के साथ संरचित संवाद स्थापित किए।

कई प्रमुख कंपनियों ने राजीविका के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसमें एसएचजी उद्यमों से बड़े पैमाने पर क्रय की तत्परता व्यक्त की गई। ये प्रतिबद्धताएँ ग्रामीण उत्पादकों के लिए सुनिश्चित बाजारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

इस बैठक से प्रत्यक्ष विपणन चैनल स्थापित कर एसएचजी, पीजी एवं एफपीओ ने बिचौलियों को दरकिनार करते हुए सीधे खरीदारों से संबंध स्थापित हुए। राजस्थान के ग्रामीण उत्पाद अनाज, शहद, पशुधन नस्लें एवं प्राकृतिक खेती उत्पादों में उच्च मात्रा की खरीद में रुचि दिखाई।

कई खरीदारों ने एसएचजी महिलाओं को खरीद, प्रसंस्करण और लॉजिस्टिक्स श्रृंखला में शामिल करने की तत्परता दिखाई। राष्ट्रीय स्तर के खरीदारों ने एसएचजी उत्पादों की गुणवत्ता, स्थिरता और विविधता की सराहना की।

25 से अधिक राज्य ग्रामीण आजीविका मिशनों की भागीदारी से अंतर-राज्यीय सीख और सहयोग को बढ़ावा मिला। राष्ट्रीय कार्यशाला का ऐतिहासिक समापन :-तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन बाजार विश्वास, संस्थागत सहयोग और दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ हुआ। खरीदारों की सक्रिय भागीदारी, एसएचजी उत्पादों में गहरी रुचि और ग्रामीण महिला उत्पादकों के उत्साह ने राजस्थान की महिला संचालित ग्रामीण उद्यिमता में अग्रणी भूमिका को पुन: स्थापित किया। यह कार्यशाला ग्रामीण मूल्य श्रृंखलाओं के विस्तार, आजीविका विविधीकरण को गहराने और लाखों एसएचजी महिलाओं को सतत उद्यमी एवं भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रमुख योगदानकर्ता बनने के लिए सशक्त करने हेतु एक मजबूत आधार तैयार करती है।

'ब्रेन स्टॉर्मिंग' में कृषि वैज्ञानिकों ने रखे सुझाव

उदयपुर, (कासं)। किसानों की उत्पादकता और आय बढ़ाने के लिए तकनीकी एकीकरण पर देशभर से आए कृषि वैज्ञानिकों ने मुहर लगाई। साथ ही तिलहन-दलहन उत्पादन बढ़ाने, बीजीय मसालों के साथ-साथ बागवानी, उद्यानिकी व पशुधन में अग्रिम पंक्ति विस्तार के लिए तकनीकी प्रगति पर गहन विचार मंथन (ब्रेन स्टॉर्मिंग) किया गया।

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की मेजबानी में यहां प्रसार शिक्षा निदेशालय में चल रही तीन राज्यों राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली के 67 कृषि विज्ञान केन्द्रों के कामकाज की वार्षिक समीक्षा बैठक के तकनीकी सत्रों में उक्त आम सहमति बनी। कार्यशाला प्रायोजक आईसीएआर-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, जोधपुर (अटारी जोन-2) है। कृषि वैज्ञानिकों के प्रधानमंत्री की अन्न-धन योजना तथा वर्ष 2047 में विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए तिलहन-दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता का संकल्प लिया। पशुधन को भी महत्वपूर्ण घटक मानते हुए तकनीकी एकीकरण पर जोर दिया क्योंकि विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब हमारे यहां का किसान विकसित यानी समृद्ध होगा। दलहन-तिलहन उत्पादन बढ़ाने सम्बन्धी समूह चर्चा में डॉ. विजय वीर सिंह भरतपुर, डॉ. सुधीर कुमार बीकानेर, डॉ. अरविन्द वर्मा, डॉ. एस.आर. मालू, डॉ. एस.के. इंटोदिया, डॉ. वीरेन्द्र नेपालिया ने भाग लिया। बीजीय मसाला, बागवानी, उद्यानिकी विषयक समूह चर्चा में डॉ. आर.ए. कौशिक, डॉ. एस.एस. लखावत, पशुधन व जलीय कृषि विषय पर डॉ. धीर सिंहआदि ने समूह चर्चा में भाग लिया व पीपीटी प्रतिवेदन प्रस्तुत किए।

किसानों की आय बढ़ाने विषयक समूह चर्चा में एडीजी, कृषि विस्तार आईसीएआर, नई दिल्ली, डॉ. आर.के. सिंह, डॉ. पीके चक्रवर्ती, डॉ. बी.एल. जांगिड़ ने भाग लिया। साथ ही आईसीएआर संस्थाओं और उद्योगों के निदेशकों ने प्रस्तुतियां दी। समूह चर्चा में हरियाणा, राजस्थान व दिल्ली राज्यों के केवीके अध्यक्ष व वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया।

कार्यालय नगरपालिका नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द (राज.)

Email: np_ntd@yahoo.in Phone:- 02953-233526

क्रमांक /न.पा.नाथ./नामा./2025/14162 दिनांक : 10.11.2025

-: आपत्ती सूचना :-

एतर्थ द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा जरिये क्रय शुदा/पट्टा शुदा के आधार पर भूखण्डों का नामान्तरण/नाम हस्तान्तरण का स्वयं के नाम पर निम्नांकित वर्णित सम्पत्ति पर नामान्तरण/नाम हस्तान्तरण कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त आवेदन के संबंध में किसी भी हितधारी को कोई आपत्ती हो तो 7 दिवस (कार्य दिवस) में नगरपालिका कार्यालय में लिखित रूप से प्रस्तुत कर दें अन्यथा प्रकरण में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने एवं दस्तावेज पूर्ण पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही पूर्ण करते हुए उक्त प्रकरणों में आगामी कार्यवाही सम्पादित कर दी जायेगी :-

क्र. सं.	आवेदक का नाम व पता	आवेदित सम्पत्ति कापता	पड़ौस का विवरण			
			पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
1.	श्री सौरभ काबरा पिता श्री शिवनारायण निवासी- मिराज कॉम्प्लेक्स नाथद्वारा	भूखण्ड संख्या-43 क्षैत्रफल-1906 वर्गफिट मोहन हाईट्स आवासीय कॉलानी, नाथद्वारा	40 फिट रोड	भूखण्ड संख्या-22	80 फिट रोड	भूखण्ड संख्या-42

आयुक्त, नगरपालिका नाथद्वारा

निचला घंटाला में सांसद खेल महोत्सव का आयोजन

बांसवाड़ा, (निसं)। राउमावि निचला घंटाला में सांसद खेल महोत्सव का आयोजन प्रधानाचार्य रोशन जोशी की अध्यक्षता, समाजसेवी भामाशाह व भाजपा जिला उपाध्यक्ष मणिलाल गुर्जर के मुख्य आतिथ्य एवं जिला परिषद सदस्य पिंटू देवी के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया।

मुख्य अतिथि गुर्जर ने कहा कि खेल से व्यक्ति का मन एवं शरीर स्वस्थ रहता है अत: हर उम्र के व्यक्ति को अपनी आयु के अनुरूप खेल गतिविधियों में जुडना चाहिए। जिला परिषद सदस्य पिंटू देवी ने कहा कि सरकार की ओर से खेल गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है इसके माध्यम से क्षेत्र की प्रतिभाओं को आगे आना चाहिए। संस्थाप्रधान रोशन जोशी ने कार्यक्रम का परिचय देते हुए विभिन्न आयोजन की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। विद्यालय में सांसद खेल महोत्सव के अंतर्गत पीटीआई वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक दिलीप कुमार पंड्या के निर्देशन में 100 मीटर व 50 मीटर दौड़, नींबू दौड़, कबड्डी आदि खेलो का आयोजन हुआ जिसमें संभागियों ने उत्साह से भाग लिया। संचालन शीतल चौबीसा ने किया जबकि आभार कल्पना जोशी ने माना।

सांसद खेलकूद प्रतियोगिता के तहत ग्राम पंचायत ओबला में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन राउमावि ओबला में भाजपा नेता खेमराज गरासिया के मुख्य आतिथ्य व सरपंच विरसिंह कटारा की अध्यक्षता में हुआ। आरंभ में प्रधानाचार्य सुभाष पारगी ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रतियोगिता संयोजक मगनलाल पारगी ने बताया कि इस अवसर पर बालीबाल, कबड्डी रस्साकस्सी, निंबु दौड व 50 मीटर दौड की प्रतियोगिताए आयोजित हुई जिसमें विजेता खिलाडियों व टीम को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर पूर्व मंडल अध्यक्ष खातुदास पारगी, रतना डामोर समेत भाजपा पदाधिकारी व ग्रामीण उपस्थित रहे। संचालन मोहनलाल खांट ने तथा आभार दिवान कटारा ने माना। इसी तरह ग्राम पंचायत बोरवानिया में भी भाजपा नेता खेमराज गरासिया के मुख्य आतिथ्य व प्रशासक अमृतलाल की अध्यक्षता में प्रतियोगिता हुई जिसमें विजेता खिलाडियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। मंडल अध्यक्ष मनिष मसार, योगेन्द्र सिंह, संयोजक प्रकाश खांट, समाजसेवी दौलत राम, पूर्व उप सरपंच धूलेश्वर, पूर्व डायरेक्टर कन्हैया लाल, ग्रामदानी अध्यक्ष शंकरलाल, पीईईओ रमेश पारगी, शांतिलाल पारगी, रिंकेश पंड्या आदि मौजूद रहे।

राउमावि अमरसिंह का गडा में सांसद खेल महोत्सव के तहत पंचायत स्तरीय खेल में कबड्डी, रस्साकस्सी, 50 व 100 मीटर की दौड, नींबू चम्मच दौड प्रतियोगिताएं हुई। अध्यक्षीय उद्बोधन में पूर्व विधायक हरेन्द्र निनामा ने खिलाडियो से खेल भावना से खेलने का आग्रह किया। कार्यक्रम में सरपंच प्रेमशंकर भगौरा, उपसरपंच करण सिंह चौहान, अभिभावक समिति के अध्यक्ष लाल सिंह चौहान, सुखलाल, कमला भाई, हकरिया भाई आदि मौजूद रहे। प्रधानाचार्य नारायण तेली ने अतिथियो का स्वागत किया। महोत्सव में केशवलाल मीना, शंकरलाल मोगी, कुमारी लता व्यास, कन्हैयालाल, वीर सिंह, मुकेश मगन, कोमेन्द्र सिंह, राजेश, नारायण, गोपालजी राव, रमेश, गीता कुंवर, हर्षा आदि सम्मिलित हुए।

बढ़ती चोरियों की शिकायत पर एसपी ने किया सायरा का दौरा

उदयपुर, (कासं)। सायरा क्षेत्र के गांवों में सूने पडे मकानों के मालिक सूरत और मुंबई में रहते हैं और यहां पीछे से चोर घरों में घुसकर चोरियों की वारदात को अंजाम देते हैं। एक साल के अंदर अब तक 54 चोरियों की घटना हो चुकी है।

■ **प्रवासियों के घरो में हो रही सर्वाधिक चोरियां**

इन चोरियों का मामला पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया के पास भी पहुंचा। प्रवासियों ने कटारिया से भी इस मामले में आग्रह करते हुए कहा कि गांव में चोरियों पे चोरियां हो रही हैं, इस पर मदद कराए। लोगों ने उदयपुर एसपी को भी एक शिकायत दी थी।

शिकायत पर बुधवार को उदयपुर एसपी योगेश गोयल, एडिशनल एसपी गोपाल स्वरूप मेवाडा और डिप्टी गोपाल चंदेल सेमड पहुंचे। गांव में एक मीटिंग हुई जिसमें प्रवासी और सेमड और आसपास के ग्रामीण एकत्रित हुए। इस दौरान गोगुंदा और सायरा पुलिस थाने का स्टाफ भी मौजूद रहा। एसपी ने ग्रामीणों के साथ संवाद किया। ग्रामीणों ने बताया कि यहां आए दिन चोरियां होती हैं। एसपी ने आश्वस्त किया कि पुलिस बची चोरियां भी खोल देगी।

प्रवासी शांतिलाल मेहता ने बताया कि सेमड में चोरियों की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही तो एसपी तक बात पहुंचाई। उन्होंने बताया कि जो प्रवासी है उनके सूने घरों को चोर निशाना बना रहे थे। ग्रामीणों ने बताया कि ग्रामीणों ने अपने स्तर पर गांव में सीसीटीवी लगाए फिर भी घटनाएं नहीं थम रही हैं।

बाद में एसपी योगेश गोयल ने संबोधित करते हुए कहा कि सेमड, पदराडा, ढोल, कमोल सहित आसपास के गांवों के लोग बिजनेस और जॉब के लिए सूरत, मुंबई में बसे हैं। पीछे से गांव सूना हो जाता है और चोर.बदमाशों के निशाने पर रहता है और यही आपके गांव में हो रहा है।एसपी गोयल ने कहा कि पिछले तीन साल में जो चोरियां हुई उन चोरियों को खोलेंगे। ये हमारा दायित्व है इसलिए सरकार ने पुलिस थाना खोला है। न केवल समाधान हो वरन आगे इन समस्याओं से छुटकारा दिलाया जाएगा। एसपी ने सेमड में स्थायी रूप से एक पुलिस चौकी बनाने का भी आश्वासन दिया।

कार्यशाला शुरु

उदयपुर, (कासं)।19 नवम्बर को आयोजित होने वाले घूमर महोत्सव की धूम शुरू हो गई है। राजस्थान की लोक-संस्कृति और नारी-सशक्तिकरण के प्रतीक घूमर उत्सव की तैयारियों के तहत पर्यटन विभाग द्वारा दीनदयाल उपाध्याय सभागार में गुरूवार से अभ्यास सत्रों की शुरुआत की गई। प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक चलने वाले इस सत्र में शहर की महिलाओं और छात्राओं ने उत्साह और रुचि के साथ भाग लिया। प्रशिक्षण के पहले दिन लगभग 150 महिलाओं एवं छात्राओं ने भाग लिया।

अभ्यास के दौरान प्रतिभागी महिलाएँ घूमर के पारंपरिक पदचाल और तालमेल का अभ्यास कर रही हैं। पर्यटन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि यह अभ्यास सत्र घूमर उत्सव की सफल तैयारियों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और आने वाले दिनों में इसमें और अधिक सहभागिता की संभावना है। घूमर महोत्सव में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के लिए विभाग द्वारा निशुल्क प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। पर्यटन विभाग की संयुक्त निदेशक सुमिता सरोच के अनुसार 13 से 17 नवम्बर तक नगर निगम के पंडित दीनदयाल सभागार में दोपहर 3 से सांय 6 बजे तक घूमर नृत्य का प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया जा रहा है।

कार्यालय उप वन संरक्षक, वन विभाग, प्रतापगढ़ (राज.)

Sr. No. : 308 Date: 11/11/2025

NIB No.-10/2025-26

On behalf of The Governor of Rajasthan offline bids are invited from interested bidders for various scheme Supply/works upto 18 & 21.11.2025 till 12:00 Hr other particulars, terms & conditions may be seen on the https://eproc.rajasthan.gov.in & https://sppp.rajasthan.nic.in & office notice board.

NIB/UBN No For 2526WSOBO3235-44

Dy. Conservator of Forest, Div. Pratapgarh (Raj.)

कार्यालय नगरपालिका नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द (राज.)

Email: np_ntd@yahoo.in Phone:- 02953-233526

क्रमांक /न.पा.नाथ./नामा./2025/14165 दिनांक : 10.11.2025

-: आपत्ती सूचना :-

एतर्थ द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा जरिये क्रय शुदा/पट्टा शुदा के आधार पर भूखण्डों का नामान्तरण/नाम हस्तान्तरण का स्वयं के नाम पर निम्नांकित वर्णित सम्पत्ति पर नामान्तरण/नाम हस्तान्तरण कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त आवेदन के संबंध में किसी भी हितधारी को कोई आपत्ती हो तो 7 दिवस (कार्य दिवस) में नगरपालिका कार्यालय में लिखित रूप से प्रस्तुत कर दें अन्यथा प्रकरण में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने एवं दस्तावेज पूर्ण पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही पूर्ण करते हुए उक्त प्रकरणों में आगामी कार्यवाही सम्पादित कर दी जायेगी :-

क्र. सं.	आवेदक का नाम व पता	आवेदित सम्पत्ति कापता	पड़ौस का विवरण			
			पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
1.	श्री अरविन्द जैन पिता श्री निर्मल कुमार श्री निवासी- उपली ओडन, नाथद्वारा	भूखण्ड संख्या-32 क्षैत्रफल-1100 वर्गफिट मोहन हाईट्स आवासीय कॉलानी, नाथद्वारा	भूखण्ड संख्या-33	30 फिट रोड	भूखण्ड संख्या-31	फुटपाथ व पार्क क्षेत्र
		भूखण्ड संख्या-33 क्षैत्रफल-1320 वर्गफिट मोहन हाईट्स आवासीय कॉलानी, नाथद्वारा	40 फिट रोड	भूखण्ड संख्या-32	भूखण्ड संख्या-34	फुटपाथ व पार्क क्षेत्र

आयुक्त, नगरपालिका नाथद्वारा

वंदे मातरम गीत का हुआ आयोजन

डूंगरपुर, (निसं)। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के रचित वंदे मातरम गान के 150 साल पूरे होने पर समस्त देशवासी इसे उत्सव के रूप में मना रहे है। इसी कडी में देशभक्ति के प्रतीक वंदे मातरम् गीत की रचना के 150 वर्ष पूरे होने पर भारत विकास परिषद तिलक शाखा द्वारा सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय स्व.किशनलाल गर्ग पीने नम्बर 2 में एक भव्य राष्ट्रीय गीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन चिराग व्यास और शाला के प्रभारी विनय चौबीसा ने किया। तिलक शाखा अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल ने कहां कि वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का प्रतीक है। यह गीत स्वतंत्रता संग्राम के समय देशभक्तों के हृदय में जोश और उत्साह का संचार करता था। आज भी यह हमें राष्ट्रप्रेम, एकता और त्याग की प्रेरणा देता है।

बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर कार्यक्रम आज

उदयपुर, (कासं)। भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती पर 1 से 15 नवम्बर तक उदयपुर में जनजातीय गौरव सप्ताह के विविध कार्यक्रमों का आयोजन होगा। इसी कड़ी में शुक्रवार को जिला स्तरीय कार्यक्रम होगा। जिसमें शिक्षा, जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग, सामाजिक न्याय, संस्कृति एवं युवा विभाग सहित विभिन्न संस्थान भाग लेंगे। संभागीय आयुक्त सुश्री प्रज्ञा केवलरमानी ने जिला स्तरीय कार्यक्रमों के समुचित संचालन और समन्वय के लिए टी.ए.डी. उपायुक्त निरमा बिश्नोई को नोडल अधिकारी को नियुक्त किया गया है।

शुक्रवार को होने वाले कार्यक्रमों में सुबह 10 बजे टीआरआई परिसर में भारत की जनजातीय कला के चित्रण का अनावरण होगा। सुबह 10.30 बजे सूचना केंद्र, मोहता पार्क के पास में टीएडी मंत्री बाबूलाल खराड़ी और उदयपुर सांसद मन्नालाल रावत भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती पर जनजातीय नायकों पर आधारित दो दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे। शिल्पग्राम 'बन्जारा' में शाम 4 से 5.30 बजे तक जनजाति कलाकार गायन, वादन, नृत्य व नाटिका प्रस्तुत करेंगे। सुबह 11.30 बजे सिटी पैलेस उदयपुर में जनजाति कलाकारों द्वारा भित्ति चित्रण किया जाएगा। लोककला मण्डल में सुबह 10.30 बजे वीर बालिका कालीबाई की जीवनी पर आधारित कठपुतली नाटक का मंचन होगा।

कार्यालय ग्राम पंचायत, भरदा, पं.स., ऋषभदेव, जिला-उदयपुर

क्रमांक:- एफ( )/ग्रापं/लेखा/ई-निविदा/2025/128 दिनांक 12-11-25

-: ई-निविदा सूचना :-

ग्राम पंचायत भरदा में जीपीडीपी योजना में स्वीकृत कार्यो हेतु निर्माण कार्य एवं दोष निवारण के लिए उपर्युक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग/ जल संसाधन विभाग/ ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग व नगर निगम में पंजीकृत संवेदक एवं राज्य सरकार/केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदको, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया द्वारा ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती है निविदा एवं विस्तृत शर्ते कार्यालय दिवस में एवं टेण्डर डॉक्युमेंट http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in पर देखी सकते है।

UBN NO- ZUD2526WSOB02450
ZUD2526WSOB02452
ZUD2526WSOB02453

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत भरदा
पंचायत समिति, ऋषभदेव जि. उदयपुर (राज.)

कार्यालय नगर पालिका देवगढ जिला राजसमन्द (राज0)

क्रमांक/न.पा.दे./नामान्तरण/2025-26/1915 दिनांक:- 10.11.2025

आपत्ति आमंत्रण पत्र

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका देवगढ क्षेत्र के निम्नांकित व्यक्तियो द्वारा प्रार्थना पत्र मय स्वामत्वि दस्तावेजो के प्रस्तुत कर जरीये पंजीकृत विक्रय पत्र/अपंजीकृत विक्रय इकरारनामा/मृत्यु के आधार पर पालिका द्वारा जारी किये गये भूखण्ड/मकान का नामान्तरण किया जाना है। जिनका विवरण निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	भूखण्ड विक्रेता/विक्रय इकरारकर्ता /पारिवारिक समझौताकर्ता का नाम	भूखण्ड क्रेता/उतराधिकारी जिसके नाम नामान्तरण किया जाना है	भूखण्ड सं./साईज व पता	प्रस्तुत दस्तावेत
01	श्री अमित कुमार पिता नेमीचन्द निवासी देवगढ	श्रीमती भगवती देवी पत्नि सज्जन सिंह निवासी देवगढ	सुभाषनगर निजी आवासीय योजना में स्थित भूखण्ड संख्या 19 साईज 1250 वर्गफीट एवं भूखण्ड सं. 20 साईज 1250 वर्गफीट	पंजीकृत विक्रय पत्र
02	श्री रामेश्वर सिंह पिता गणेश सिंह निवासी देवगढ	श्रीमती भगवती देवी पत्नि सज्जन सिंह निवासी देवगढ	मालियो का मौहल्ला देवगढ में स्थित आवासीय भूमि क्षेत्रफल 754.87 वर्गफीट	पंजीकृत विक्रय पत्र
03	श्री जगन्नाथ लाल पिता छगनलाल, श्री जय सिंह पिता लक्ष्मण सिंह एवं श्री सुनिल कुमार भंडारी पिता मदनलाल भंडारी निवासी देवगढ	श्री भगवान सिंह पिता भेरू सिंह निवासी रैइदो, डुंगाजी का गांव तहसील भीम	राजस्व ग्राम देवगढ के आराजी नं. 5988/3410 रकबा 0.4393 हैक्टेयर में से आवासीय भूखण्ड सं. 17 क्षेत्रफल 1225 वर्गफीट	पंजीकृत विक्रय पत्र
04	श्री वैभव शर्मा पिता कमल शर्मा निवासी देवगढ	श्रीमती कंचन कंवर पत्नि जीवन सिंह निवासी भारत सिंह का गुडा	सुभाषनगर आवासीय योजना में स्थित भूखण्ड सं. 112 क्षेत्रफल 450 वर्गफीट	पंजीकृत विक्रय पत्र
05	श्रीमति कृष्णा देवी पत्नि स्व0 किस्तुरचन्द जीनगर निवासी देवगढ	श्री दिनेशचन्द्र, श्री प्रकाशचन्द्र, श्री अनिल कुमार पिता किस्तुरचन्द जीनगर निवासी देवगढ	मारू दरवाजा के अन्दर सिपाईयो का मौहल्ला में स्थित भूखण्ड क्षेत्रफल 766.02 वर्गफीट	मृत्यु प्रमाण के आधार पर

अतः उक्त सम्पति के नामान्तरण के संबध में किसी भी व्यक्ति/हितधारी को कोई आपत्ति हो तो 7 दिवस मे अपनी आपत्ति मय प्रमाण के अधोहस्ताक्षर के समक्ष प्रस्तुत करें। अन्दर अवधि आपत्ति मय प्रमाण के लिखित में प्रस्तुत नही होने पर वर्णित भूखण्ड/मकान का नामान्तरण जारी किया जाने की आगामी कार्यवाही नियमानुसार सम्पादित कर दी जावेगी।

राज.संवाद/सी/25/13731 अधिशाषी अधिकारी

बीएलओ को दी एसआईआर एप की जानकारी

बांसवाड़ा, (निसं)। जिला कलेक्टर इन्दजीत सिंह यादव ने आनंदपुरी उपखंड के राउमावि कानेला में बीएलओ को मोबाइल में एसआईआर एप खोल कर फोटो अपलोड करने की जानकारी दी। उन्होंने कानेला विद्यालय का निरीक्षण करते हुए प्रधानाचार्य नानुलाल डामोर के ऑनलाईन उपस्थिति व विजिट का निरिक्षण करते हुए विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर सुधारने के निर्देश दिए वहीं एमडीएम मीनू व शौचालय निर्माण कार्य की जानकारी ली। उनके साथ आनंदपुरी एसडीएम भी मौजूद रहे।

जोधपुर में छापा मारने पहुंची डीजीजीआई की टीम पर हमला, एक गिरफ्तार

जीएसटी चोरी के बड़े नेटवर्क पर छापा मारने पहुंची जयपुर की टीम से ट्रांसपोर्टर और उसके स्टाफ ने धक्का-मुक्की की, दो कंप्यूटर व सीपीयू छीन लिए

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में गुरुवार सुबह डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ जीएसटी इंटेलिजेंस (डीजीजीआई) की टीम पर हमला हो गया। जीएसटी चोरी के बड़े नेटवर्क पर छापा मारने पहुंची जयपुर की टीम से ट्रांसपोर्टर और उसके स्टाफ ने धक्का-मुक्की की, दो कंप्यूटर सीपीयू छीन लिए। ट्रक से टक्कर मारकर सरकारी गाड़ी को क्षतग्रस्त कर दिया। पुलिस ने एक व्यक्ति को अरेस्ट किया है।

बासनी थानाधिकारी नितिन दवे ने बताया सुबह 7:15 बजे डीजीजीआई की टीम इंडस्ट्रियल एरिया सेकेंड फेज में स्थित बिश्नोई रोड लाइंस पर पहुंची। ऑफिस पर ताला लगा था, डीजीजीआई की टीम बाहर इंतजार कर रही थी। तभी सुनील विश्नोई नामक व्यक्ति आया, ऑफिस खोला और दो सीपीयू ले जाने लगा। (डीजीजीआई) की टीम ने रोकने की कोशिश की तो उसने धक्का-मुक्की की। ट्रक से डीजीजीआई की गाड़ी को टक्कर मारी, इसी दौरान एक ऑटो रिक्शा भी इसकी चपेट में आ गया। ट्रांसपोर्टर पुखराज खावा और उसके स्टाफ ने धक्का-मुक्की और हाथापाई करते हुए सीपीयू छीन लिए। आरोपियों ने एक सीपीयू को अपने साथी की कार में रखवाकर वहां से भगा दिया। दूसरा सीपीयू टीम से छीनकर एक ट्रक में रख लिया और भाग गए। भागते समय डीजीजीआई की टीम की गाड़ी जो ट्रक के ठीक सामने खड़ी थी, उसके टक्कर मार दी।

- **डीजीजीआई की टीम स्टील इंडस्ट्री और ट्रांसपोर्ट से जुड़े जीएसटी चोरी नेटवर्क पर कार्रवाई करने जोधपुर पहुंची थी**

विभागीय सूत्रों के अनुसार अन्य फर्मों के बारे में भी छानबीन की जा रही है। मौके से पकड़े गए सुनील विश्नोई की ट्रांसपोर्ट कंपनी में और हमला करवाने में भूमिका के बारे में पड़ताल जारी है। आशंका जताई जा रही है कि मौके से जो सीपीयू ले गए, उनमें जरूरी डेटा हो सकता है।

डीजीजीआई की टीम स्टील इंडस्ट्री और ट्रांसपोर्ट से जुड़े जीएसटी चोरी नेटवर्क पर कार्रवाई करने जोधपुर पहुंची थी। ट्रांसपोर्ट कंपनी की दो या तीन फर्मों से फर्जी बिल्टी जारी करने के साथ ही बोगस बिलिंग से जीएसटी चोरी का आरोप था। टीम को सूचना मिली थी कि फर्जी बिलिंग के जरिए करोड़ों की जीएसटी की चोरी की जा रही है। (डीजीजीआई) लंबे समय से नेटवर्क पर नजर रख रही थी।

बासनी थानाधिकारी नितिन दवे ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने डीजीजीआई की टीम से घटना की जानकारी ली और आसपास के विभिन्न स्थानों पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालना शुरू कर दिया। पुलिस को उम्मीद है कि सीसीटीवी फुटेज से आरोपियों की पहचान हो सकेगी और कार-ट्रक के नंबर मिल सकेंगे।

मॉडल उत्तर कुंजी जारी

अजमेर, (निसं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा असिस्टेंट प्रोफेसर (चिकित्सा शिक्षा विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2024 के अंतर्गत ब्रांड स्पेशियलिटी- पेडियाट्रिक्स तथा एनेस्थिसियोलॉजी विषयों की मॉडल उत्तर कुंजियां आयोग की वेबसाइट पर जारी कर दी हैं। इस संबंध में विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

आयोग के मुख्य परीक्षा नियंत्रक आशुतोष गुप्ता ने बताया कि उक्त परीक्षा अंतर्गत इन विषयों की परीक्षा का आयोजन 4 जुलाई 2025 को किया गया था। यदि किसी भी अभ्यर्थी को इन मॉडल उत्तर कुंजियों पर कोई आपत्ति हो तो निर्धारित शुल्क के साथ 14 से 16 नवंबर 2025 को रात्रि 12 बजे तक अपनी आपत्ति ऑनलाइन दर्ज करवा सकता है। आपत्तियां आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध मॉडल प्रश्न पत्र के क्रमानुसार ही प्रविष्ट करें। उक्त परीक्षाओं के मॉडल प्रश्न पत्र आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है। आपत्ति प्रामाणिक (स्टैंडर्ड, ऑथेंटिक) पुस्तकों के प्रमाण सहित ऑनलाईन ही प्रविष्ट करे।

दहेज को लेकर विवाहिता से मारपीट, घर से निकाला

नदबई/भरतपुर, (निसं)। नदबई कस्बा निवासी रेनू कुमारी ने दहेज की मांग करने व मारपीट कर प्रताड़ित करने व घर से निकालने का आरोप लगाते हुए अपने पति सहित ससुरालजनों के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज कराया है। पुलिस के अनुसार पीड़िता रेनू कुमारी पुत्री भावसिंह की 22 फरवरी 2023 में चिकसाना थाना क्षेत्र के गांव बछामदी नोह निवासी जयवीर सोलंकी से शादी हुई। शादी के बाद ही ससुरालजन, दहेज में 15 लाख रुपए की मांग करते हुए मारपीट कर विवाहिता को प्रताड़ित करने लगे। इतना ही नहीं, ससुरालजनों ने पीड़ित महिला को घर से निकाल दिया। पीड़िता का आरोप है कि, मंगलवार को पीड़िता के भाई व अन्य रिश्तेदारों ने समझाइश करने का प्रयास किया।

डूंगरपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि. डूंगरपुर
पता-मालपुर रोड इन्दिरा कॉलोनी डूंगरपुर (राज.)
क्रमांक :- 2025/Oct/SPL-100 दिनांक :- 31/10/2025
ई-निविदा सूचना वर्ष 2025-26
डूंगरपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लिमिटेड अन्तर्गत Supply of high quality grocery items हेतु इच्छुक बोलीदाताओं से दिनांक 31.10.2025 को प्रातः 06.00 pm बजे तक ऑनलाईन निविदा आमन्त्रित की जाती है। निविदा में वर्णित कार्य से सम्बन्धित विवरण व अन्य शर्तें बेवसाईट **http://eproc.rajasthan.gov.in** एवं **http://sppp.rajasthan.gov.in** पर देखी जा सकती है।
उपापन हेतु NIB Code - CCF2526A0017, UBN No. CCF2526GLOB00017
राज.संवाद/सी/25/13780 महाप्रबंधक

OFFICE OF THE SUPERINTENDING ENGINEER & PROJECT MANAGER WATERSHED CELL CUM DATA CENTER ZILA PARISHAD TONK
File No. :- ( )/1901 Date :- 11/11/2025
NOTICE INVITING BID
NIB No. 20/2025-26
Bids for Construction of Kachcha & Pasture works (02 Package) of total estimated value INR 88.78 lacs under PMKSY-2.0 Block Malpura Distt. Tonk are invited from interested bidders up to 06.00 PM [time], 22-11-2025 [date]. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/)** of the state and department website **(https://water.rajasthan.gov.in/wdsc).**
UBN 1. WSC2526WSOB01621, 2. WSC2526WSOB01622
Raj.Samwad/C/25/13791 SE & PM, WCDC, ZILA PARISHAD, TONK

फैक्टरी में श्रमिक की मौत, परिजनों ने हंगामा किया

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के पुर थाना क्षेत्र स्थित संगम इंडिया फैक्टरी में एक श्रमिक की मौत हो जाने के बाद आक्रोशित परिजनों और समाज जनों ने मुआवजे की मांग को लेकर एमजी हॉस्पिटल मोर्चरी के बाहर हंगामा खड़ा कर दिया। हंगामे की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और समझाइश कर मामले को शांत करवाया।

पुर थाना प्रभारी पुष्पा कसौटिया ने बताया कि सदर थाना क्षेत्र के चावंडिया गांव का रहने वाला राजेंद्र कुमार पिछले चार-पांच साल से संगम इंडिया फैक्टरी में काम कर रहा था। 8 नवंबर की रात करीब आठ बजे वह फैक्टरी गया, लेकिन अगले दिन सुबह पांच बजे बेहोश मिला, जिसे फैक्टरी कर्मचारी ने ही एमजी हॉस्पिटल में भर्ती करवाया। हालत में सुधार नहीं होने पर 10 नवंबर को दोपहर में उन्हें शहर के ही एक निजी अस्पताल में रेफर कर दिया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। इसके बाद आक्रोशित समाज और साथी श्रमिकों ने मुआवजे की मांग को लेकर हंगामा खड़ा कर दिया। हंगामा के बाद फैक्टरी प्रबंधन के साथ जहाजपुर विधायक गोपीचंद मीणा के प्रतिनिधि अजय पांचाल, मांडल विधायक उदयलाल भड़ाना के प्रतिनिधि अमर सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता अर्जुन सिंहज़ कन्हैयालाल तेली और एडवोकेट ओमप्रकाश तेली के बीच वार्ता का दौर चला। इसके बाद परिजन पोस्टमार्टम करने के लिए तैयार हुए और मृतक राजेंद्र का पोस्टमार्टम हुआ। मृतक तीन बेटियों का पिता था। सबसे बड़ी 10 साल की, उस छोटी 4 साल की और सबसे छोटी बेटी 6 माह की है। ऐसे में पारिवारिक परिस्थितियों को देखते हुए फैक्टरी प्रबंधन ने उचित मुआवजे पर सहमति बनाई और मामला शांत हो पाया।

- **पुलिस मौके पर पहुंची, समझाइश कर मामले को शांत कराया**

पॉक्सो के दोषी को 20 साल का कारावास

भीलवाड़ा, (निसं)। नाबालिग के अपहरण, दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट में दोषी आरोपी को पॉक्सो कोर्ट संख्या एक के न्यायाधीश बालकृष्ण मिश्र ने 20 साल का कठोर कारावास और 59 हजार के जुर्माने से दंडित किया है।

विशिष्ट लोक अभियोजक धर्मवीर सिंह कानावत ने बताया कि 31 जुलाई 2024 को प्रार्थी ने फूलिया कलां थाने पर रिपोर्ट दी, जिसमें उसने बताया कि उसके घर पर घोड़ी को ट्रेंड करने के लिए एक व्यक्ति योगेश उर्फ नारायण पुत्र सोहनलाल दमानी आता था, इसलिए वह पूरे परिवार से परिचित था। वह प्रार्थी की नाबालिग पुत्री को बहला फुसला कर अपहरण कर अपने साथ ले गया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की। पीड़िता की तलाश कर दस्तयाब किया तो पीड़िता ने पुलिस को बताया कि नारायण ने घोड़ी को ट्रेंड करने का काम किया, तब वह 15-20 दिन उनके घर पर ही रहा, इस दौरान इंस्टाग्राम पर उन दोनों की दोस्ती हो गई और फिर वह शादी का झांसा देने लगा।

पथराव मामले में दो गिरफ्तार

डूंगरपुर, (निसं)। बिछीवाड़ा थाना पुलिस ने सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर और उसकी कार पर पथराव के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जबकि दो नाबालिगों को डिटेन किया है। आरोपियों ने लूट की मंशा से इस वारदात को अंजाम दिया था। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने आरोपियों को लड़कियों के कपड़े पहनाकर कस्बे में जुलूस भी निकाला।

जिला पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार ने बताया कि यह घटना 9 नवंबर की रात की है। न्यू हाउसिंग बोर्ड सेक्टर 7, डूंगरपुर निवासी मेहुल चौबीसा अपने भाई यनिश चौबीसा और इन्फ्लूएंसर ऋतिक राठौड़ के साथ रतनपुर से डूंगरपुर लौट रहे थे। बलवाडा के पास कार रोककर वे बाथरूम के लिए उतरे। इसी दौरान पीछे से एक पत्थर आकर मेहुल चौबीसा के सिर पर लगा, जिससे उनके सिर से खून बहने लगा। अचानक हुए इस पथराव से घबराकर मेहुल कार की ओर भागे। जैसे ही वे कार लेकर निकलने लगे, तभी कार पर अचानक पथराव शुरू हो गया, जिससे कार के आगे और पीछे के शीशे टूट गए।

पुलिस ने आरोपियों को लड़कियों के कपड़े पहनाकर जुलूस निकाला।

सभी लोग इस घटना से घबरा गए और घायल मेहुल को लेकर तुरंत डूंगरपुर जिला अस्पताल पहुंचे, जहां उन्हें भर्ती कराया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। मुखबिरों से मिली सूचना के आधार पर पुलिस ने करोली फला नवाघरा निवासी सुरेश कटारा और धनपाल कटारा को हिरासत में लिया। पूछताछ में दोनों आरोपियों ने अपने दो नाबालिग साथियों के साथ मिलकर लूट की मंशा से वारदात को अंजाम देना कबूल किया। आरोपियों ने बताया कि वे नशे के आदी हैं और अपने शौक पूरे करने के लिए लूट की नीयत से पत्थरबाजी की इस घटना को अंजाम दिया था। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने इन आरोपियों को लड़कियों के कपड़े पहनाए। उनके गले में आज के बाद हम पत्थरबाजी नहीं करेंगे और पत्थरबाजी मत करो, जैसे नारे लिखी तख्तियां डालकर कस्बे में जुलूस निकाला।

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर
क्रमांक :- जोविप्रा/2025-26/1931 दिनांक :- 12/11/2025
ई-निविदा सूचना संख्या - मुख्यालय/37/2025-26
जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से इच्छुक व्यक्ति/फर्म/संस्था जो निविदा की निर्धारित शर्तो को पूर्ण करती है, से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्य की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट **www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in** एवं **www.sppp.raj.nic.in** पर देखी जा सकती है।
UBN No. : JOD2526SLOB00433
राज.संवाद/सी/25/13753 अधिशाषी अभियंता

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सानिवि नगर खण्ड बीकानेर
क्रमांक- दिनांक-28.10.2025
Notice Inviting Bid: 21/2025-26
Bid for the "Various Civil Works" are invited from interested bidders from 01.11.2025 (09.30 AM) to 17.11.2025 (06.00PM) & Open date 18.11.2025 (11.00 AM), other particulars of the bid may be visited on the procurement portal http://www.pwd.rajasthan.gov.in & eproc.rajasthan.gov.in & http://sppp.rajasthan.gov.in of the state and departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 289.26 Lakh.
UBN NO. PWD2526WSOB16235, PWD2526WSOB16236, PWD2526WSOB16237, PWD2526WSOB16238, PWD2526WSOB16240, PWD2526WSOB16241, PWD2526WSOB16242, PWD2526WSOB16243, PWD2526WSOB16244, PWD2526WSOB16245, PWD2526WSOB16247, PWD2526WSOB16251, PWD2526WSOB16254, PWD2526WSOB16256
Executive Engineer
DIPR/C/16612/2025 PWD City Division, Bikaner

हथियार उपलब्ध कराने वाला गिरफ्तार

भरतपुर, (निसं)। शहर के गोविंद गुप्ता हॉस्पिटल के पास खड़े हुए ऑनलाइन माध्यमों से अवैध हथियारों की खरीद-फरोख्त करने वाले आरोपी कृष्णावतार उर्फ कृष्णा (30) पुत्र हीरोसिंह निवासी हथैनी, चिकसाना (भरतपुर) को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी अवैध हथियारों की आपूर्ति कर अपहरण, लूट, डकैती, वाहन चोरी, जमीन कब्जा व हत्या जैसे गंभीर अपराधों में प्रयुक्त हथियार उपलब्ध कराता था। आरोपी से गहन पूछताछ कर उसके नेटवर्क में शामिल अन्य व्यक्तियों का भी पता लगाया जा रहा है। आरोपी के खिलाफ पूर्व में भी कई आपराधिक मामले दर्ज पाए गए हैं।

पुलिस के अनुसार 12 नवम्बर को गोविंद गुप्ता हॉस्पिटल के पास से आरोपी को गिरफ्तार करने सहित उससे बरामद हुए स्काई रंग का आईफोन 15 में विभिन्न प्रकार के अवैध हथियारों के फोटो पाए गए। साथ ही व्हाट्सएप चैट्स में कई मोबाइल नंबरों से हथियार और कारतूसों की खरीद-फरोख्त से संबंधित बातचीत, फोटो और वीडियो मिले थे। कुछ चैट्स में हथियारों की कीमतें और डिलीवरी की जानकारी भी दर्ज गई थी। आरोपी के खिलाफ पूर्व में भी कई आपराधिक मामले दर्ज पाए गए हैं। वहीं पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

चौकीदार की संदिग्ध मौत

डूंगरपुर, (निसं)। कोतवाली थाना क्षेत्र के बलवाड़ा गांव स्थित एक फॉर्म हाउस में चौकीदार की संदिग्ध मौत का मामला सामने आया है। चौकीदार को बेहोशी की हालत में पाया गया था, जिसे जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान दम तोड़ दिया।

बलवाडा निवासी बेटे दिनेश बरंडा ने रिपोर्ट दर्ज कराई है। रिपोर्ट में बताया गया कि उसके पिता कांति बरंडा गांव में एक फॉर्म हाउस पर चौकीदारी का काम करते थे। दिनेश और उसके दो भाई अहमदाबाद में रहते हैं, जबकि पिता कांतिलाल और बहन पायल घर पर ही रहते हैं। दिनेश ने बताया कि बुधवार शाम उसके पिता रोज की तरह फॉर्म हाउस पर गए थे। कुछ देर बाद बहन पायल उन्हें देखने गई तो कांतिलाल बेहोशी की हालत में जमीन पर गिरे हुए मिले। परिजनों ने तुरंत 108 एम्बुलेंस बुलाकर उन्हें डूंगरपुर जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

कार से 43 किलो डोडा-पोस्त बरामद

पुलिस ने कार सवार युवक को एनडीपीएस एक्ट में गिरफ्तार किया

जोधपुर, (कासं)। शहर के निकटवर्ती डांगियावास पुलिस थाना क्षेत्र में पीथासनी पुल पर पुलिस ने नाकाबंदी कर एक कार को रूकवाया। कार की तलाशी ली गई तब उसमें 43 किलो से ज्यादा से डोडा-पोस्त मिला। पुलिस ने कार में सवार युवक को एनडीपीएस एक्ट में गिरफ्तार कर लिया। उसके खिलाफ पाली जिले के रायपुर थाने में भी मादक पदार्थ तस्करी का प्रकरण दर्ज है।

डांगियावास थानाधिकारी दौलाराम ने बताया कि मुखबिरी सूचना मिली कि पीथासनी पुल से होकर एक स्वीफ्ट निकलने की संभावना है, इसमें अवैध रूप से डोडा-पोस्त लादा गया है। इस पर थानाधिकारी ने मय जाब्ते ने पुल पर नाकाबंदी की और स्वीफ्ट कार को रूकवा कर तलाशी ली। कार में तीन प्लास्टिक कट्टे मिले, जिनमें दो पूरे भरे थे और एक आधा खाली था। कट्टों में अवैध डोडा-पोस्त मिला। इसका वजन किए जाने पर यह 43 किलो 250 ग्राम निकला।

थानाधिकारी दौलाराम ने बताया कि मादक पदार्थ तस्करी के आरोप में बाबलों का बास फिटकासनी निवासी महेंद्र पुत्र खमाराम विश्नौई को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी के खिलाफ रायपुर पाली में भी एक प्रकरण अब तक सामने आया है।

डॉक्टर से मारपीट, तीन हिरासत में

करौली, (निसं)। मंडरायल उप जिला चिकित्सालय में बुधवार देर रात मारपीट और तोड़फोड़ का मामला सामने आया है। इलाज के लिए पहुंचे एक युवक ने ड्यूटी पर तैनात डॉ. से बदसलुकी कर मारपीट की। उसके साथियों ने अस्पताल परिसर में तोड़फोड़ की। डीएसपी अनुज शुभम ने बताया कि रात करीब 8:15 बजे आरोपी बंटी जाटव उपचार के लिए अस्पताल आया था। इलाज के दौरान उसने डॉ. संदीप कुमार से अभद्रता की। कुछ देर बाद आरोपी के करीब 12 साथी भी अस्पताल पहुंच गए और मिलकर तोड़फोड़ शुरू कर दी। इस घटना में डॉ. संदीप को हल्की चोटें आईं। सूचना मिलते ही डीएसपी अनुज शुभम सहित पुलिस टीम मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। पुलिस अधिकारियों ने चिकित्सक और स्टाफ से जानकारी ली। आक्रोशित डॉक्टरों और नर्सिंगकर्मियों ने सुरक्षा की मांग को लेकर एक घंटेकार्य बहिष्कार किया।

राजस्थान सरकार
कार्यालय नगर परिषद, जालोर (राजस्थान)
(अस्पताल चौराहा, जोधपुर रोड, जालोर-343001)
Tel.- (02973) 222270 E-mail : mbjalore24@yahoo.in
क्रमांक: नपजा/SBM/2025-26/5482 दिनांक: 08.11.2025
निलामी सूचना
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर परिषद जालोर के सिवरेज ट्रीटमेन्ट प्लांट के सोधित पानी को सिचाई कार्यो के लिए सार्वजनिक निलामी सूचना ठेका वर्श 2025-26 हेतु दिनांक 24.11.2025 व 25.11.2025 को दोपहर 3.00 बजे से 5.00 तक निलामी की जायेगी।
अतः इच्छुक व्यक्ति/ठेकेदार निर्धारित दिनांक को नगर परिशद कार्यालय में उपस्थित होकर निर्धारित अमानत राशि 10000.00 रूपये जमा करवाकर अपने नाम से बोली लगाकर ठेका ले सकते है। ठेके की शर्ते किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय तथा विभागीय पोर्टल https://sppp.rajasthan.gov.in पर भी देखी जा सकती है।
निलामी स्थल :- कार्यालय नगर परिषद जालोर
UBN - DLB2526A7859 आयुक्त
राज.संवाद/सी/25/13687 नगरपरिषद,जालोर

कार्यालय अति. जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा, जैसलमेर
पता - एडीपीसी कार्यालय, मलका प्रौल के पास, सूली डूंगर, जैसलमेर
क्रमांक :- सशि/जैसल/निविदा/नीति आयोग/2025-26/ दिनांक :- 11/11/2025
ई-निविदा सूचना संख्या - 16/2025-26
नीति आयोग आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत नीति अनटाईड फण्ड द्वारा विभाग में विभिन्न संसाधनों की आपूर्ति हेतु कार्यालय जिला कलक्टर जैसलमेर के प्रशासनिक स्वीकृति क्रमांक 979 दिनांक-24.07.2025 व वित्तिय स्वीकृति क्रमांक 1446 दिनांक 24.09.2025 के क्रम में कुल राशि 3,20,00000/- विभाग को प्राप्त हुई है जिनमें से 1,50,00000 राशि में से जिले के 25 विद्यालयों में स्मार्ट क्लास रूम की आपूर्ति व इन्स्टालेशन की जानी है इस हेतु पंजीकृत / रजिस्टर्ड फर्मों से निर्धारित प्रपत्र में ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।
निविदा से सम्बन्धित विस्तृत विवरण **website :- http://sppp.rajasthan.gov.in http://eproc.rajasthan.gov.in** पर डाउनलोड करने की अवधि दिनांक 10.11.2025 रात्रि 10:00 बजे से दिनांक 01.12.2025 तक सांय 06:00 बजे तक रहेगी।
निविदा शुल्क ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया शुल्क से सम्बन्धित दस्तावेज निविदादाता द्वारा संबंधित जिला कार्यालय में दिनांक 01.12.2025 को दोपहर 12:00 बजे तक जमा करवाया जाना सुनिश्चित करें।
दिनांक 01.12.2025 को सांयकाल 03:00 बजे खोली जायेगी।
UBN NO. RSE2526GLOB03901 अति. जिला परियोजना समन्वयक
राज.संवाद/सी/25/13788 समग्र शिक्षा, जैसलमेर

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD ELECTRICAL DIVISION KOTA
No.-623 Date: 07.11.2025
Notice Inviting Bid (NIT No. 19/2025-26)
Bids for 01 No. AC work at District Kota are invited from interested bidders up to 06.00 PM of 20.11.2025 (Thursday) Other particulars of bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rj.nic.in) of the Rajasthan State The approximate value of the procurement is Rs. 150.25 Lac.
UBN-PWD2526WSOB16472 Executive Engineer
DIPR/C/16558/2025 PWD Elect Div Kota

जल संसाधन विभाग
कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता क्षैत्रीय उद्योगशाला खण्ड, नर्मदा नहर परियोजना, सांचौर
क्रमांक-लेखा/निविदा/2025-26/1212-25 दिनांक-08.11.2025
अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या 01/2025-26
नर्मदा नहर परियोजना के विभिन्न पम्पिंग स्टेशनों के संचालन एवं रख-रखाव कार्य हेतु जल संसाधन विभाग राजस्थान सरकार में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत, के.लो.नि.वि.ए.डाक, दूरसंचार, रेलवे में व अन्य राज्य सरकारों/केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों/संगठनों के पास सूचिबद्ध ठेकेदार जो राजस्थान के पात्र श्रेणी के समतुल्य हो से दिनांक 20.11.2025 सायं 06.00 बजे तक ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। बिड की अन्य शर्ते वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in, water.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है।
NIB CODE- NCP2526A0001, UBN CODE-NCP2526WSOB00001
(कनिष्का चौधरी) अधिशाषी अभियन्ता
DIPR/C/16626/2025 क्षैत्रीय उद्योगशाला खण्ड न.न.प. सांचौर, मो.नं. 7425981959

इंदिरा गांधी नहर में पानी बंटवारे को लेकर किसान आमने-सामने हुए

नाराज किसानों ने पथराव किया, पुलिसकर्मियों को चोट आई, पुलिस की गाड़ी और जेसीबी के शीशे तोड़े

बीकानेर, (निसं)। यहां गुरुवार को किसान और पुलिसकर्मी आमने-सामने हो गए। गुस्साए किसानों ने पुलिसकर्मियों पर पथराव शुरू कर दिया। मामला जिले के खाजूवाला थाना क्षेत्र का है। इस पथराव में पुलिस की गाड़ी और जेसीबी के शीशे टूट गए। वहीं कुछ पुलिसकर्मियों को चोट भी लगी है।

जानकारी के अनुसार इंदिरा गांधी नहर में पानी बंटवारे को लेकर खाजूवाला क्षेत्र के किसानों ने विरोध किया था। दोपहर तीन बजे किसान नहरी क्षेत्र में शामिल होना शुरू हो गए और प्रदर्शन करने लगे। इनका कहना था कि नहरी पानी के मोघे का साइज सही नहीं है। कुछ किसानों को इस मोघे से अतिरिक्त पानी मिल रहा है। वहीं दूसरे पक्ष के किसानों का कहना था कि मोघा सही है, इसे बदलने नहीं देंगे। इसी विवाद के चलते दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए। इसी को लेकर दोनों पक्षों के किसान थे। समझाइश के लिए तहसीलदार राजकुमारी बिश्नोई भी पहुंची। इसी विवाद को लेकर कहासुनी शुरू हो गई और किसानों ने पथराव शुरू कर दिया। समझाइश के दौरान किसानों ने अचानक पथराव शुरू कर दिया। इस दौरान पुलिस की गाड़ी को भी नुकसान पहुंचा। जानकारी के अनुसार दो दिन पहले इंदिरा गांधी नहर की आरडी-145 से मोघे बदल दिए गए थे। इसी बात को लेकर किसान नाराज थे।

- **किसानों का कहना था कि नहरी पानी के मोघे का साइज सही नहीं है, कुछ किसानों को इस मोघे से अतिरिक्त पानी मिल रहा है**
- **वहीं दूसरे पक्ष के किसानों का कहना था कि मोघा सही है, इसे बदलने नहीं देंगे, इसी विवाद के चलते दोनों पक्ष आमने-सामने हो गए**

किसानों के दो पक्ष बने हुए हैं। एक पक्ष का आरोप था कि इस नजर से किसानों को ज्यादा पानी दिया जा रहा है। जबकि दूसरे पक्ष का कहना था कि पानी की बारी का समय सही है। मोघे को लेकर प्रशासन ने दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास किया लेकिन विवाद शांत नहीं हुआ। इसे लेकर पूर्व में हुई शिकायत पर एक कमेटी बनाई गई थी। विवाद के बाद कमेटी भी मौके पर पहुंची। किसानों को पानी बराबर मिले इसलिए मोघे को सही करने की बात की जा रही थी। इसके बाद नाराज किसान नहर अधिकारियों पर बुलाने की जिद पर अड़ गए। कुछ देर बाद नहर अधिकारी वहां पहुंचे और दोनों पक्षों में बातचीत शुरू हुई।

बातचीत के दौरान दोनों पक्षों के किसानों में विरोध शुरू हो गया। इस दौरान तहसीलदार राजकुमारी बिश्नोई भी मौके पर थी। किसानों के समझाने के प्रयास के बाद भी वे महिला तहसीलदार से उलझते रहे। इसी बीच पुलिस को सूचना मिली तो कुछ गाड़ियां मौके पर पहुंची। पुलिस ने किसानों को हटाने का प्रयास किया तो उन्होंने पत्थरबाजी शुरू कर दी। इस पत्थरबाजी में तहसीलदार बिश्नोई बाल-बाल बची। पथराव के दौरान किसानों ने पुलिस की गाड़ी और जेसीबी के शीशे तोड़ दिए। इस दौरान सब इंस्पेक्टर हरपाल सिंह भी वहां मौजूद थे। पथराव में पुलिस की दो गाड़ियों को नुकसान पहुंचा है। बताया जा रहा है कि इस पथराव में दो पुलिसकर्मियों को भी चोट लगी है, हालांकि कोई गंभीर रूप से घायल नहीं है।

पथराव की सूचना के बाद खाजूवाला सीओ अमरजीत सिंह और सीआई सुरेंद्र प्रजापत भी मौके पर पहुंचे। इसके बाद किसानों से दोबारा समझाइश की गई कि मोघे बदलने से उन्हें पूरी मात्रा में पानी दिया जाएगा, लेकिन किसानों का कहना है कि बार-बार मोघे बदलने से किसानों की बारी सही नहीं आ पा रही है। ऐसे में देर शाम तक इनका विरोध चलता रहा। जानकारी अनुसार जब पानी की बारी खत्म होती है तो अंतिम मोघे से पानी निकलता रहता है। इस अतिरिक्त पानी को लेकर ही किसानों में विवाद होता है। जिस मोघे पर विवाद हुआ, वहां से आगे के किसानों का कहना है कि उन्हें पानी कम मिल रहा है और इस मोघ से बारी के बाद भी किसानों को पानी दिया जा रहा है।

MUNICIPAL COUNCIL RAJSAMAND
Zila Parishad Road, Near Fire Station, Rajsamand
Tel. No. :- 02952-220034 Email:- rajsamandnagarpalika@gamil.com
S.No. F( )/MCR/SBM/SWM Processing/2025-26/6426 Date :- 07.11.2025
Notice Inviting Request for Proposal (RFP)
Online Proposal are invited on behalf of Municipal Council Rajsamand from the reputed, experienced and technically eligible contractors for the services of **"Design, construction, establishment and development of processing plant and required development work and maintenance of Engineered sanitary landfill site and o&m the 20 years having a minimum adequate capacity for Rajsamand and scalable further as per requirement on VGF basis** and revised from time-to-time" The further detailed bid conditions can be downloaded from website http://Sppp.rajasthan.gov.in, or http://eproc.rajasthan.gov.in, estimate cost of work 680.00 Lacs and bid security 13.60 Lacs request for proposal submission end date of time as below :-

Publishing Date & Time	11.11.2025 at 06:00 PM
Request for Proposal Download start Date & Time	12.11.2025 at 09:00 AM
Pre-bid conference & site visit will be held on	20.11.2025 at 01.00 PM
Request for Proposal submission End Date & Time	11.12.2025 at 06:00 PM
Physically Document Submission Date & Time	12.12.2025 at 01:00 PM
Technical Bid Opening Date & Time	12.12.2025 at 04:00 PM at ULB Rajsamand
UBN NO. :-	DLB2526WLOB23741

Commissioner
Raj.Samwad/C/25/13724 Municipal Council Rajsamand

राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल्स लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम), एसबीयू एण्ड पीसी-लिग्नाईट, सी-स्कीम, जयपुर- 302005(राज.), फोन नम्बर: (0141)2227938/2227710,2227715, फैक्स: (0141)2227360,2227761, Email:- Jaipur.rsmml@rajasthan.gov.in
ई-निविदा सूचना दिनांक :- 12/11/2025

निविदा संख्या एवं दिनांक	कार्य का विवरण
F.6(1)75/CC/Securiy Barmer/19 dated 11.11.2025 UBN No. MML2526SLOB00105	बाड़मेर जिले में स्थित लिग्नाईट खदानों पर सुरक्षा की दृष्टि से अनुबंध के आधार पर चालीस (40) अकुशल श्रेणी के श्रमिकों। अनुमानित मूल्य (रू.) 22.50 लाख, धरोहर राशि (रू.) - 45,000/-, निविदा राशि- 1180/- अहस्तान्तरणीय, जी.एस.टी. सहित। रूपये 500/- डीडी द्वारा एमडी, आरआईएसएल के पक्ष में देय हो।

उपरोक्त निविदा की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट **www.rsmm.com** अथवा **www.sppp.rajasthan.gov.in** अथवा प्रबंधक (यांत्रिकी-अनुबंध) से उपरोक्त पतें पर सम्पर्क करें।
राज.संवाद/सी/25/13740 उप महाप्रबन्धक (का.एवं प्रशा.)

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर
क्रमांक :- जो.वि.प्रा./पश्चिम/2025-26/राजकाज 18774245 दिनांक :- 11/11/2025
ई-बिड सूचना संख्या :- जोन पश्चिम/11/2025-26
जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से सिविल कार्यों हेतु मुहरबंद बिड आमंत्रित की जाती हैं। इन कार्यो की अनुमानित लागत, बिड बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, बिड शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट **http://www.eproc.rajasthan.gov.in, www.joda.rajasthan.gov.in, www.sppp.raj.nic.in** पर देखा जा सकता है।
NIB Code : JOD2526A0185
UBN No. : JOD2526WSOB00404 To JOD2526WSOB00421
राज.संवाद/सी/25/13746 अधिशाषी अभियंता (पश्चिम)

कार्यालय नगर निगम, अजमेर
झलकारी बाई स्मारक के पास पंचशील-लोहागल मार्ग, अजमेर (राजस्थान) फोन नं. 0145-2429971, 2429920
क्रमांक :-MEW/2025-26/512 दिनांक:- 03.11.2025
:: अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या 41/2025-26 ::
नगर निगम अजमेर की ओर से नगर निगम अजमेर एवं राजकीय विभाग में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदको जो कि केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, डाक एवं दूरसंचार, रेलवे या अन्य राज्य सरकार, केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनो जो राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो (निविदा पात्रता पंजीकरण के नियमो के अनुसार मान्य) जो निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से सिविल निर्माण कार्यो हेतु ऑनलाईन ईनिविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा कार्यो की कुल लागत	राशि 645.96 लाख (01 कार्य)
ऑनलाईन निविदा प्रपत्र डाउनलोड/अपलोड करने की अवधि	Date 01.11.2025 To 13.11.2025 Time 6.00 PM तक
प्री-बिड मिटिंग की तिथि व समय	Date 06.11.2025 Time 11.00 AM पर Additional Chief Engineer Chamber (Nirman Section) Municipal Corporation Ajmer
Technical निविदा खोलने की तिथि व समय	Date 14.11.2025 Time 11.00 AM पर
Financial निविदा खोलने की तिथि	सफलतम निविदादाता को उचित माध्यम के द्वारा सूचित कर दिया जावेगा।

विस्तृत विवरण वेबसाईट **http://sppp.rajasthan.gov.in** एवं **http:/www.eproc.rajasthan.gov.in** पर एवं नगर निगम के निर्माण विभाग के कार्यालय में भी देखी जा सकती है।
NIB CODE :-ANN2526A0150
UBN NO. :-ANN2526WLOB00199 अधिशाषी अभियन्ता
राज.संवाद/सी/25/13802 नगर निगम अजमेर

प्रधानाचार्य और अधीक्षक अब नहीं कर सकेंगे प्राइवेट प्रेक्टिस

मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन सुदृढ़ करने के लिए राज्य सरकार ने लिया निर्णय

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राज्य सरकार ने प्रदेश राजकीय चिकित्सा महाविद्यालयों एवं इससे संबद्ध अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर की मंजूरी के बाद चिकित्सा शिक्षा विभाग ने मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक, अतिरिक्त प्रधानाचार्य एवं संबद्ध अस्पतालों में अधीक्षकों की नियुक्ति के लिए नियमों में बदलाव करते हुए नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। ये दिशा-निर्देश तत्काल प्रभाव से लागू होंगे।

चिकित्सा मंत्री खींवसर ने कहा है कि मेडिकल कॉलेज एवं इससे संबद्ध अस्पतालों में मरीज भार अत्यधिक होने के साथ ही यहां प्रशासनिक कार्यों की अधिकता रहती है और विशेष परिस्थितियों में कार्य सम्पादन किया जाता है। ऐसे में मेडिकल कॉलेजों में पूर्णकालिक रूप से दक्ष एवं कुशल प्रशासक होना आवश्यक है। इसे देखते हुए राज्य सरकार ने विस्तृत विचार विमर्श के बाद प्रधानाचार्यों, अतिरिक्त प्रधानाचार्यों एवं अधीक्षकों के चयन एवं नियुक्ति के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं, इस जनहितैषी निर्णय से स्वास्थ्य सेवाओं का बेहतर प्रबंधन हो सकेगा।

विभागाध्यक्ष एवं यूनिट हैड भी नहीं बन सकेंगे

चिकित्सा शिक्षा सचिव अम्बरीष कुमार ने बताया कि परिपत्र के अनुसार राजकीय चिकित्सा महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक तथा संबद्ध अस्पतालों के अधीक्षक प्राइवेट प्रैक्टिस नहीं कर सकेंगे। वे अपने आचार्य या वरिष्ठ आचार्य जैसे पदीय कर्तव्यों के लिए एक चैथाई से ज्यादा समय नहीं देंगे।

- मेडिकल कॉलेज प्रधानाचार्य, अतिरिक्त प्रधानाचार्य एवं अधीक्षकों की नियुक्ति के लिए नई गाइडलाइन जारी

चयनित प्रधानाचार्य एवं अधीक्षक को विभागाध्यक्ष या यूनिट हैड बनने की अनुमति नहीं होगी। इसके लिए उन्हें आवेदन पत्र के साथ इस संबंध में घोषणा पत्र भी देना होगा। उन्हें यह भी शपथ पत्र देना होगा कि वे पीएमसी के पद पर पूर्णकालिक रूप से कार्य करेंगे।

समिति करेगी चयन, अधिकतम आयु 57 वर्ष

चिकित्सा शिक्षा सचिव ने बताया कि राजकीय एवं राजमेस चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक पद के लिए वरिष्ठ आचार्य के पद पर कार्यरत राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग की गाइडलाइन के अनुसार पात्र शिक्षक ही आवेदन कर सकेंगे। यदि महाविद्यालय में पात्र चिकित्सक-शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं, तो केंद्र या राज्य सरकार द्वारा संचालित अन्य चिकित्सा महाविद्यालयों में कार्यरत पात्र चिकित्सक भी आवेदन कर सकेंगे। इस पद पर नियुक्ति मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित चयन समिति द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से की जाएगी। समिति में कार्मिक विभाग एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के सचिव तथा राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय या मारवाड़ चिकित्सा महाविद्यालय के कुलपति सदस्य होंगे। इस पद पर आवेदन के लिए अधिकतम आयु सीमा 57 वर्ष निर्धारित की गई है। प्रधानाचार्य के पद हेतु अधीक्षक या अतिरिक्त प्रधानाचार्य के पद पर 3 वर्ष का कार्य अनुभव एवं विभागाध्यक्ष के पद पर 2 वर्ष का अनुभव आवश्यक होगा।

प्रधानाचार्य का स्थानांतरण भी संभव

परिपत्र के अनुसार समिति द्वारा प्रधानाचार्य पद के लिए 3 चिकित्सा अधिकारियों का पैनल बनाया जाएगा। सक्षम स्तर से पैनल के अनुमोदन के उपरांत चयनित अधिकारी को प्रधानाचार्य के पद पर पदस्थापित किया जाएगा। राज्य हित में इन चयनित प्रधानाचार्यों को अन्य मेडिकल कॉलेज में भी स्थानांतरित किया जा सकेगा। इनका कार्यकाल प्रथमत: 3 वर्ष का होगा। इनके कार्यकाल में 2 वर्ष की अभिवृद्धि प्रशासनिक विभाग के अनुमोदन उपरांत की जा सकेगी। प्रधानाचार्य द्वारा पद पर कार्य करने में असमर्थता व्यक्त करने या उस पर भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अकुशलता एवं गंभीर आरोप होने पर राज्य सरकार द्वारा संबंधित जिला कलेक्टर, संभागीय आयुक्त या अन्य सक्षम अधिकारी अथवा समिति से जांच करवाई जा सकेगी।

वरिष्ठतम आचार्य बनेंगे अधीक्षक

इसी प्रकार अधीक्षकों की नियुक्ति के लिए जारी परिपत्र के अनुसार एकल विशिष्टता युक्त शैक्षिणक चिकित्सालयों में संबंधित विशिष्टता के वरिष्ठ आचार्य को अधीक्षक नियुक्त किया जाएगा। यदि वरिष्ठ आचार्य द्वारा पद ग्रहण करने में लिखित रूप से असमर्थता व्यक्त की जाती है अथवा राज्य सरकार द्वारा उन्हें इस पद के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है, तो उसी संस्थान में कार्यरत अगले वरिष्ठ आचार्य को अधीक्षक नियुक्त करने की प्रक्रिया अपनाई जाएगी।

बहुविशिष्टता वाले शैक्षिणक चिकित्सालयों में अधीक्षक की नियुक्ति चयन समिति की अनुशंसा के आधार पर की जाएगी। चिकित्सा शिक्षा विभाग के सचिव की अध्यक्षता में गठित इस समिति में चिकित्सा शिक्षा आयुक्त, अतिरिक्त निदेशक (अस्पताल प्रशासन एवं एकेडमिक) एवं संबंधित चिकित्सा महाविद्यालय के प्रधानाचार्य सदस्य के रूप में शामिल होंगे। समिति द्वारा पात्र आवेदकों का साक्षात्कार लेकर नियुक्ति हेतु नामों का पैनल तैयार किया जाएगा, जिसमें से राज्य सरकार किसी एक चिकित्सक को अधीक्षक नियुक्त करेगी।

अन्य कॉलेज के चिकित्सक भी कर सकेंगे आवेदन

बहु विशिष्टता युक्त चिकित्सालयों के अधीक्षक पद पर नियुक्ति हेतु संबंधित चिकित्सा महाविद्यालय में कार्यरत विषयों के वे वरिष्ठ आचार्य या आचार्य पात्र होंगे, जो कम से कम 5 वर्ष की सेवा इन पदों पर पूर्ण कर चुके होंगे।

इनके उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में जो इस योग्यता के सबसे करीब हो, उनका चयन किया जा सकेगा। अगर मेडिकल कॉलेज में पात्र चिकित्सक उपलब्ध नहीं होंगे तो केंद्र या राज्य सरकार के अन्य चिकित्सा महाविद्यालयों में कार्यरत पात्र चिकित्सक को आवेदन की अनुमति होगी। अधीक्षक के पद पर आवेदन करने वाले चिकित्सकों को इस पद पर पूर्णकालिक कार्य करने का शपथ पत्र देना होगा। वे अपने पदीय कर्तव्यों पर एक चैथाई से अधिक समय व्यतीत नहीं कर सकेंगे तथा एचओडी एवं यूनिट हैड के साथ ही निजी प्रैक्टिस भी नहीं कर सकेंगे। इनकी नियुक्ति प्रथमत: 3 वर्ष के लिए की जाएगी, जिसे प्रशासनिक विभाग के अनुमोदन से 2 वर्ष तक बढ़ाया जा सकेगा।

अधिकतम 5 अतिरिक्त प्राचार्य बना सकेंगे

वर्तमान में राजकीय चिकित्सा महाविद्यालयों में अतिरिक्त प्रधानाचार्य के पदों एवं कार्यों के संबंध में एकरूपता नहीं है। इसे देखते हुए अब यह निर्धारित किया गया है कि किसी भी मेडिकल कॉलेज में 5 से अधिक अतिरिक्त प्रधानाचार्य नहीं होंगे। राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय में विभिन्न कार्यों के कुशल संचालन हेतु इनके दायित्व भी निर्धारित किए गए हैं।

ये एकेडमिक, रिसर्च एवं फैकल्टी अफेयर्स, स्टूडेंट अफेयर्स, प्रशासन तथा क्लिनिकल एवं हॉस्पिटल सेवाओं से संबंधित दायित्व संभालेंगे। सभी अतिरिक्त प्रधानाचार्य, प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक के निर्देशन में कार्य करेंगे तथा इन पदों पर नियुक्ति वरिष्ठता के आधार पर वरिष्ठ आचार्यों में से की जाएगी। इनकी नियुक्ति प्रथमत: 3 वर्षों के लिए की जाएगी। यदि किसी अतिरिक्त प्रधानाचार्य की सेवाएं असंतोषजनक पाई जाती हैं तो उसे समय से पहले भी हटाया जा सकेगा।

तीन साल की सेवा संतोषजनक पूर्ण करने वाले अधिकारी को सक्षम स्वीकृति उपरांत एक-एक वर्ष की अवधि के लिए तीन बार पुनर्नियुक्त किया जा सकेगा।

राजस्थान का 6वें राष्ट्रीय जल पुरस्कार की विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन

सीकर के बजरंग लाल जैथू ने प्रथम और श्रीगंगानगर के खरलां जल उपभोक्ता संगम ने हासिल किया तृतीय पुरस्कार

जयपुर (कासं)। राजस्थान के जल संरक्षण और संचयन के कार्य राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान बना रहे हैं। केन्द्रीय जल शक्ति मंत्रालय के जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा घोषित 6वें राष्ट्रीय जल पुरस्कारों-2024 में खरलां जल उपभोक्ता संगम, श्रीगंगानगर ने सर्वश्रेष्ठ जल उपयोगकर्ता संघ श्रेणी में तृतीय एवं बजरंग लाल जैथू (सीकर) ने जल क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का प्रथम पुरस्कार (पश्चिम क्षेत्र) प्राप्त किया है। इनके अतिरिक्त बिरला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान, पिलानी ने स्कूल और कॉलेज के अलावा सर्वश्रेष्ठ संस्थान की इनसाइड कैंपस उपश्रेणी में द्वितीय-संयुक्त, अंबुजा फाउण्डेशन, जयपुर ने सर्वश्रेष्ठ नागरिक समाज श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया है। सीकर के बजरंगलाल जेठू वर्ष 1993 से जल संरक्षण और प्रबंधन के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय है। उन्होंने जल संसाधनों के जीर्णोद्धार, पुनर्स्थापन और संरक्षण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। इसके अलावा, स्कूलों, उद्यानों और श्मशान जैसे सार्वजनिक स्थानों पर जल संरक्षण के विभिन्न नवाचार भी किए हैं। वहीं, श्रीगंगानगर के खरलां जल उपभोक्ता संगम ने नहरों व खालों की सफाई, लोगों को वसूली कैंप के प्रति जागरूक करना, काश्तकारों के हित में उनको नई तकनीक से अवगत करवाने जैसे उल्लेखनीय कार्य किए हैं। इन कार्यों के माध्यम से आमजन में जल के महत्व के प्रति जागरूकता आई है।

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विजेताओं को बधाई दी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि प्रदेश की जल संरक्षण और इसके संचयन के क्षेत्र में नई पहचान बन रही है। राज्य सरकार ने प्रदेशभर में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान संचालित कर जल संरक्षण और संचयन के कार्यों को नई दिशा दी है। इसके तहत जलाशयों की मरम्मत, सफाई, जल निकासी व्यवस्था में सुधार, अतिक्रमण हटाना, बांध क्षेत्रों में श्रमदान, पौधारोपण, जल संग्रहण और जल संरक्षण संरचनाओं सम्बंधित कार्य किए गए हैं। इसके साथ ही, कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान के माध्यम से भूजल रिचार्ज संरचनाओं का निर्माण भी किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि 6वें राष्ट्रीय जल पुरस्कारों के लिए संयुक्त विजेताओं सहित 46 विजेताओं की घोषणा की है। ये पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ राज्य, सर्वश्रेष्ठ जिला, सर्वश्रेष्ठ ग्राम पंचायत, सर्वश्रेष्ठ शहरी स्थानीय निकाय, सर्वश्रेष्ठ विद्यालय या महाविद्यालय, सर्वश्रेष्ठ उद्योग, सर्वश्रेष्ठ जल उपयोगकर्ता संघ, सर्वश्रेष्ठ संस्थान (विद्यालय या महाविद्यालय के अलावा), सर्वश्रेष्ठ नागरिक समाज और जल क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति सहित 10 श्रेणियों में दिए जाएंगे।

स्वदेशी अपनाएंगे, तभी देश आत्मनिर्भर बनेगा : दिया कुमारी

''आत्मनिर्भर भारत'' संकल्प अभियान के तहत जयपुर में महिला सम्मेलन आयोजित हुआ

जयपुर। भाजपा जयपुर शहर की ओर से ''आत्मनिर्भर भारत संकल्प'' अभियान के तहत आयोजित विराट महिला सम्मेलन गुरुवार को राजापार्क स्थित भाटिया भवन में आयोजित हुआ। समारोह में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुई।

उन्होंने कहा कि जब हम अपने भारत में बने हुए चीजों को खरीदेंगे तभी हमारा देश आत्म निर्भर बन सकेगा। केंद्र सरकार और राज्य सरकार ने महिलाओं के विकास के लिए अनेक योजना रखी है जिसकी जानकारी आप सभी को होनी चाहिए। 33 प्रतिशत आरक्षण से महिलाओं को राजनीति में आने के बहुत अवसर मिलेंगे। पंचायती राज, निगम चुनाव, विधानसभा, लोकसभा राज्यसभा सभी जगह महिलाओं का बोलबाला रहेगा।

दिया कुमारी ने कहा कि 19 नवंबर को घूमर महोत्सव आयोजित होने जा रहा है। ज्यादा से ज्यादा संख्या में रजिस्ट्रेशन कर महिलाओं को इसमें हिस्सा लेना है। विद्याधर नगर विधानसभा के फुटबॉल ग्राउंड में 3 से 4 बजे की बीच होगा। यह सातों संभाग के मुख्यालय पर आयोजित होगा। उन्होंने सभी महिलाओं को आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी दिलाया।

भाजपा जयपुर शहर की ओर से आयोजित महिला सम्मेलन में शरीक हुई उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी को पदाधिकारियों ने उनका चित्र भेंटकर स्वागत किया।

इस अवसर पर जयपुर जिला अध्यक्ष अमित गोयल ने कहा कि भारत के विश्व गुरु बनाना है, तो हमें वसुधैव कुटुंबकम की भावना से काम करना होगा।

जहां विश्व शक्ति बनने के बात आती है, तो वहां अहंकार होता है। जब विश्व गुरु बनने की बात आती है तो वहां वसुधैव कुटुंबकम की भावना आती है। 140 करोड़ भारतीयों को मजबूत बनाने का संकल्प है।

सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि सरकार की ओर से महिलाओं के लिए उज्ज्वला योजना, हर घर नल अभी चल रही है जिसके माध्यम से उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहयोग मिल रहा है।

महिला मोर्चा की प्रदेश महामंत्री जयश्री गर्ग, भाजपा प्रदेश मंत्री स्टेफी चौहान, जयपुर शहर के सह प्रभारी नरेश बंसल, तथा भाजपा प्रदेश मंत्री अजीत मांडन ने भी शिरकत की।

ऋण वसूली अधिकरण ने लगाई लोक अदालत

जयपुर। सर्वोच्च न्यायालय एवं राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली के निर्देशानुसार 14 नवम्बर को ऋण वसूली अधिकरणों में लंबित मुकदमों के निपटान के लिए विशेष लोक अदालतों का आयोजन किया गया। जयपुर स्थित ऋण वसूली अधिकरण के लालकोठी शॉपिंग सेन्टर, टोंक रोड, जयपुर स्थित कार्यालय में भी विशेष लोक अदालत आयोजित हुई।

इस लोक अदालत को सफल बनाये जाने के लिए भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा भी सभी बैंकों के चैयरमैन, प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी को निर्देशित किया है कि वे सभी इस लोक अदालत में सक्रिय योगदान प्रदान करे एवं अधिकतम प्रकरणों के निस्तारण हेतु अपने अधिनस्थ सभी अधिकारियों को भी सकारात्मक सहयोग हेतु निर्देशित करें ।अधिकरण के पीठसीन अधिकारी विमल गुप्ता द्वारा सभी बैंकों के महाप्रबन्धक व उच्चाधिकारियों के साथ बैठक भी आयोजित की। जिसमें सभी बैंक अधिकारियों द्वारा इस लोक अदालत में अधिकतम प्रकरणों के निस्तारण कर लोक धन की वसूली के लिए अधिकतम प्रयास किये जाने का आश्वासन दिया गया है। लोक अदालत के लिए डीआरटी बार एसोसिएशन के पदाधिकारी एवं सदस्यों द्वारा भी कोशिशें की जा रही है।

मनरेगा में फार्म पॉण्ड श्रेणी के अंतर्गत हो सकेगा टांका निर्माण का कार्य

जयपुर (कासं)। महात्मा गांधी नरेगा योजना के अंतर्गत फार्म पॉण्ड श्रेणी में टांका निर्माण के कार्य किए जा सकेंगे। इस संबंध में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के अनुरोध को केन्द्रीय ग्रामीण विकास, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने स्वीकार किया है।

मुख्यमंत्री ने गत माह केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री से मुलाकात कर निजी कृषि भूमि पर टांका निर्माण कार्य पूर्व की भांति जारी रखने का आग्रह किया था। श्री शर्मा ने कहा कि रेगिस्तानी जिलों में टांका निर्माण जल सुरक्षा, कृषि विकास और जलवायु अनुकूल आजीविका के लिये अत्यन्त उपयोगी, सस्ता और टिकाऊ समाधान है।

- केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का अनुरोध स्वीकार किया

केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री ने पत्र के माध्यम से मुख्यमंत्री को अवगत कराते हुए कहा कि व्यक्तिगत लाभार्थियों के लिए फार्म पॉण्ड का निर्माण महात्मा गांधी नरेगा योजना के अंतर्गत अनुमत कार्य है। योजना से संबंधित दिशा-निर्देशों की पालना सुनिश्चित करते हुए व्यक्तिगत लाभार्थियों के लिए टांका निर्माण कार्य को फार्म पॉण्ड श्रेणी के तहत किया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे प्रदेश के ग्रामीणों को बड़ी राहत मिलेगी।

उन्होंने कहा कि राज्य और केन्द्र की डबल इंजन की सरकार कृषि क्षेत्र में निरंतर दूरगामी निर्णय ले रही है, जिससे किसानों का आर्थिक सशक्तीकरण हो रहा है।

हरमाड़ा हादसे पर उपमुख्यमंत्री की समीक्षा बैठक

रीको कराएगा आकेड़ा डूंगर औद्योगिक क्षेत्र में 9.85 करोड़ रु. के विकास कार्य

जयपुर। हरमाड़ा में गुरूवार को पुन: भीषण सड़क हादसे को लेकर उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सचिवालय में संबंधित विभागों के अधिकारियों की बैठक ली। बैठक में उन्होंने दुर्घटना की विस्तृत समीक्षा करते हुए भविष्य में ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाने के निर्देश दिए। दिया कुमारी ने कहा कि यह हादसा अत्यंत दुखद है और इससे हुई जनहानि की पीड़ा शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती। उन्होंने संबंधित विभागों को सडक सुरक्षा के सुदृढ उपायों और आपातकालीन राहत व्यवस्था को और प्रभावी बनाने के निर्देश दिए। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार का संकल्प है कि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो और जनता की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता बनी रहे। उन्होंने दुर्घटना में प्रभावित सभी परिवारों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की और प्रशासन को हर संभव सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए। दिया कुमारी ने कहा कि जनता की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

जयपुर (कासं)। राज्य सरकार की वर्ष 2025-26 की बजट घोषणा की पालना में रीको के निदेशक मंडल ने औद्योगिक क्षेत्र आकेड़ा डूंगर-जयपुर में उद्यिमयों की विकास कार्य कराये जाने की लंबी मांग को मानते हुये 985 लाख रुपये के विभिन्न विकास कार्यों के लिये स्वीकृति प्रदान की है। रीको द्वारा पूर्व में इस औद्योगिक क्षेत्र को अविकसित आधार पर निजी विकासकर्ता को आवंटित किया गया था लेकिन विकासकर्ता द्वारा विकास कार्य नहीं कराने के कारण उद्यिमयों को दिक्कत का सामना करना पड रहा था। उद्यिमयों की समस्याओं के निस्तारण के लिये राज्य सरकार द्वारा पहल कर बजट घोषणा की गयी जिसको रीको द्वारा पूर्ण रूप प्रदान किया जा रहा है।

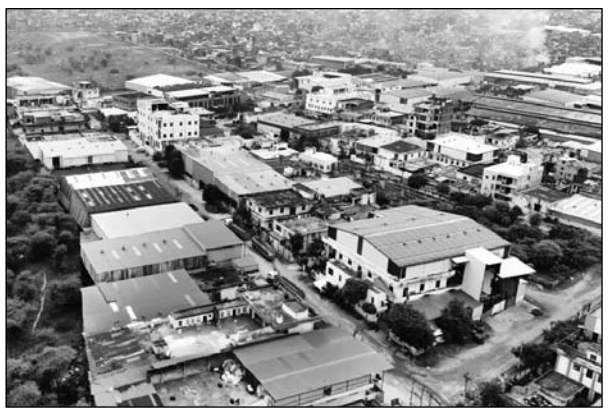

विकास कार्यों के तहत इस लेन में सडकों का सुधार एवं सुदृढ्रीकरण, सीसी पेवमेंट का निर्माण, पेव्ड शॉल्डर्स का निर्माण, आरसीसी बॉक्स टाइप कल्वर्ट निर्माण, रोड जंक्शंस में यूटिलिटी डक्ट बनाने का कार्य किया जायेगा। इसके साथ ही इस क्षेत्र में एलईडी एवं हाई मास्ट लाइट्स भी लगाई जाएंगी जिसके उपरान्त इस औद्योगिक क्षेत्र की आधारभूत सुविधायें भी अन्य औद्योगिक क्षेत्रों के समकक्ष हो सकेंगी। रीको प्रबंध निदेशक शिवांगी स्वर्णकार ने बताया कि रीको का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि औद्योगिक क्षेत्रों में अच्छी इंफ्रास्ट्रक्चर सुविधायें विकसित की जायें जिससे उद्यमी अपनी औद्योगिक इकाइयों का संचालन सुचारू रूप से कर सकें। आकेडा डूंगर औद्योगिक क्षेत्र के समग्र विकास एवं रखरखाव के लिए यह प्रस्तावित विकास कार्य इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इन विकास कार्यों से आकेड़ा डूंगर औद्योगिक क्षेत्र जयपुर के निकट एक विकसित औद्योगिक क्षेत्र के रूप में अपनी पहचान बनाएगा और उद्यिमयों को भी सुविधा मिल सकेंगी जिससे उनकी उत्पादकता बढ़ सकेगी।

विविधताओं को कैसे संभालना है, यह भारत को पूरी दुनिया को सिखाना है : मोहन भागवत

उन्होंने कहा कि ''संघ को प्रत्यक्ष अनुभव किए बिना संघ के बारे में राय मत बनाइए, संघ से जुड़ने के लिए शाखा में आइए, जो अनुकूल लगे वह काम आप कर सकते हैं। संघ पूरे समाज को संगठित करना चाहता है।''

जयपुर (कासं)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहनराव भागवत ने कहा है कि विविधताओं को कैसे संभालना है, यह हमें दुनिया को सिखाना है क्योंकि दुनिया के पास ऐसा तंत्र नहीं है जो भारत के पास है। वे गुरूवार को को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर 100 वर्ष की संघ यात्रा श्रंखला के अंतर्गत कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, जयपुर के पृथ्वीराज चौहान सभागार में उद्यमी संवाद ''नए क्षितिज की ओर..'' कार्यक्रम में राजस्थान प्रदेश के प्रमुख उद्यिमयों को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि संघ को प्रत्यक्ष अनुभव किए बिना संघ के बारे में राय मत बनाइए। संघ से जुड़ने के लिए शाखा में आइए, जो आपको अनुकूल लगे वह काम आप कर सकते हैं। संघ पूरे समाज को ही संगठित करना चाहता है। पूरा समाज संघ बन जाए यानी प्रमाणिकता से निस्वार्थ बुद्धि से सब लोग देश के लिए जिएं।

सरसंघचालक ने कहा कि संघ के 100 वर्ष की यात्रा पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम कोई सेलिब्रेशन नहीं है बल्कि आगे के चरण की दृष्टि से अपने कार्य की वृद्धि का विचार करने के लिए ये कार्यक्रम किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्र को परम वैभव संपन्न और विश्वगुरु बनाना किसी एक व्यक्ति के वश में नहीं है। नेता, नारा, नीति, पार्टी, सरकार, विचार, महापुरुष, अवतार और संघ जैसे संगठन इसमे सहायक हो सकते हैं परन्तु मूल कारण नहीं बन सकते। यह सबका काम है और इसके लिए सबको साथ लेकर चलना है।

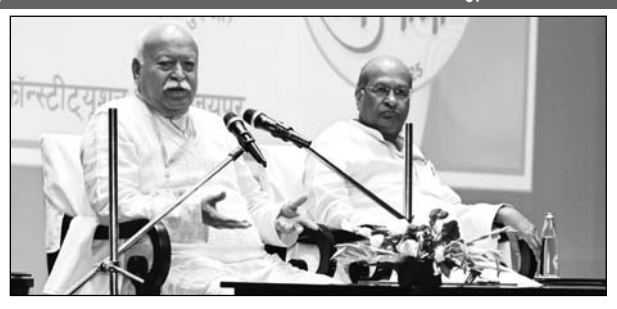

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहनराव भागवत ने गुरूवार को जयपुर स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में उद्यमियों से संवाद किया।

उन्होंने कहा कि संघ की स्थापना किसी एक विषय को लेकर नहीं हुई। संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार क्रांतिकारी थे। वे इंडियन नेशनल कांग्रेस के बहुत सक्रिय कार्यकर्ता थे। उसके आंदोलनों में संघ स्थापना के पहले और एक बार स्थापना के बाद दो बार जेल गए। जो देश हित और समाज हित में चल रहा था उसमें वह सक्रिय रहे। असहयोग आंदोलन में उन पर राजद्रोह का अभियोग लगा। उन्होंने बचाव में पक्ष रखना चुना क्योंकि इससे दोबारा भाषण का मौका मिलता । उनके बचाव भाषण को सुनकर जज को कहना पड़ा कि उनका बचाव भाषण पहले भाषण से भी अधिक राज द्रोही है। डॉ. हेडगेवार ने अनुभव किया कि समाज में डेढ हजार साल से जो दुर्गुण आ रहे थे उन्हें दूर करना जरूरी है। उन्हें महसूस हुआ कि संपूर्ण हिन्दू समाज को संगठित किए बिना भारत इस पुरानी बीमारी से मुक्त नहीं होगा। इसलिए उन्होंने एक दशक तक विचार और प्रयोगों के बाद संघ की स्थापना की।

डॉ. भागवत ने कहा कि संघ किसी को नष्ट करने के लिए नहीं बना है। भारत वर्ष में हमारी पहचान हिन्दू है। हिन्दू शब्द सबको एक करने वाला है। हमारा राष्ट्र संस्कृति के आधार पर एक है न कि राज्य के आधार पर। पुराने समय में जब राज्य अनेक थे तब भी हम एक देश थे, पराधीन थे तब भी एक देश थे। उन्होंने कहा कि समाज की स्वस्थ अवस्था का नाम समाज का संगठन है।

- भागवत ने कहा कि ''सहकार, कृषि और उद्योग हमारे विकास के आधार स्तंभ है।''

उन्होंने कहा कि सहकार, कृषि और उद्योग हमारे विकास के आधार स्तंभ हैं। कृषि, व्यापार, उद्योग परस्पर साथ आकर परस्पर निर्भर होकर तीनों एक साथ प्रगति करें। छोटे और मध्यम उद्योग अर्थव्यवस्था को विकेंद्रित करते है।

इन उद्योगों को अपने देश के अंदर सुचारू रूप से चलने का वातावरण देना ये बडे उद्योगों का काम है। छोटे उद्योगों को रोजगार, कौशल, उत्पादन की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाना चाहिए। यह करते समय व्यापार और खुशी इन दोनों का ध्यान रखना चाहिए। खुशी आधारित उद्योगों से देश में वास्तविक समृद्धि मिलेगी।

इससे पूर्व राजस्थान क्षेत्र संघचालक रमेश चंद्र अग्रवाल ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. हेमंत सेठिया ने किया।

आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने किया निर्माणाधीन आवासों का औचक निरीक्षण

कुछ आवासों की घटिया नींव देखकर कमिश्नर नाराज हुईं, इंजीनियर्स को फटकार लगाते हुए जेसीबी से तुडवाई नींव

जयपुर (कासं)। आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने गुरूवार को निर्माणाधीन आवासों का औचक निरीक्षण किया। वे इंजीनियर्स को साथ लेकर मौके पर पहुंची और जेसीबी मशीन बुलाकर मकानों की नींव खुदवाकर जांच की।

ज्ञात रहे कि हाऊसिंग बोर्ड द्वारा जयपुर के महला क्षेत्र में विभिन्न आय वर्गों जैसे कि ईडब्ल्यूएस, एलआईजी एवं एमआईजी के लिए 365 स्वतंत्र आवासों का निर्माण करवाया जा रहा है। यह परियोजना राज्य सरकार की बजट वर्ष 2024-25 की घोषणाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के तहत संचालित की जा रही है। आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने गुरूवार सुबह अचानक परियोजना स्थल का निरीक्षण किया। डॉ. शर्मा ने कुछ निर्माणाधीन आवासों की नींव में गुणवत्ता मापदण्डों के अनुरूप निर्माण ना होने के कारण मौके पर ही जेसीबी बुलवा नींव को ध्वस्त करवाया। उन्होंने निर्माण कार्य की गुणवत्ता और गति पर विशेष बल देते हुए अभियंताओं, अधिकारियों एवं निर्माण एजेंसी को निर्धारित समयसीमा (जून 2026) तक सभी आवासों का निर्माण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। डॉ. शर्मा ने कहा कि मण्डल का उद्देश्य आमजन को गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और योजनाबद्ध आवास उपलब्ध कराना है। उन्होंने निर्माण स्थल पर कार्यरत अभियंताओं को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि प्रत्येक आवास का निर्माण निर्धारित मानकों और तकनीकी विनिर्देशों के अनुरूप ही किया।

- जयपुर के महला क्षेत्र में विभिन्न आय वर्गों के लिए 365 स्वतंत्र आवास बनवा रहा है हाऊसिंग बोर्ड

आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने गुरूवार को महला पहुंचकर निर्माणाधीन स्वतंत्र आवासों का निरीक्षण किया।

प्रदेश में 3 दिवसीय आंगनबाड़ी ओलंपिक शुरू

जयपुर (कासं)। प्रदेश के सभी आंगनबाड़ी केन्द्रों पर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के अंतर्गत बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से गुरुवार को तीन दिवसीय आंगनबाड़ी ओलंपिक खेल-2025 का आगाज़ हुआ।

निदेशक आईसीडीएस वासुदेव मालावत ने बताया कि प्रदेश के 63 हजार आंगनबाड़ी केंद्रों पर लगभग 12 लाख बच्चे पंजीकृत हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों की बाल्यावस्था से ही उनमें स्वस्थ खेलकूद प्रतियोगिता और स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आ सके, इसके लिए 13 नवम्बर से 3 दिवसीय आंगनबाड़ी ओलंपिक खेल-2025 का शुभारम्भ हुआ है। इस वर्ष खेलों की थीम ''खेल-खेल में सीखो'' रखी गई है। जिसमें स्थानीय और पारम्परिक खेलों को भी शामिल किया गया है। निदेशक ने बताया कि आंगनबाड़ी ओलंपिक खेल-2025 में बच्चों के दो समूह बनाकर 3 से 4 और 4 से 6 का समूह बनाकर विभिन्न खेलकूद की गतिविधियां आयोजित की जा रही है।

'भारतीय मूल्य व आधुनिक विज्ञान का संतुलन ही सच्ची शिक्षा का स्वरूप'

■ दीक्षांत केवल प्रमाण पत्र नहीं, बल्कि गुरु के आशीर्वाद और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का प्रतीक है : प्रो. सारंगदेवोत

एनसीटीई के अध्यक्ष प्रो. पंकज अरोड़ा को डीलिट की उपाधि से नवाजा।

उदयपुर (कासं)। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय का 21वां दीक्षांत समारोह गुरूवार को प्रतापनगर स्थित महाराणा प्रताप खेल मेदान पर आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ मुख्यएनसीटीई नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. पंकज अरोड़ा, कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत, विशिष्ठ अतिथि भक्त कवि नरसिंह मेहता विवि जुनागढ़ गुजरात के कुलपति प्रो. प्रतापसिंह चौहान, राज्यपाल सलाहकार (उच्च शिक्षा) प्रो. कैलाश सोडाणी, समारोह अध्यक्ष, कुल प्रमुख एवं कुलाधिपति भंवर लाल गुर्जर, रजिस्ट्रार डॉ. तरूण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन ने पांच पंडितों के वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ मॉ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्जवलित कर किया।

छह हजार विद्यार्थियों की मौजूदगी में एनसीटीई के अध्यक्ष प्रो. पंकज अरोड़ा को डीलिट की उपाधि से नवाजा गया। समारोह में अतिथियों ने 120 पीएचडी धारको को उपाधियॉ तथा वर्ष 2024-25 में स्नातक तथा स्नातकोत्तर परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले 48 विद्यार्थियों को उपाधि एवं स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। 80 पीएचडी उपाधियॉ एवं 34 गोल्ड मेडल बेटियों के नाम रहे। प्रो. पंकज अरोड़ा ने विद्यार्थियों और युवाओं का आ ान करते हुए कहा कहा कि भारत को अब नौकरी खोजने वालों की नहीं, बल्कि अवसर सृजन करने वाले युवाओं की आवश्यकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से तीन संकल्प अपनाने का आ ान किया - चरित्र, जो ज्ञान से श्रेष्ठ है - नवाचार, जो भय से मुक्त होकर नए विचारों को जन्म देता है और समाज सेवा, जो हर कार्य को जनहित से जोड़ती है। उन्होंने कहा कि सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को सक्षम होने के साथ-साथ संवेदनशील बनाए। जब तकनीक में मानवीय संवेदना जुड़ती है तभी वह कल्याणकारी बनती है, उन्होंने कहा। युवाओं से टेक्नोलॉजी ऑफ भारत की भावना से कार्य करने का आ ान किया, ताकि गाँवों और वंचित समुदायों तक ज्ञान और तकनीक की रोशनी पहुँच सके।

उन्होंने युवाओं से कहा कि वे असफलताओं को खुले मन से स्वीकार करें, चुनौतियों से भागें नहीं, बल्कि समाधान की दिशा में आग बढ़। सोशल मीडिया के प्रभाव और मानसिक तनाव के बढ़ते दायरे पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने विवेकपूर्ण चिंतन, मूल्य आधारित शिक्षा और भारतीय संस्कारों से जुड़ाव को मानसिक स्वास्थ्य तथा समाज के सकारात्मक निर्माण का आधार बताया। प्रो. अरोड़ा ने कहा कि विद्यार्थियों से स्वामी विवेकानंद के आदर्शों के अनुरूप अपने जीवन को श्रेष्ठता की ओर ले जाने का आ ान किया और तकनीकी प्रगति के इस युग में भारतीय मूल्य और आधुनिक विज्ञान का संतुलन ही सच्ची शिक्षा का स्वरूप है।शिक्षा राष्ट्र प्रगति की नींव है। प्रो. अरोड़ा ने विद्यापीठ को रेखांकित करते हुए कहा संस्था द्वारा शिक्षा संबंधी कार्य नई शिक्षा नीति 2020 की भावनाओं से पूर्णतः मेल खाता है। नई नीति में समग्र, लचीली और बहुविषयक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवनोन्मुख बनाने, आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने और भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन देने की जो परिकल्पना है, वही विद्यापीठ की मूल भावना है।यह तैयार किए जा रहे शिक्षक शैक्षणिक योग्यता के साथ संस्कृति मूल्यों के साथ सामाजिक रूप से भी संवेदनशील है।ये शिक्षक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने दीक्षांत समारोह में नवदीक्षित स्नातकों को संबोधित करते हुए कहा कि यह भारतीय शिक्षा परंपरा का वह विशेष क्षण है जब ज्ञान संस्कार में बदलता है। उन्होंने बताया कि दीक्षांत केवल प्रमाण पत्र नहीं, बल्कि गुरु के आशीर्वाद और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का प्रतीक है। यह समारोह विद्यार्थियों को शिष्य से नागरिक और साधक से कर्मयोगी बनने का मार्ग दिखाता है, और शिक्षा का उद्देश्य केवल शिक्षा अर्जन नहीं, बल्कि अर्पण होना चाहिए। कुलपति ने नवदीक्षितों को बताया कि शिक्षा केवल कौशल हासिल करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह चरित्र निर्माण, समाज सेवा और मानवता में सक्रिय योगदान का अवसर है। उन्होंने स्नातकों से कहा कि उन्हें सत्य, सेवा और संयम के स्तंभों पर आधारित जीवन जीना चाहिए, अपने निर्णय स्वयं लेने चाहिए और संकल्प के बल पर ज्ञान के माध्यम से विश्व को श्रेष्ठ बनाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने अपने उद्बोधन में संस्था की वार्षिक प्रतिवेदन के माध्यम विद्यापीठ की उपलब्धि और प्रगति को साझा करते हुए इसका श्रेय विद्यार्थियों कार्यकर्ताओं को समर्पित किया। कुल प्रमुख एवं कुलाधिपति भंवर लाल गुर्जर ने शिक्षा के स्तर, देश की आत्मशक्ति, कर्तव्यबोध, जमीनी जुड़ाव और उत्तरदाई नागरिक निर्माण पर विचार रखे। विशिष्ठ अतिथि कुलपति प्रो. प्रतापसिंह चौहान ने नव दीक्षितों के लिए कौशल वैश्विक बाजार की आवश्यकता और श्रम युक्त होकर भाभी जीवन में आगे बढ़ाने के विषय पर विचार साझा किए प्रो. कैलाश सोडाणी ने उच्च शिक्षा, साइबर जागरूकता,स्वदेशी विषय पर विचार व्यक्त किए।

समारोह की शुरुआत अकादमी काउंसिल का प्रोसेशन एवं एनसीसी कैडेट्स के गार्ड ऑफ ओनर हुई। इस अवसर पर विद्या प्रचारिणी सभा भूपाल नोबल्स संस्थान के मंत्री प्रो. महेन्द्र सिंह आगरिया, प्रबंध निदेशक डॉ. मोहब्बत सिंह रूपाखेडी, वित्त मंत्री शक्ति सिंह कारोही, संयुक्त सचिव राजेन्द्र सिंह, सदस्य नवल सिंह जुड, प्रो. रेणु राठौड, डॉ. युवराज सिंह राठौड, पीठ स्थविर डॉ. कौशल नागदा, प्रो. रितु तोमर, डॉ. अपर्णा शर्मा, प्रो. पीएस रावलोत, विक्रम सिंह देवडा, डॉ. रश्मि बोहरा, लक्ष्मण सिंह कर्णावट सहित विद्यापीठ के डीन, डायरेक्टर एवं शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

यूनिटी मार्च का आयोजन

डूंगरपुर, (निसं)। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय तथा राजस्थान युवा बोर्ड, जयपुर के निर्देशानुसार माय भारत डूंगरपुर द्वारा सागवाडा में सरदार/15० यूनिटी मार्च एक भारत, आत्मनिर्भर भारत का भव्य आयोजन किया गया।

यह आयोजन नगर पालिका, सागवाडा से प्रारंभ होकर एकलव्य भील समाज खेल मैदान तक संपन्न हुआ। 5 किलोमीटर लंबी इस पदयात्रा में क्षेत्र के युवाओं, सामाजिक संगठनों, एनजीओ एवं विभिन्न संस्थान के 55० से अधिक प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक शंकरलाल डेचा ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहां कि सरदार वल्लभभाई पटेल की दृढ इच्छाशक्ति और राष्ट्र के प्रति समर्पण हर युवा के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत का निर्माण तभी संभव है,जब युवा अपनी क्षमता पर विश्वास कर आगे बढें। विशिष्ट अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष अशोक पटेल ने कहां कि सरदार पटेल का जीवन एकता, संगठन और समर्पण का प्रतीक है। उन्होंने युवाओं से सामाजिक सौहार्द और विकास में सहभागिता का आ ान किया। पूर्व जिलाध्यक्ष हरीश पाटीदार ने अपने संबोधन में युवाओं की भूमिका पर जोर देते हुए कहां कि जब युवा राष्ट्रहित में एकजुट होते हैं,तो हर चुनौती अवसर में बदल जाती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व सांसद कनकमल कटारा ने की। उन्होंने सरदार पटेल के जीवन और योगदान पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को एक भारत आत्मनिर्भर भारत की शपथ दिलाई। इस अवसर पर पूर्व विधायक अनीता कटारा, जिला प्रमुख सुर्या अहारी, एसडीएम सुबोध सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष आशीष गांधी,एसटी मोर्चा अध्यक्ष शांतिलाल डामोर,सीआई मदन खटीक एवं कार्यक्रम संयोजक श्राजेश पाटीदार सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित रहे। यात्रा के दौरान स्थानीय नागरिकों ने फूलों से पदयात्रा का स्वागत कर देशभक्ति और एकता के रंग में वातावरण को सरोबार कर दिया।

सार-समाचार

महिला सहित दो गिरफ्तार

राजसमंद/ कुंवारिया, (निसं)। राजसमंद थाना पुलिस ने मादक पदार्थ की तस्करी के वान्टेड अपराधियों को शरण देने व वांछित आरोपियों को भगाने में सहयोग करने पर थाना पुलिस की विशेष टीम ने एक महिला तथा एनडीपीएस एक्ट में वान्टेड अपराधी को गिरफ्तार किया गया।पुलिस ने बताया कि प्रदेश मे हार्डकोर अपराधी, हिस्ट्रीशीटर, गैग्स के सक्रिय सदस्यों एवं प्रकरणों के वाछिंत अपराधियो की धरपकड व सघन चैकिंग के लिए पुलिस मुख्यालय जयपुर द्वारा चलाये जा रहे विशेष अभियान ऑपरेशन सुदर्शन चक्र के तहत जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता के आदेशानुसार तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महेन्द्र कुमार पारीक व पुलिस उप अधीक्षक वृत राजसमन्द विवेक सिंह राव के निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के तहत कुंवारिया थानाधिकारी उदयलाल बरगट के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन करके अवैध अफीम व एमडी मैफेड्रोन तस्करी करने के आरोप में करीब एक माह से फ रार चल रहे वांछित उदयपुर जिले के फतेहनगर थाने के हिस्ट्रीशीटर जेवाणा निवासी देवी लाल उर्फ देवा गाडरी व उसके साथी अभियुक्त निवासी जैवाणा थाना फतहनगर जिला उदयपुर हाल म.न. 2ई, सेंगवा हाउसिंग बोर्ड चित्तौडगढ थाना सदर चित्तौडगढ कौशल हाडा पिता योगेश हाडा की गिरफ्तारी के संबन्ध में विशेष दिशा निर्देश मिलने के बाद पुलिस की टीम के द्वारा दोनो आरोपियों की सरगर्मी से तलाश की जारही थी।

उपचार के दौरान महिला की मौत

उदयपुर, (कासं)। टेम्पों की टक्कर से घायल स्कूटी सवार महिला की उपचार के दौरान मौत हो गई। इससे पूर्व तीन दिन पूर्व उसकी दुधमुंही पुत्री को मौत हो चुकी है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गोवर्धन विलास थाना क्षेत्र भानु कुमार शास्त्रीएनक्लेवआर5निवासी हर्षिता श्रीमाली (38) पत्नी प्रकाश श्रीमाली की हादसे में घायल होने से मौत हो गई। रविवार को हर्षिता अपनी दुधमुही पुत्री मानवीक (3)स्कूटी पर लेकर दवा लेने के लिए मेडिकल स्टोर की तरफ जा रही थी। जहां बीच रास्ते में टेंपों वाहन ने स्कूटी को चपेट में ले लिया था।जिससे दोनों को घायल अवस्था में चिकित्सालय पहुंचाया। जहां मानवीक की पूर्व में मृत्यु हो गई थी जबकि हर्षिता उपचाररत थी। एएसआई धर्मवीरसिंह ने मृतका का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंपा।

हादसे में बाइक सवार युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)।उदयपुर अहमदाबाद हाइवे टीडी सर्विस लाईन पर ट्रेलर ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में युवक की मौत हो गई तथा उसका भाई घायल हो गया। पुलिस से प्राप्त जानकरी के अनुसार बुधवार रात को टीडी थानाक्षैत्र सर्विस रोड़ पर ट्रेलर ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में राहुल (18) पुत्र लक्ष्मण निवासी पडूणा की मौत हो गई तथा उसका भाई संदीप (21)घायल हो गया। जिसे जिसे उपचार के लिए चिकित्सालय में भर्ती करवाया। दोनों बाइक र शहर से उदयपुर लौट रहे थे। जहां पडूणा सर्विस लाईन पर लघुशंका करने रूके थे।इस दौरान हादसा हो गया। इस पर एएसआई नारायण ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

सड़क सुरक्षा का दिया संदेश

उदयपुर, (कासं)। जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर यातायात नियमों के प्रतित आमजन में जागरूकता ढबाने एवं पुलिस कर्मियों के सुरक्षा को मद्दे नजर रखते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेशओझा,गोपाल स्वरूप मेवाड़ा, अंजना सुखवाल एवं सभी पुलिस उप अधीक्षकों व थानाधिकारियों द्वारा अभियान के दौरान गुरूवार को शहरी एवं ठाामीण क्षैत्रों के 42 पुलिस थानों के पुलिसकर्मियों को 736 हेलमेट वितरण किए गए। इस दौरान सभी थानाधिकारी, सीएलजी सदस्य व पुलिस मित्र उपस्थित थे। इस दौरान सडक सुरक्षा व यातायात नियमों के प्रति जागरूकता के संबंध में दिशा निर्देश प्रदान किए तथा आमजन से भी दुपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने, गति सीमा का पालन कर सहयोग की अपील की है।

सड़क हादसे में युवक की मौत

उदयपुर, (कासं)। शहर के प्रतापनगर थाना क्षेत्र में हुए सडक हादसे में बाइक चालक की मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार बुधवार रात में प्रतापनगर थाना क्षेत्र अनियंत्रित ट्रक से बाइक टकरा गई। हादसे में चालक घरहरा भगुआ केमुर बिहार हॉल मेडता डबोक निवासी रवि (28) उज्ज्वल पुत्र विद्यासागर सिंह की मौत हो गई। रवि मादड़ी इंडस्ट्रीज एरिया में स्थित फैक्ट्री में नौकरी करता था। बुधवार रात में बाइक पर शहर से गांव लौट रहा था। जहां बीच रास्ते में आगे चल रहे ट्रक के चालक ने अचानक गाड़ी मोड़ दी जिससे बाइक जा टकराई। हदसे में गंभीर घायल होने पर उसे उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय पहुंचाया। जहां उसकी मौत हो गई। इस पर एएसआई भगवत सिंह ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंपा।

फाइनेंसकर्मी से नकदी लूटी

उदयपुर, (कासं)। खेरवाड़ा थाना क्षैत्र में बाइक सवार बदमाश फाइनेंसकर्मी नकदी व सामान लूट ले गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीडित देवचन्द्र पुत्र सोमारावल खोखरीया निवासी कलींजरा बांसवाड़ा ने पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें उसने बताया कि मैं एयू फाईनेन्स में काम करता हूं। 6 नवंबर को मैं बलिया, पाटिया, कनबई, आमदरा होते हुए मैथली मोड़ पर पहुंचा। जहां बाइक पर आए दो बदमाशों नें मुझे रोका तथा झपट्टा मार कर बैग से 31 हजार 240 रूपये नकदी, लेपटॉप व रसीबद बूके लूट ले गए। इस मामले में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

फर्जी कॉल सेंटर चलाने वाले तीन ठग गिरफ्तार

■ लोन दिलाने का झांसा देकर अकाउंट खाली करते थे

उदयपुर, (का.सं.)। सलूंबर जिले में साइबर सेल और डीएसटी टीम ने बडी कार्रवाई करते हुए तीन ठगों को गिरफ्तार किया है। ये लोग अमेरिकी नागरिकों को सस्ता लोन देने के नाम पर ठगी कर रहे थे।

गिरफ्तार आरोपियों में मिजोरम के आईजोल निवासी लालरामलूना पिता लालहरुहीया, एच.जोहनमगहिया पिता जोहमिनगलिना और जयपुर निवासी अक्षय शर्मा शामिल हैं। पुलिस ने इनके पास से तीन लैपटॉप, तीन ब्लूटूथ हेडफोन, चार मोबाइल फोन और एक नेट राउटर बरामद किया है। ये ठग सलूंबर के देवगांव में होटल भाग्यश्री के कमरा नंबर 107 से फर्जी कॉल सेंटर चला रहे थे। दिल्ली में हुए ब्लास्ट की जांच के दौरान पुलिस को संदेह हुआ और होटल में छापा मारा गया। कमरे का दरवाजा खुलवाते ही तीन युवक लैपटॉप पर विदेशों में कॉल करते मिले। पूछताछ में ये संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए।ये लोग इंटरनेट कॉल वीओआईपी से अमेरिकी लोगों से संपर्क करते थे।सस्ता लोन देने का लालच देकर उनके बैंक खाते की पूरी डिटेल और पासवर्ड लेते थे फिर खाते से डॉलर निकालकर अपनी आईडी में ट्रांसफर करते थे। डॉलर को रुपए में कन्वर्ट कर निकाल लेते थे। पुलिस अब इनके नेटवर्कए अन्य साथियों और ठगी की राशि की जांच कर रही है।

पुलिस के अनुसार आरोपियों ने फर्जी नाम से आईडी बना रखी थी और केशनेट कर्मचारी बन कॉल करते थे। आरोपी राम का कोड नेम जेक था। वहीं, एच जोहनमगहिया का कोड नेम डेविड और अक्षय का केविन था। ये लोगों को लॉन देने के लिए केशनेट कर्मचारी बनकर कॉल करते। फिर लोन के बहाने सिक्योरिटी के लास्ट चार डिजिट मांगकर उनके मंथली इनकम डाटा शीट प्राप्त करते। फिर यूजर नेम और पासवर्ड लेकर उनके खाते से पैसे निकाल लेते थे।

दिल्ली आतंकी हमले के पीड़ितों को दी श्रद्धांजलि

राजसमंद, (निसं)। विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी बुधवार को वाहन दुर्घटना में घायल होने के पश्चात ढाई माह के अंतराल के बाद बुधवार को पहली बार राजसमंद पहुंचीं। उन्होंने प्रभु श्री द्वारकाधीश के दर्शन कर क्षेत्र एवं प्रदेश की सुख-समृद्धि की कामना की। मंदिर के मुखिया एवं प्रबंधन ने उनका आत्मीय स्वागत करते हुए उन्हें प्रभु का प्रसाद प्रदान किया।

विधायक जन संवाद केंद्र पर माही कोचिंग क्लासेस के विद्यार्थियों ने हस्तलिखित शुभकामना पत्र भेंट किए। विद्यार्थियों के आत्मीय संदेशों और स्नेह से विधायक माहेश्वरी भावुक हो उठीं। स्थानीय नागरिकों ने भी जन संवाद केंद्र पर पहुंचकर उनके स्वास्थ्य लाभ पर हर्ष व्यक्त किया और उनका हार्दिक स्वागत किया।इस अवसर पर विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने कार्यकर्ताओं एवं नगरवासियों से वार्ता करते हुए दिल्ली में हुई आतंकवादी घटना के मृतकों को श्रद्धांजलि दी तथा घायल व्यक्तियों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की।

अनैतिक कार्य की सूचना पर होटल में पुलिस ने छापा मारा

डूंगरपुर, (निसं)। स्पेशल पुलिस टीम ने धम्बोला थाना क्षेत्र के पीठ कस्बे में भाजपा सलारेश्वर मंडल उपाध्यक्ष की एक होटल पर छापेमारी की। होटल में वैश्यावृत्ति में लिप्त होने के आरोप में एक युवती और दो युवकों को पकड़ा गया है। पुलिस ने पीटा एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने वैश्यावृति में लिप्त युवती व दो युवकों को गिरफ्तार किया।

धम्बोला थाना क्षेत्र के पीठ कस्बे में स्थित होटल में अवैध गतिविधियों की शिकायतें लगातार मिल रही थी। इन शिकायतों पर जिला पुलिस अधीक्षक की ओर से गठित स्पेशल टीम ने बुधवार रात कार्यवाही की। टीम के होटल पहुंचते ही हड़कंप मच गया। काउंटर पर एक युवक बैठा मिला, जबकि एक कमरे में एक युवक और युवती मौजूद थे। होटल पर ठहरने से संबंधित कोई वैध दस्तावेज नहीं मिले। स्पेशल टीम ने मौके से युवती और दोनों युवकों को डिटेन कर धम्बोला थाना पुलिस को सुपुर्द किया। बाद में पुलिस ने तीनों को पीटा एक्ट के तहत गिरफ्तार कर लिया। फिलहाल पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है और यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि होटल में इस तरह की गतिविधियां कब से चल रही थी और इसमें अन्य कौन लोग शामिल हैं। बताया जा रहा है कि संबंधित होटल भाजपा सलारेश्वर मंडल उपाध्यक्ष महिपालसिंह की है। होटल पर छापेमारी के बाद भाजपा सलारेश्वर मंडल उपाध्यक्ष महिपालसिंह ने बताया कि होटल उन्होंने अप्रैल महीने से किराए पर दिया हुआ है। किरायेदार ही होटल का संचालन कर रहे हैं। अगर होटल में गलत काम किया जा रहा है, तो वे उसे खाली करवाएंगे और पुलिस अपनी कार्यवाही करे।

आवेदन 17 से

उदयपुर, (कासं)। अल्पसंख्यक समुदाय हितार्थ अल्पसंख्यक समुदायों (मुस्लिम, जैन, सिख, बौद्ध, ईसाई व पारसी) के छात्रों हेतु अम्बेडकर डीबीटी वाउचर योजनान्तर्गत आवेदन 17 नवम्बर से प्रारंभ होंगे। जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी खुशबू शर्मा ने बताया कि आवेदन की अंतिम तिथि 3० दिसम्बर निर्धारित की गई है।

ट्रैक्टर पलटने से किसान की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। सागवाड़ा थाना क्षेत्र के नंदौड गांव में खेतों में जुताई के दौरान ट्रैक्टर पलटने से किसान की दबने मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद ट्रैक्टर ड्राइवर किसी को बताए बिना घर जाकर सो गया। सुबह जब किसान की बेटी पिता को खोजते हुए खेत पहुंची, तो हादसे का खुलासा हुआ। पुलिस के अनुसार मनजी सिंघाडा पुत्र रुपए सिंघाडा, मूल निवासी जोहनिया माफी थाना गढी बांसवाड़ा था। वह पिछले एक वर्ष से नंदौड गांव में अपने परिवार के साथ रहकर खेती-बाड़ी करता था।

मृतक के भाई वीरजी सिंघाडा ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि बुधवार रात मनजी खेतों में ट्रैक्टर से जुताई का कार्य करवा रहा था। गांव का ही मगन पुत्र धारजी बामनिया ट्रैक्टर चला रहा था। इस दौरान रिवर्स लेते समय ट्रैक्टर अचानक बेकाबू होकर गड्ढे में पलट गया। मनजी ट्रैक्टर के नीचे दब गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद घबराए ड्राइवर मगन ने किसी को कुछ नहीं बताया और चुपचाप घर जाकर सो गया। देर रात जब मनजी घर नहीं लौटा तो उसकी बेटी पिंकी उसे खोजते हुए खेतों की ओर पहुंची, जहां उसने यह मंजर देखा।सूचना मिलते ही परिजन बांसवाड़ा से नंदौड गांव पहुंचे। शव को सागवाडा अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया।

कार्यक्रम आज से

उदयपुर। अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्श 2025 के तहत 72वें अखिल भारतीय सहकारिता सप्ताह का आयोजन शुक्रवार से किया जायेगा। उदयपुर सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक की प्रबन्ध निदेशक ने बताया कि राज.सहकारी बैंक, जयपुर तथा केन्द्रीय सहकारी बैंक उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राज्य स्तरीय उद्घाटन कार्यक्रम शुक्रवार को प्रातः 11 बजे गॉधी ग्राउण्ड में आयोजित होगा।

'ब्रश द फॉल्क' प्रतियोगिता आयोजित

■ प्रतियोगिता में कला कौशल के माध्यम से विभिन्न राज्य और सांस्कृतिक धरोहरों को जीवित किया

उदयपुर, (कासं)। पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम स्पंदन - 2025 में भारत के विभिन्न प्रान्तों की समृद्ध कला और संस्कृति को प्रदर्शित करने के लिए 'ब्रश द फॉल्क' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विधार्थीयों ने विभिन्न प्रान्तों की पारंपरिक कला और लोक कला को चित्रित किया। 31 अक्टूबर से 12 नबम्बर तक आयोजित इस प्रतियोगिता पीएमयू के संगठक कॉलेजो के 160 से ज्यादा विद्यार्थियों ने भाग लिया।

'ब्रश द फॉल्क' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

'ब्रश द फॉल्क' प्रतियोगिता की समन्वयक डॉ.राहीला घोड़च ने बताया कि प्रतियोगिता का उद्देश्य भारतीय कला की विविधता को मंच पर लाना था। प्रतियोगिता में विधार्थीयों ने अपने कला कौशल के माध्यम से विभिन्न राज्य और सांस्कृतिक धरोहरों को जीवित किया। जिसमें प्रमुख रूप से राजस्थान, पंजाब, महाराष्ट्र, और दक्षिण भारत की कला शैलियों को प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फेविक्रिल कम्पनी के उत्तर भारत के एएमएमडी राकेश अग्रवाल एवं फेविक्रिल के राजस्थान सीएमडीआई गोपाल माथुर ने विधार्थीयों की कला की सराहना की और कहा कि इस तरह के कार्यक्रम छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जडों से जोडते हैं और उन्हें अपनी कला का सम्मान करने का अवसर प्रदान करते हैं। संस्थान के चेयरपर्सन राहुल अग्रवाल ने सभी 160 प्रतिभागियो की बनाई कलाकृतियों की तारीफ करते हुए कहा कि मेडिकल फील्ड में तनाव हर समय बना रहता है ऐसे में एच आर विभाग की डॉ.राहीला घोडच विधार्थीयों एवं कर्मचारियों को कला के माध्यम से उनके तनाव को कम कर रही है। जो तारीफ के काबिल है। इस दौरान 160 प्रतिभागियो की बनाई कलाकृतियो की प्रदर्शनी भी लगाई गई। कार्यक्रम के अंत में पेसिफिक मेडिकल विवि के डॉ. यू. एस. परिहार, डॉ.एम.एम.मंगल एवं स्पंदन के समन्वयक नीरज चपलोत ने फाईनल के तीन विजेताओं की घोषणा करी जिसमें पीएमसीएच अश्विन पाटीदार प्रथम, पीडीसीआरसी की देवयानी पाटीदार द्वितीय एवं पीएमसीएच की मिष्ठी गौतम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेताओ को 15 नबम्बर स्पंदन के मुख्य कार्यक्रम में पुरूस्कृत किया जाएगा।

भाजपा महिला सम्मेलन 16 को, तैयारियां जोरों पर

उदयपुर, (का.सं.)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत महिला मोर्चा शहर जिला उदयपुर द्वारा 16 नवंबर को पटेल सर्कल स्थित पार्टी कार्यालय पर एक विशाल महिला सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आत्मनिर्भर भारत अभियान के बारे में उपस्थित महिलाओं को अवगत कराया जाएगा एवं देश में बनी वस्तुओं को खरीदने और बेचने के लिए संकल्पित किया जाएगा।

इस महिला सम्मेलन को सफलतापूर्वक संपन्न करने हेतु गुरुवार को भाजपा महिला मोर्चा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी मंडल की एक अहम बैठक सूरजपोल स्थित स्थल मंदिर के प्रांगण में महिला मोर्चा की पूर्व जिला महामंत्री एवं मंडल प्रभारी डॉ. किरण जैन के मुख्य समिति में संपन्न हुई।बैठक में उपस्थित महिलाओं को संबोधित करते हुए शहर जिला की पूर्व महामंत्री एवं भाजपा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी मंडल की प्रभारी डॉ. किरण जैन ने कहा कि खरीदें वहीं जो देश में बना हो, बेचें वही जो देश में बना हो।उन्होंने उपस्थित महिलाओं का आव्हान किया कि आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान के तहत घर.घर जाकर संपर्क कर प्रत्येक महिला पुरुष से स्वदेशी वस्तुओं के खरीदने और स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करने के लिए प्रेरित करे।

उन्होंने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है और 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेगा। हर घर स्वदेशीए घर- घर स्वदेशी: यही हमारा मंत्र,हमारा लक्ष्य, और हमारी शक्ति है। हम सब मिलकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपनों को साकार करें और खुद भी संकल्प लें और अपने आस पडोस और रिश्तेदारों परिजनों मित्रों को भी इस बारे में अवगत कराकर इस अभियान को सशक्त बनाने में कदम बढाए। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता अर्चना शर्मा एवं चंदा ओदीच्य ने भी उपस्थित महिलाओं को इस महिला सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आ ान किया और कहा कि हम अपने मोहल्लों से और अपने आस पडोस रिश्तेदारों से संपर्क कर अपनी विचारधारा को मानने वाली मातृशक्ति को इस सम्मेलन में किस प्रकार जोडा जाए इसकी रचना बनाकर संपर्क का कार्य प्रारंभ करें। इस अवसर पर महिला सम्मेलन के पोस्टर का विमोचन किया।

कार्यालय नगरपालिका नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द (राज.)

Email: np_ntd@yahoo.in Phone:- 02953-233526

क्रमांक /न.पा.नाथ./नामा./2025/14191 दिनांक : 10.11.2025

- : आपत्ती सूचना :-

एतर्थ द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा जरिये क्रय शुदा/पट्टा शुदा के आधार पर भूखण्डों का नामान्तरण/नाम हस्तान्तरण का स्वयं के नाम पर निम्नांकित वर्णित सम्पत्ति पर नामान्तरण/नाम हस्तान्तरण कराने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त आवेदन के संबंध में किसी भी हितधारी को कोई आपत्ती हो तो 7 दिवस (कार्य दिवस) में नगरपालिका कार्यालय में लिखित रूप से प्रस्तुत कर दें अन्यथा प्रकरण में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने एवं दस्तावेज पूर्ण पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही पूर्ण करते हुए उक्त प्रकरणों में आगामी कार्यवाही सम्पादित कर दी जायेगी :-

क्र. सं.	आवेदक का नाम व पता	आवेदित सम्पत्ति का पता	पड़ौस का विवरण			
			पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
1.	श्री शाह प्रकाश परमानंद पिता श्री परमानंद शाह निवासी-मुम्बई महाराष्ट्रा	भूखण्ड क्षैत्रफल-875 वर्गफिट, समाधानी गली, नाथद्वारा	स्वयं का मकान	मन्दिर-मण्डल की जमीन	गली बाद में मकान प्रकाश भट्टा	गली 2 फिट उस्ताखाना मन्दिर-मण्डल

आयुक्त, नगरपालिका नाथद्वारा

कार्यालय नगरपालिका नाथद्वारा, जिला-राजसमन्द (राज.)

क्रमांक /न.पा.ना./69 क/2025/14296 दिनांक : 12.11.25

- : आपत्ती सूचना :-

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा जरिये क्रय शुदा/पट्टा शुदा के आधार पर प्राप्त भूखण्ड/भवन का स्वयं के नाम पर निम्नांकित वर्णित सम्पति पर 69 ए का फ्री होल्ड पट्टे का आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त आवेदन के संबंध में किसी भी हितधारी को कोई आपत्ती हो तो सात दिवस (कार्य दिवस) में नगरपालिका कार्यालय में लिखित रूप से प्रस्तुत कर दें अन्यथा प्रकरण में कोई आपत्ती प्राप्त नहीं होने एवं दस्तावेज पूर्ण पाये जाने पर नियमानुसार कार्यवाही पूर्ण करते हुए उक्त प्रकरणों में आगामी कार्यवाही सम्पादित कर दी जायेगी।

क्र. सं.	आवेदक का नाम	आवेदित सम्पत्ति का पता एवं माप	पड़ौस			
			पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
1.	श्री रमेश चन्द्र जोशी/ द्वारकादास जोशी	ब्रहमपुरी, नाथूवास, नाथद्वारा, भूखण्ड क्षैत्रफल 737.87 वर्गफीट	पंचायत भवन	सोहनलाल कुमावत का मकान व हरिशंकर जी का भूखण्ड	आम रास्ता	फतहलाल जी का मकान

आयुक्त, नगरपालिका नाथद्वारा

ये खेल अधिक प्रतिस्पर्धी होते जा रहे हैं और उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि बधिरों को खेलों को एक स्वस्थ जीवनशैली के रूप में अपनाना चाहिए। - दीक्षा डागर

पेशेवर गोल्फर, डेफ ओलंपिक को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — शार्दुल ठाकुर

लखनऊ सुपर जायंट्स के ऑलराउंडर शार्दुल ठाकुर, दोनों फ्रैंचाइजी के बीच हुए व्यापार के बाद, मुंबई इंडियंस का प्रतिनिधित्व करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। मुंबई के इस ऑलराउंडर को लखनऊ सुपर जायंट्स ने लीग के 18वें संस्करण के लिए चोटिल खिलाड़ी के रूप में 2 करोड़ रुपये में चुना था, जहां उन्होंने 10 मैच खेले थे। शार्दुल जिन भी फ्रैंचाइजी का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं, उनके लिए एक उपयोगी खिलाड़ी रहे हैं और उन्होंने कई बार शानदार प्रदर्शन किया है। इस ऑलराउंडर को उनकी मौजूदा खिलाड़ी फीस 2 करोड़ रुपये पर मुंबई इंडियंस में व्यापार किया गया है।

क्या आप जानते हैं ?... भारत ने 2007 में उद्घाटन 20 विश्व कप और 2024 में भी यह खिताब जीता।

हमारे पास बेहतरीन ऑलराउंडर है : गिल

कोलकाता, 13 नवंबर। भारतीय टेस्ट कप्तान शुभमन गिल ने कहा है कि वह इतने भाग्यशाली हैं कि उनके पास इतने अच्छे आलराउंडर हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता टेस्ट की पूर्व संध्या पर गिल ने कहा,मैं खुद को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि सभी ऑलराउंडर इतने अच्छे बल्लेबाज हैं। आप किसी का भी रिकॉर्ड देख सकते हैं, अक्षर पटेल का, वाशिंगटन सुंदर का या जड्डू भाई का। उनकी गेंदबाजी और बल्लेबाजी का रिकॉर्ड बहुत अच्छा है, खासकर भारत में, इसलिए एक कप्तान के तौर पर यह तय करना बहुत मुश्किल होता है कि आप किसे खिलाना चाहते हैं और किसे नहीं।'' ये ऑलराउंडर उन्हें स्पिनरों के तौर पर भी बेहतर बनाते हैं। उन्होंने कहा, ''निश्चित रूप से ऐसे विकेट पर जहाँ गेंद घूम रही हो, गेंद को घूमने के लिए थोड़ा समय चाहिए होता है। इसलिए आम तौर पर ऑफ-द-विकेट, जब तक कि आप लाल मिट्टी वाले विकेट पर नहीं खेल रहे हों, गति थोड़ी धीमी होती है। इसलिए अगर आपके गेंदबाज तेज गति से गेंदबाजी कर रहे हैं, तो इससे बल्लेबाजों को तालमेल बिठाने का थोड़ा कम समय मिलता है।

गिल इंग्लैंड से काफ़ी प्रतिष्ठा के साथ लौटे हैं। वह वहां सीरीज में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बनने की चाहत लेकर गए थे और 754 रन बनाकर अपनी बात पर खरे उतरे। उन्होंने संसाधनों, कार्यभार और कड़े फैसलों को उसी तरह संभाला जैसे कोई भी पहली बार कप्तान बनने वाला खिलाड़ी किसी कठिन विदेशी दौरे पर कर सकता है। फिर अपने पहले घरेलू मैच में एक कर्वबॉल ने उन्हें परेशान कर दिया।

यह आत्म-जागरूकता एक ऐसे कप्तान के लिए ताज़गी देने वाली है जो अपने घरेलू मैदान पर खुद को ऐसी ही परिस्थितियों में पाता है। क्रिकेट के ऐसे लंबे दिन होंगे जो कड़ी धूप में खिंचेंगे, जहाँ खुद को संयमित रखने की ज़रूरत उन्हें एक अच्छे और महान कप्तान से अलग करेगी।

मुझे लगता है कि अपनी तैयारियों में, मैं मुख्य रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करता हूँ कि मैं एक बल्लेबाज के रूप में कैसे सफल हो सकता हूँ, और फिर जब हम मैदान पर होते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि जब भी मैं अपनी टीम की कप्तानी कर रहा होता हूँ, मेरी सहज प्रवृत्ति हावी हो जाए। गिल ने कहा, ''तभी मुझे लगता है कि मैं टीम के लिए रणनीतिक रूप से सबसे अच्छे फैसले लेता हूँ।'' यह उनकी बल्लेबाजी और कप्तानी को तर्कसंगत बनाने का उनका तरीका है, ताकि दोनों के तार आपस में न उलझें और दोनों प्रक्रियाओं में कोई गड़बड़ी न हो।

अपने कार्यभार के बारे में उन्होंने कहा, ''मैं अभी भी यह समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि इसे कैसे प्रबंधित किया जाए।'' गिल ने ऑस्ट्रेलिया में सभी पांच टी20 मैचों में हिस्सा लिया, जो 8 नवंबर तक चले और फिर टेस्ट टीम की अगुवाई करने के लिए कोलकाता पहुंचे। ''मुझे लगता है कि एशिया कप से ही हम लगातार खेल रहे हैं, विभिन्न देशों की यात्रा कर रहे हैं, 4-5 दिन। इसलिए मैं यह भी जानने की कोशिश कर रहा हूँ कि मुझे उन सभी प्रारूपों में अच्छा प्रदर्शन करने और सफल होने का सबसे अच्छा मौका क्या देता है जिनमें मैं खेलने वाला हूँ।

''जब हम इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में खेलते हैं, तो तेज़ गेंदबाज़ों पर कार्यभार भारत की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक होता है। लेकिन साथ ही, तेज गेंदबाज यहाँ अपने स्पेल को भी पहचानते हैं - अगर गेंद रिवर्स हो रही है, तो वे 4-5 ओवर पूरी गति से फेंकेंगे।'' वहीं, अगर आप इंग्लैंड जैसे देश में खेल रहे हैं जहाँ तेज़ गेंदबाज़ ज़्यादातर ओवर फेंकने वाले हैं, तो काम का बोझ बढ़ जाता है।

पहले टेस्ट के लिए दोनों टीमों की प्लेइंग-11 पर एक नजर

कोलकाता, 13 नवंबर। भारत और दक्षिण अफ्रीका शुक्रवार से यहां ईडन गार्डन्स में होने वाले पहले टेस्ट के लिए तैयार हो गए हैं। दोनों टीमों की संभावित प्लेइंग इलेवन पर एक नजर इस प्रकार है। वेस्टइंडीज के खिलाफ भारत लगभग दस खिलाड़ियों के साथ खेला था। नितीश कुमार रेड्डी को मौके दिए गए क्योंकि भारत एक तेज गेंदबाज़ी ऑलराउंडर तैयार करना चाहता है। हालांकि पूरी सीरीज में उनका योगदान सीमित रहा। अब जब ऋषभ पंत फिट हैं, तो भारत ने ध्रुव जुरेल को बतौर विशेषज्ञ बल्लेबाज टीम में बनाए रखा है और रेड्डी को इंडिया ए टीम में भेजा गया है। बाक़ी टीम में किसी भी बदलाव की संभावना नहीं है। दक्षिण अफ्रीका को वह संयोजन अपनाना चाहिए, जिससे उन्होंने पाकिस्तान के ख़िलाफ रावलपिंडी में पिछला टेस्ट जीता था। उनके प्रमुख गेंदबाज़ों की बल्लेबाज़ी क्षमता उन्हें बिना गेंदबाज़ी कमज़ोर किए टीम में गहराई देती है। मार्को यानसन को वियान मुल्डर पर प्राथमिकता मिलनी चाहिए क्योंकि यहां पारंपरिक सीम गेंदबाज़ी को ज़्यादा मदद नहीं मिलेगी। वहीं वापसी करने वाले कप्तान तेम्बा बावुमा, डेवाल्ड ब्रेविस की जगह लेंगे।

पिच और परिस्थितियां - शुरुआती संकेत बताते हैं कि ईडन गार्डन्स में बल्लेबाज़ी के लिए अच्छी पिच होगी, जो शायद रिवर्स स्विंग को खेल में ला सकती है। पिच पर ज्यादा घास नहीं होगी और ना ही यह बहुत सूखी या फटी होगी। टॉस हारने वाली टीम के लिए चुनौती भरा दिन हो सकता है।

भारत (संभावित) : 1 यशस्वी जायसवाल, 2 केएल राहुल, 3 बी साई सुदर्शन, 4 शुभमन गिल (कप्तान), 5 ऋषभ पंत (विकेटकीपर), 6 ध्रुव जुरेल, 7 रवींद्र जडेजा, 8 वॉशिंगटन सुंदर, 9 कुलदीप यादव, 10 जसप्रीत बुमराह, 11 मोहम्मद सिराज, **साउथ अफ्रीका (संभावित) :** 1 एडन मार्करम, 2 रियान रिकलटन, 3 ट्रिस्टन स्टब्स, 4 टोनी डे ज़ॉर्जी, 5 तेम्बा बावुमा (कप्तान), 6 काइल वेरेन (विकेटकीपर), 7 सेनुरन मुतुसामी, 8 साइमन हार्मर, 9 मार्को यानसन, 10 केशव महाराज, 11 कगिसो रबाडा।

भारत-ए ने दक्षिण अफ्रीका-ए को चार विकेट से हराया

राजकोट, 13 नवंबर। गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के बाद ऋतुराज गायकवाड़ (117) की शतकीय और कप्तान तिलक वर्मा (39) की शानदार पारियों के दम पर भारत ए ने गुरुवार को पहले अनौपचारिक एकदिवसीय मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका ए टीम को तीन गेंदे शेष रहते चार विकेट से हरा दिया। 286 के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारत ए की ऋतुराज गायकवाड़ और अभिषेक शर्मा की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 64 रन जोड़े। 10वें ओवर में ब्योर्न फ़ोर्टेन ने अभिषेक शर्मा को आउटकर दक्षिण अफ्रीका ए को पहली सफलता दिलाई।

अभिषेक शर्मा ने 25 गेंदों में चार चौके और एक छक्का लगाते हुए 31 रन बनाये। 14वें ओवर में रियान पराग आठ रन बनाकर पवेलियन लौट गये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये तिलक वर्मा ने गायकवाड़ के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच तीसरे विकेट के लिए 89 रनों की साझेदारी हुई। तीसरे विकेट के रूप में तिलक वर्मा 39 रन बनाकर आउट हुये। इशान किशन (17) और नीतीश कुमार रेड्डी 37 रन बनाकर आउट हुये। 41वें ओवर में टियान वैन वुरेन ने ऋतुराज गायकवाड़ को आउट किया। ऋतुराज गायकवाड़ ने 129 गेंदों में 12 चौकों की मदद से 117 रन बनाये। भारत ने 49.3 ओवर में छह विकेट पर 290 रन बनाकर मुकाबला चार विकेट से जीत लिया। निशांत संधु 29 रन और हर्षित राणा छह रन बनाकर नाबाद रहे। दक्षिण अफ्रीका के लिए टियान वैन वुरेन, ब्योर्न फ़ोर्टेन और ऑटनील बार्टमैन को दो-दो विकेट मिले।

इससे पहले आज यहां टॉस जीतकर दक्षिण अफ्रीका ए ने पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी दक्षिण अफ्रीका ए की शुरुआत बेहद खराब रही और भारतीय गेंदबाजों ने महज 16 रन के स्कोर पर उसके चार बल्लेबाजों को पवेलियन भेज दिया। पहले ओवर में अर्शदीप सिंह ने रूबिन हरमन (शून्य) का शिकार किया। इसी ओवर में ओवर में तिलक वर्मा ने जॉर्डन हरमन (शून्य) को रनआउट कर भारत दूसरी सफलता दिलाई।

शेरफेन रदरफोर्ड को गुजरात टाइटन्स से मुंबई इंडियंस में ट्रेड किया गया

मुंबई, 13 नवंबर। वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर शेरफेन रदरफोर्ड, गुजरात टाइटन्स (जीटी) से सफल ट्रेड के बाद, आईपीएल 2026 सीजन में मुंबई इंडियंस का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार हैं। जीटी द्वारा 2.6 करोड़ रुपये की फीस पर खरीदे गए रदरफोर्ड अपनी मौजूदा फीस पर मुंबई टीम में शामिल होंगे। 27 वर्षीय इस खिलाड़ी ने वेस्टइंडीज के लिए 44 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में छठे विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी का रिकॉर्ड अपने नाम किया है। उन्होंने पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आंद्रे रसेल के साथ 139 रनों की साझेदारी की थी। रदरफोर्ड ने अब तक 23 आईपीएल मैच खेले हैं, इससे पहले उन्होंने 2019 में दिल्ली कैपिटल्स और 2022 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का प्रतिनिधित्व किया था। वह 2020 में मुंबई इंडियंस और 2024 में कोलकाता नाइट राइडर्स टीम का हिस्सा थे, लेकिन उन सीजन के दौरान प्लेइंग इलेवन में शामिल नहीं थे।

बांग्लादेश के गेंदबाजों ने आयरलैंड को बड़ी हार की ओर धकेला

सिलहट, 13 नवंबर। बंगलदेश ने महमुदुल हसन जॉय (171) और कप्तान नजमुल शान्तो की शानदार बल्लेबाजी के बाद गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर पहले टेस्ट मैच के तीसरे दिन स्टंप्स के समय दूसरी पारी में आयरलैंड के 86 के स्कोर पर पांच विकेट झटक कर अपनी टीम के लिए बड़ी जीत का दरवाजा खोल दिया। एक विकेट पर 338 रन से आगे खेलते हुए आज बंगलादेश को दूसरा झटका सुबह के सत्र में बैरी मक्कार्थी ने दोहरे शतक की ओर बढ़ रहे महमुदुल हसन जॉय को आउटकर दिया। महमुदुल हसन जॉय ने 286 गेंदों में 14 चौके और चार छक्के लगाते हुए 171 रन बनाये। इसके बाद 89वें ओवर में मक्कार्थी ने मोमिनुल हक (82) को अपना शिकार बना लिया। मुशफिकुर रहीम (23), लिटन कुमार दास 60 रन बनाकर आउट हुये। इन दोनों को मैथ्यू हम्फ्रीज ने आउट किया। कप्तान ने 114 गेंदों में 14 चौकों की मदद से 100 रन बनाये। उन्हें एंडी मैक्ब्राइन ने आउट किया। मेहदी हसन मिराज (17) और हसन मुराद 16 रन बनाकर आउट हुये। बंगलादेश ने 141 ओवर में आठ विकेट पर 587 का विशाल स्कोर खड़ा करने के बाद 301 की बढ़त के साथ पारी घोषित कर दी। आयरलैंड की ओर से मैथ्यू हम्फ्रीज को पांच विकेट मिले। बैरी मक्कार्थी ने दो बल्लेबाजों को आउट किया। एंडी मैक्ब्राइन ने एक विकेट लिया। दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी आयरलैंड की शुरुआत खराब रही और उसने चौथे ही ओवर में केड कार्माइकल (पांच) का विकेट गंवा दिया। इसके बाद हैरी टेक्टर ने पॉल स्टर्लिंग के साथ दूसरे विकेट के लिए 47 रन जोड़े। इसी दौरान 18वें ओवर में पॉल स्टर्लिंग (43) रनआउट हो गये। हैरी टेक्टर (18), कर्टिस कैमफर (पांच) और लोर्कान टकर नौ रन बनाकर आउट हुये। दिन का खेल समाप्त होने के समय आयरलैंड ने 29 ओवर में पांच विकेट पर 86 रन बना लिये है और वह अभी भी बंगलादेश के पहली पारी में बनाये गये स्कोर से 215 रन पीछे है। बंगलादेश के लिए हसन मुराद ने दो विकेट लिये। नाहिद राणा और तैजुल इस्लाम ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

अर्जुन एरिगैसी और पी. हरिकृष्णा प्री-क्वार्टर फाइनल में, आर. प्रज्ञानंदधा बाहर

पणजी, 13 नवंबर। ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगैसी ने गुरुवार को दोनों रैपिड गेम्स में ग्रैंडमास्टर पीटर लेको को हराया, जबकि पी हरिकृष्णा ने दूसरे गेम में ग्रैंडमास्टर निल्स ग्रैंडेलियस को हराकर मिले मौकों का पूरा फायदा उठाया और फिडे विश्व कप 2025 के प्री-क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। हालांकि, आर प्रज्ञानंदधा का अभियान पांचवें राउंड में पूर्व विश्व रैपिड चैंपियन ग्रैंडमास्टर डेनियल डुबोव से हारने के बाद समाप्त हो गया। प्रणव वी और कार्तिक वेंकटरमन के पांचवें राउंड में क्लासिकल गेम्स में हारने के बाद, टाईब्रेक में तीन भारतीय थे और उनमें से दो अंततः अगले राउंड में पहुंच गए। अर्जुन दिन के सबसे बड़े स्टार साबित हुए क्योंकि उन्होंने शुरुआती रैपिड गेम काले मोहरों के साथ 40 चालों में जीत लिया। उन्होंने लेको की मोहरों की बलि देने की गलती का फायदा उठाया और फिर किल का प्रयास किया। दूसरे गेम में, हंगरी के खिलाड़ी को जीतना जरूरी था और भारतीय खिलाड़ी ने दबाव में संयम बनाए रखते हुए 57 चालों में जीत हासिल की। अर्जुन ने कहा, ''मैं बहुत खुश हूँ। टाईब्रेक अच्छा रहा। क्लासिकल गेम काफ़ी कड़े थे और दूसरे गेम में मुझे थोड़ी बढ़त मिली थी, लेकिन उसने ड्रॉ खेलने में अपनी कुशलता दिखाई। लेकिन टाईब्रेक में, मैं काफ़ी हद तक नियंत्रण में था। अर्जुन का सामना अब दो बार के विश्व कप विजेता ग्रैंडमास्टर लेवोन अरोनियन से होगा। हरिकृष्णा भी अगले दौर में पहुंच गए, जिन्होंने शुरुआती गेम में काले मोहरों के साथ ग्रैंडेलियस को रोकने में कामयाबी हासिल की।

चतुर्थ डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम स्मृति टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता
सावन के शतक, एनबी क्रिकेट एकेडमी की आसान जीत

जयपुर, 13 नवम्बर। मैत्री क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित आज एन.बी क्रिकेट ग्राउण्ड जगतपुरा में चतुर्थ डॉ.ए.पी.जे अब्दुल कलाम स्मृति टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज खेले गये मुकाबले में एन.बी. क्रिकेट एकेडमी ने सावन 135 रन (65 गेंद, 18 चौके, 4 छक्के) के शतक की बदौलत एलिट क्रिकेट एकेडमी को 91 रन से हराकर महत्त्वपूण 2 अंक अर्जित किये।

टॉस जीतकर एनबी. क्रिकेट एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये सावन 135 रन नाबाद व दर्शिल घीया 29 रन ने मिलकर 5.1 ओवर में 67 रन जोड़कर शानदार शुरुआत की। सावन के साथ मध्यक्रम में नारायण सिंह 28 रन अभिषेक मीणा 17 रन नाबाद के साथ मिलकर निर्धारित 20 ओवर में 3 विकेट खोकर 227 रन पंहुचा दिये। एलिट स्पोर्ट्स एकेडमी की ओर से राहुल 27 रन पर 2 विकेट, जसविन्दर सिंह 45 रन पर 1 विकेट सफल गेंदबाज रहे। जवाबी पारी में गेंदबाजी के बाद राहुल ने बल्लेबाजी में भी दमखम दिखाते हुये 58 रन (36 गेंद, 8 चौके, 2 छक्के) की अर्द्धशतकीय पारी खेली उनके अलावा सोहन 23 रन को छोड़कर एलिट स्पोर्ट्स एकेडमी का कोई भी बल्लेबाज बड़ी पारी खेलने में विफल रहा और निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 136 रन ही बना सकी। गेंदबाजी में एन.बी. क्रिकेट एकेडमी रोहन मीणा 13 रन पर 3 विकेट, मोहम्मद कुर्बान 21 रन पर 2 विकेट तथा जीतू रावत, नारायण सिंह व अतुल कुमार प्रत्येक 1-1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। इस मैच का मैन ऑफ दी मैच सावन एन.बी. क्रिकेट एकेडमी रहे।

राजस्थान टीम के चयन हेतु प्रक्रिया के संबंध में एक अवलोकन समिति का गठन

जयपुर, 13 नवम्बर। राजस्थान क्रिकेट संघ की तदर्थ कार्यकारिणी के बहुमत से यह निर्णय लिया गया है कि जूनियर, सीनियर (पुरुष) एवं महिला चयन समितियों द्वारा चयनित खिलाड़ियों की चयन प्रक्रिया की देखरेख हेतु निम्नलिखित सदस्यों की एक समिति गठित की गई है:- सतीश व्यास, महेंद्र शर्मा, मानद कोषाध्यक्ष, डीसीए उदयपुर, सुमेंद्र तिवारी मानद सचिव, डीसीए धौलपुर, रतन सिंह मानद सचिव, डीसीए बीकानेर, अरिथ सिंघवी, मानद सचिव, डीसीए जालौर। मानद सचिव, डीसीए जोधपुर। उपर्युक्त समिति राजस्थान क्रिकेट संघ को राजस्थान टीमों के चयन हेतु अपने क्रिकेट अनुभव से सहायता प्रदान करेगी।

भारतीय टेनिस टीम बेंगलुरु में इतिहास रचने की कोशिश में

बेंगलुरु, 13 नवंबर। भारतीय महिला टेनिस टीम शनिवार को बेंगलुरु के एसएम कृष्णा टेनिस स्टेडियम में अपने बिली जीन किंग कप 2025 प्ले-ऑफ अभियान की शुरुआत करेगी। बिली जीन किंग कप रैंकिंग में 27वें स्थान पर काबिज भारत को बिली जीन किंग कप 2025 प्ले-ऑफ़ में दुनिया की 14वें नंबर की टीम नीदरलैंड और 19वें नंबर की टीम स्लोवेनिया के साथ ग्रुप जी में रखा गया है। तीनों टीमें राउंड-रॉबिन मैचों में आमने-सामने होंगी और ग्रुप विजेता 2026 के क्वालीफायर में पहुंच जायेंगी। अन्य दो टीमें अगले सीजन के लिए अपने-अपने 2026 क्षेत्रीय ग्रुप एक मुकाबलों में वापस आ जायेंगी। भारत बिली जीन किंग कप के क्वालीफायर में कभी आगे नहीं बढ़ पाया है। नीदरलैंड और स्लोवेनिया शुक्रवार को ग्रुप का पहला मुकाबला खेलेंगे। नीदरलैंड की अगुवाई दुनिया की 87वें नंबर की खिलाड़ी सुज़ैन लामेंस करेंगी, जबकि स्लोवेनिया की टीम में पूर्व फ्रेंच ओपन सेमीफाइनलिस्ट तमारा ज़िदानसेक शामिल हैं। भारत का पहला मुकाबला शनिवार को स्लोवेनिया से होगा, उसके बाद रविवार को नीदरलैंड से मुकाबला होगा। विश्व की 309वें नंबर की खिलाड़ी सहजा यामालापल्ली, जो इन मुकाबलों के लिए भारत की शीर्ष वरीयता प्राप्त टेनिस खिलाड़ी हैं, बेंगलुरु में टीम का नेतृत्व करेंगी। इस साल की शुरुआत में, उन्होंने मेक्सिको में डब्ल्यूटीए 125 इवेंट में 2017 यूएस ओपन चैंपियन स्लोएन स्टीफंस को हराया था। वह पिछले महीने चेन्नई ओपन डब्ल्यूटीए 250 इवेंट के क्वार्टर फाइनल में भी पहुंची थीं। एशियाई खेल 2018 की कांस्य पदक विजेता अंकिता रैना, जो वर्तमान में एकल वर्ग में डब्ल्यूटीए रैंकिंग में 482वें स्थान पर हैं, भी टीम में हैं। श्रीवल्ली भामिदीपती (रैंक 381), रिया भाटिया (रैंक 468) और युगल विशेषज्ञ प्रार्थना थोम्बरे टीम की अन्य सदस्य हैं। भारतीय टेनिस टीम ने अप्रैल में बिली जीन किंग कप 2025 एशिया-ओशिनिया ग्रुप 1 में दूसरे स्थान पर रहकर अपनी जगह पक्की कर ली थी। भारत इससे पहले 2021 में प्ले-ऑफ में पहुंचा था, जहां उसे लातविया से 3-1 से हार का सामना करना पड़ा था।

भारत की उभरती क्रिकेट प्रतिभाओं पर रहेगी नजर

नई दिल्ली, 13 नवंबर। भारत की उभरती क्रिकेट प्रतिभाएं शुक्रवार को कतर के दोहा में शुरू होने वाले राइजिंग स्टार्स एशिया कप 2025 में सुर्खियों में रहेंगी। एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) द्वारा आयोजित यह टूर्नामेंट - जिसका पहला आयोजन 2013 में इमर्जिंग टीम्स एशिया कप के रूप में हुआ था - अब तक छह संस्करण पूरे कर चुका है। 2025 में होने वाली यह प्रतियोगिता, जो टी20 प्रारूप में खेली जाएगी, नए राइजिंग स्टार्स बैनर तले पहली बार आयोजित की जाएगी। अंडर-23 भारतीय क्रिकेट टीम ने सिंगापुर में आयोजित पहले संस्करण में जीत हासिल की थी, जबकि अफ़ग़ानिस्तान ए ने पिछले साल ओमान में आयोजित पिछले इमर्जिंग टीम एशिया कप का खिताब जीता था। श्रीलंका और पाकिस्तान भी पिछले चैंपियन हैं। इस साल का संस्करण 14 से 23 नवंबर तक चलेगा, जिसमें आठ टीमें - पूर्ण सदस्य देशों की पांच ए या विकासात्मक टीमें और तीन सहयोगी राष्ट्रीय टीमें - महाद्वीपीय टीम के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी। विकेटकीपर-बल्लेबाज जितेश शर्मा की अगुवाई वाली भारत ए क्रिकेट टीम को ग्रुप बी में पाकिस्तान शाहीन (पाकिस्तान ए), यूएई और ओमान के साथ रखा गया है। पिछले साल की विजेता अफ़ग़ानिस्तान, ग्रुप ए में है।

कूच बिहार ट्रॉफी के लिए राजस्थान टीम घोषित

जयपुर, 13 नवम्बर। बीसीसीआई की आगामी अंडर 19 कूचबिहारट्रॉफी (डेज) के लिए राजस्थान जूनियर चयन कमेटी ने आरसीए द्वारा आयोजित अंडर 19 चैलेंजर ट्रॉफी में खिलाडियों के प्रदर्शन के आधार पर राजस्थान टीम का चयन किया। राजस्थान का मुकाबला आगामी 16-19 नवम्बर को पॉण्डिचेरी टीम के विरुध्दजयपुर में होगा।

अंडर 19 कूच बिहार ट्रॉफी (डेज) के लिए घोषित राजस्थान टीम :- कुशाग्र ओझा (कप्तान), मनय कटारिया (उपकप्तान), आदित्य सैनी, चिराग सुखवाल, गुलाब सिंह, अभिषेक मुंड, हनी प्रताप सिंह, जतिन सैनी, कविश घुणावत, केतनदेवासी नावेदखान, ओसनिक ग्रोवर, रक्षित लुनावत, सानिल दुल्लर, शिफॉन खान, शिवांग सिंह शेखावत।

विनय की घातक गेंदबाजी से तारिक एकेडमी 7 विकेट से विजयी

जयपुर, 13 नवम्बर। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित प्रथम श्रीमती मुमताज खान स्मृति अण्डर-14 क्रिकेट प्रतियोगिता के अन्तर्गत आज नैना क्रिकेट एकेडमी जगतपुरा में खेले गये मुकाबले में तारिक क्रिकेट एकेडमी ने विनय शर्मा 7 ओवर 3 मेडन 12 रन 5 विकेट की घातक गेंदबाजी की बदौलत डायमण्ड क्रिकेट एकेडमी को 7 विकेट से हराकर 2 अंक अर्जित किये।

टॉस जीतकर तारिक क्रिकेट एकेडमी ने पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया उनका यह फैसला सही प्रतीत हुआ जब मीडियम पेसर विनय शर्मा ने शानदार गेंदबाजी करते हुये 12 रन पर 5 विकेट लेकर विपक्षी टीम की बल्लेबाजी क्रम को तहस-नहस कर दिया। तारिक क्रिकेट एकेडमी की ओर से सम्बित 15 रन पर 2 विकेट तथा गवनेश व विवेक प्रत्येक 1-1 विकेट ने भी शानदार गेंदबाजी करते हुये पूरी टीम को 19.1 ओवर में मात्र 72 रन पर समेटने में महत्वपूर्ण योगदार दिया। डायमण्ड क्रिकेट एकेडमी की ओर से जय शर्मा 32 रन ही एक मात्र बल्लेबाज रहे जो विपक्षी गेंदबाजों का डटकर मुकाबला कर सके। जवाबी पारी में तारिक क्रिकेट एकेडमी की ओर से भव्य सैनी 38 रन नाबाद नीरज 11 रन, दक्ष 10 रन नाबाद ने मिलकर विजय लक्ष्य 73 रन 3 विकेट खोकर मात्र 12.2 ओवर में हासिल कर 7 विकेट से जीत दिला दी। डायमण्ड क्रिकेट एकेडमी की ओर से एक मात्र सफल गेंदबाज 12 वर्षीय सम्यक जैन 21 रन पर 3 विकेट रहे। इस मैच का मैन ऑफ दी मैच विनय शर्मा तारिक क्रिकेट एकेडमी रहे।

अंडर-23 एक दिवसीय ट्रॉफी में राजस्थान ने हरियाणा को हराया, अमोल चेलानी शतक से चूके

जयपुर, 13 नवम्बर। अहमदाबाद में खेली जा रही अंडर 23 एक दिवसीय ट्रॉफी में आज राजस्थान ने हरयाणा को 5 विकेट से हराया। राजस्थान की जीत में अमोल चेलानी 99 रन बनाते हुए मैच मेंशतक से चुके। हरयाणा पारी 306 आल आउट। टीम के लिए विवेक कुमार 119, अंश 54, ऋषभ 44, सर्वेश 39 रन।

राजस्थान के गेंदबाज गणेश सुथार 47 / 4, दीपेंद्र 51 / 3 व चेतन शर्मा 65 / 2 व मोहित चांगरा 47 / 1 विकेट। राजस्थान पारी 307 / 5, लक्ष्य को राजस्थान टीम ने अमोल चेलानी, मुकुल चौधरी के अर्धशतकों व रोहन राजभर, अनिरुद्ध सिंह की शानदार बल्लेबाजी की सहायता से 5 विकेट के नुकसान पर 307 रन बनाते हुए मैच में विकेट से जीत दर्ज की। टीम के लिए अमोल चेलानी 99, मुकुल चौधरी नाबाद 58, अनिरुद्ध सिंह चौहान 43, रोहन राजभर नाबाद 33 व करण लाम्बा 28 रन। हरयाणा के गेंदबाज प्रथम 51/2 ।

अंडर 19 वीमेन चैलेंजर ट्रॉफी

वृंदा शर्मा का शतक, तानिया शर्मा, भव्या, प्रीत, अनुष्का, धृति, प्रियांशी, अल्पना के अर्धशतक, पलक, अनुष्का की बढ़िया गेंदबाजी।

पहला मैच टीम एच - टीम ई (टीम एच जीती), टीम एच पारी 235 आल आउट। टीम के लिए वृंदा शर्मा 115, मुस्कान 31 रन। टीम ई के गेंदबाज वध्या 30/2 विकेट। टीम ई पारी 161/8, टीम के लिए संजू 26 व मानशि 24 रन। टीम एच के गेंदबाज पलक 19/4 व तम्मना 13/2 विकेट।

दूसरा मैच टीम बी - टीम सी (टीम सी जीती), टीम बी पारी 224/4, टीम के लिए गौरवी 75, भव्या नाबाद 58, अंशुका 31, अनु 24 व तानिया शर्मा 16 रन। टीम सी की गेंदबाज भूमिका, वंशिका, मीनाक्षी, हृतिका 1-1 विकेट। टीम सी पारी 226/5, टीम के लिए तानिया शर्मा नाबाद 91, हैप्पी 37, रिया 37 व अंशु 23 रन। टीम बी की गेंदबाज संजू 25/2 विकेट।

तीसरा मैच टीम ऐ - टीम डी (टीम डी जीती), टीम ऐ पारी 243 आल आउट। टीम के लिए मैना 38, कनिष्का 34 व कंचन 33 रन, टीम डी की गेंदबाज अनुष्का 28/3, प्रियंका, ऋषिता 2-2 विकेट। टीम डी पारी 247/4, टीम के लिए प्रीत नाबाद 92, अनुष्का नाबाद 50, औली श्रीमाली 39 रन टीम ऐ की गेंदबाज सरोज, प्रिया 1 - 1 विकेट।

चौथा मैच टीम एफ - टीम जी (टीम एफ जीती), टीम एफ पारी 187/6, टीम के लिए धृति माथुर 69, प्रियांशी 64 रन। टीम जी की गेंदबाज अल्पना, दिव्यांशी, शिवानी, निकिता, प्रिया प्रत्येक 1-1 विकेट। टीम जी पारी 114/9, टीम के लिए अल्पनां 56 रन, टीम एफ की गेंदबाज रुतबा 14 / 2 व तनुश्री 20 / 2 विकेट।

ब्रदर्स ने फुटसल को 12-0 से हराया

जयपुर, 13 नवम्बर। राजस्थान फुटबॉल संघ के तत्वाधान में गाड़ौता स्थित फुटबॉल क्लब ब्रदर्स यूनाइटेड के फुटबॉल मैदान पर जारी अंडर - 17 बॉयज राजस्थान लीग 2025 - 26 के दूसरे दिन तीन मैच खेले गए, संघ सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि पहला मुकाबला स्टेट फुटबॉल एकेडमी जोधपुर और राजस्थान यूनाइटेड फुटबॉल क्लब के मध्य खेला गया जिसमें राजस्थान यूनाइटेड फुटबॉल क्लब ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मुकाबला 3 - 0 से अपने नाम किया, विजेता टीम की तरफ से शुभ, चुंग और ककचिंगदबाम ने एक - एक गोल किया, दूसरा मैच रिहान फुटबॉल एकेडमी और जयपुर एलीट फुटबॉल क्लब के मध्य खेला गया इस संघर्षपूर्ण मुकाबले में जयपुर एलीट ने मानव के अंतिम क्षण में किए गोल से मुकाबला 2 - 1 से जीत लिया, एलीट की तरफ से जतिन और मानव ने एक - एक गोल तथा रिहान की तरफ से अंकुर ने एकमात्र गोल किया।

लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक में क्रिकेट की शुरुआत 12 जुलाई से होगी

नई दिल्ली, 13 नवंबर। लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक में क्रिकेट की बहुप्रतीक्षित वापसी 12 जुलाई से शुरू होगी, और उसी महीने की 20 और 29 तारीखें पदक मुकाबलों के लिए निर्धारित हैं। आयोजकों ने बुधवार को लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक खेलों के लिए प्रतियोगिता कार्यक्रम जारी किया। अब तक ओलंपिक में क्रिकेट की एकमात्र उपस्थिति पेरिस 1900 में हुई थी, जिसमें केवल दो टीमें - एक ग्रेट ब्रिटेन की और एक फ्रांस की - एक दो दिवसीय मैच में प्रतिस्पर्धा कर रही थीं - जिसे अब एक अनौपचारिक टेस्ट के रूप में मान्यता प्राप्त है। ग्रेट ब्रिटेन ने स्वर्ण पदक जीता। लॉस एंजेलिस 2028 में, क्रिकेट पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग टी20 प्रारूप टूर्नामेंटों के साथ और भी आधुनिक रूप में वापसी करेगा - प्रत्येक टूर्नामेंट के अपने-अपने पदक होंगे - स्वर्ण, रजत और कांस्य। 14 और 21 जुलाई को लॉस एंजेलिस 28 में कोई क्रिकेट मैच निर्धारित नहीं है। ज़्यादातर मैच के दिन दो मैच होंगे, जिनमें स्थानीय लॉस एंजेलिस समय के अनुसार खेल सुबह 9:00 बजे और शाम 6:30 बजे शुरू होंगे। पदक मैचों के लिए भी यही नियम है। भारतीय मानक समय के अनुसार, पहला मैच रात 9:30 बजे से शुरू होगा जबकि दूसरा मैच अगले दिन सुबह 7:00 बजे से शुरू होगा। पुरुष और महिला दोनों ही टूर्नामेंटों में छह टीमें प्रतिस्पर्धा करेंगी, जिनमें कुल 28 मैच होंगे। प्रत्येक लिंग के लिए कुल 90 एथलीट कोटा आवंटित किए गए हैं, जिससे प्रत्येक टीम 15 सदस्यीय टीम का चयन कर सकेगी।

आईपीएल 2026 में वॉटसन होंगे केकेआर के सहायक कोच

कोलकाता, 13 नवंबर। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 से पहले ऑस्ट्रेलिया के पूर्व ऑलराउंडर शेन वॉटसन को टीम का सहायक कोच नियुक्त किया है। 59 टेस्ट, 190 एकदिवसीय और 58 अंतरराष्ट्रीय टी-20 मैच खेल चुके क्वींसलैंड के शेन वॉटसन, अभिषेक नायर के साथ काम करेंगे।

मुख्यमंत्री ने दिल्ली में ऊर्जा, जल परियोजनाओं व स्किल डवलपमैंट पर चर्चा की

वे ऊर्जा मंत्री खट्टर, जल शक्ति मंत्री पाटिल व कौशल विकास मंत्री जयंत चौधरी से मिले

नई दिल्ली/जयपुर, 13 नवम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरुवार को नई दिल्ली में केन्द्रीय ऊर्जा, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल, केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल एवं केन्द्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी से मुलाकात की। इस दौरान, मुख्यमंत्री ने प्रदेश के विकास को नए आयाम देने की दिशा में शहरी विकास, ऊर्जा, जल परियोजनाओं एवं कौशल विकास से जुड़े विषयों पर विस्तृत चर्चा की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरुवार को नई दिल्ली में केंद्रीय ऊर्जा, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में राजस्थान में सौर ऊर्जा के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सौर ऊर्जा व विद्युत निकासी सुदृढ़ीकरण, फिरोजपुर फीडर रीलाइनिंग व रामजल सेतु की प्रगति से केन्द्रीय मंत्रियों को अवगत कराया।**

मुख्यमंत्री शर्मा ने केंद्रीय ऊर्जा, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल से भेंट के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भी बैठक की। बैठक में राजस्थान में भारत के सौर ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने की अपार संभावनाओं को देखते हुए विद्युत निकासी के सुदृढ़ीकरण को लेकर चर्चा की गई।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री सी. आर. पाटिल से मुलाकात के दौरान प्रदेश में जल आपूर्ति, जल संचयन सहित, जल परियोजनाओं पर वार्ता की। दोनों के मध्य फिरोजपुर फीडर रिलाइनिंग एवं रामजल सेतु लिंक परियोजना की प्रगति को लेकर चर्चा हुई। इस दौरान प्रदेश में चल रहे "कर्मभूमि से मातृभूमि" अभियान की सफलता की सराहना की गई।

इसके बाद मुख्यमंत्री शर्मा ने केन्द्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी से भी मुलाकात की। शर्मा एवं चौधरी के बीच केन्द्र सरकार के सहयोग से राजस्थान को स्किल डवलपमेंट हब बनाने से जुड़े रोडमैप पर चर्चा की गई।

'अगर सरकार नहीं ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

माँग हुई तो भाजपा नीतीश कुमार को एक और कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री बनाने के पूरे विरोध में शायद नहीं होगी।

एक प्रश्न के उत्तर में, वरिष्ठ नेताओं ने कहा कि भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि मुख्यमंत्री पद को लेकर फैसला नतीजों के बाद ही लिया जाएगा। लेकिन पार्टी खेमे में बढ़ती चिंता अब स्पष्ट दिख रही है। आंतरिक आकलनों के मुताबिक, भाजपा के कई मौजूदा मंत्री और दोनों उपमुख्यमंत्री अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में कड़े मुकाबले का सामना कर रहे हैं। अगर भाजपा की सीटों की संख्या 2020 के मुकाबले घटती हैं, तो मुख्यमंत्री पद पर उसका दावा कमजोर हो जाएगा और उसे चुनाव बाद नए समीकरणों पर विचार करना पड़ सकता है। पार्टी के एक अंदरूनी सूत्र ने स्वीकार किया, "अगर संख्या नहीं बढ़ी, तो केन्द्रीय नेतृत्व के लिए भाजपा के मुख्यमंत्री पर अड़े रहना मुश्किल होगा।"

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरती है और कांग्रेस की सीटें बढ़ती हैं, तो स्थिति तेजस्वी यादव के पक्ष में जा सकती है। सूत्र बताते हैं कि आरजेडी ने पहले से ही एक आक्रामक रणनीति तैयार कर ली है, ताकि नतीजों के बाद भाजपा के किसी भी राजनीतिक कदम का तुरंत जवाब दिया जा सके और जल्दी से बहुमत हासिल किया जा सके।

बिहार में शुक्रवार को वोटों की गिनती से पहले भाजपा एक पारंपरिक राजनीतिक दुविधा में फंसी दिख रही है - क्या वह अपनी "अकेले चलने" की महत्वाकांक्षा पर कायम रहे या व्यावहारिक होकर एक बार फिर नीतीश कुमार को गले लगाये, ताकि राज्य की जटिल सत्ता संरचना में अपनी पकड़ बनाए रख सके।

सख्त सुरक्षा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आरजेडी और कांग्रेस शामिल हैं और जिसका नेतृत्व तेजस्वी यादव कर रहे हैं, को अप्रत्याशित जीत मिलेगी।

चुनाव आयोग (इलैक्शन कमीशन-ईसी) ने बताया है कि मतगणना 38 जिलों के 46 केन्द्रों पर होगी। कुल 7.4 करोड़ पात्र मतदाता 2,600 से अधिक उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला करेंगे।

चुनाव आयोग ने बताया, 6 और 11 नवंबर को दो चरणों में हुए मतदान में करीब 67 प्रतिशत लोगों ने हिस्सा लिया, जो स्वतंत्र भारत में 1951 से अब तक बिहार में सबसे अधिक मतदान प्रतिशत है।

नतीजों से पहले के दिनों में सुरक्षा व्यवस्था बहुत कड़ी कर दी गई है, क्योंकि आरजेडी ने चुनाव आयोग और राज्य प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव, 2025 के नतीजों से एक दिन पूर्व, गुरुवार को पटना के एएन कॉलेज, जो मतगणना केन्द्र है, के प्रवेश द्वार पर सुरक्षा व्यवस्था काफी कड़ी कर दी गई।

ईसी अधिकारियों के अनुसार, मतदान मशीनें स्ट्रॉन्ग रुम्स में "डबल लॉक सिस्टम" से सील की गई हैं। इन परिसरों की सुरक्षा व्यवस्था द्वि-स्तरीय रखी गई है- भीतरी घेरे की जिम्मेदारी केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों को सौंपी गई है, जबकि बाहरी सुरक्षा राज्य पुलिस कर रही है। सभी जगह सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं।

पारदर्शिता बनाए रखने के लिए, खासकर इस स्थिति में, जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठा रहा है, पूरी मतगणना प्रक्रिया की वीडियो रिकॉर्डिंग की जाएगी। यह कार्य केन्द्रीय चुनाव पर्यवेक्षकों और उम्मीदवारों द्वारा नियुक्त प्रतिनिधियों की मौजूदगी में होगा।

नई ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में छूट दी जाए या नहीं। इसके बावजूद, एकलपीठ ने सरकार के राजनीतिक दबाव में होने, जातीय लॉबी समूह के वोटों के दबाव और कई इंटरनेशनल मीडिया की रिपोर्टिंग में युवाओं के भविष्य को लेकर चिंता जताने की बात कही। जबकि याचिका में किसी भी पक्ष की ओर से इस संबंध में कोई बहस नहीं की गई थी और न ही याचिका में इस तरह की कोई प्रार्थना की गई थी। इसके बावजूद एकलपीठ ने इस तरह की गंभीर टिप्पणियां कर दीं।

बांग्लादेश सरकार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मिलकर "जुलाई चार्टर" नामक दस्तावेज़ तैयार किया, जिसमें बांग्लादेश के पुनर्निर्माण और राज्य संस्थाओं के सुधार का खाका प्रस्तुत किया गया।

इस चार्टर में मांग की गई कि छात्र आंदोलन और सरकार के निष्कासन को संवैधानिक रूप से मान्यता दी जाए और नए संविधान में "संतुलन और नियंत्रण" के सिद्धांतों को शामिल किया जाए। इसमें कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका के अधिकारों की सीमाएँ स्पष्ट रूप से तय करने की बात भी कही गई। इसके अलावा, छात्रों ने यह भी मांग की थी कि बांग्लादेश को बहु-जातीय, बहु-धार्मिक और बहुभाषी राष्ट्र के रूप में पुनर्गठित किया जाए। उनका कहना था कि जब तक इस चार्टर को स्वीकृति नहीं मिलती, तब तक नया चुनाव वैध नहीं ठहराया जा सकता। इसीलिए, राष्ट्रीय चार्टर पर जनमत संग्रह और संसदीय चुनाव दोनों एक ही दिन कराए जाने का प्रस्ताव है। चुनाव के बाद बनने वाली नई सरकार को इस चार्टर को अपनी नीतियों की आधारशिला बनाना होगा।

वर्तमान सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने वादा किया है कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष होंगे। हालांकि अभी तक कोई ऐसा संकेत नहीं मिला है कि प्रमुख राजनीतिक दल अवामी लीग को प्रतिबंधित दलों की सूची से हटाया जाएगा या नहीं।

भारत ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ठिकानों में शुमार न्योमा एयर बेस करीब 13 हजार 500 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। इस बेस से चीन की सीमा केवल 23 किलोमीटर दूर है। थॉयस, करगिल और लेह के बाद लद्दाख में यह वायु सेना का चौथा बेस है।

तेज ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

टक्कर मार दी। जोरदार टक्कर लगने से गौरीशंकर उछलकर दूर जा गिरा। वहीं सोनू, बाइक सहित डंपर के नीचे घसीटता हुआ चला गया, जिसके बाद सोनू ने घटना स्थल पर ही दम तोड़ दिया।

मोदी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जुड़ा आठवां गिरफ्तार व्यक्ति 40 वर्षीय डॉ. शाहीन सईद है, जो फरीदाबाद स्थित अल-फलाह यूनिवर्सिटी में अध्यापन कर रही थी। उन्होंने एक सरकारी सूत्र के हवाले से बताया कि शाहीन की कार से एक असॉल्ट राइफल बरामद की गई और यह भी दावा किया गया कि "उसे पता था कि उसकी कार से विस्फोटक सामग्री ले जाई जा रही थी।" आरोप है कि वह कश्मीर घाटी के बाहर आतंकी संगठन के लिए एक नया ठिकाना (बेस) तैयार करने के प्रयास का हिस्सा थी।

छः दिसम्बर को पूरे देश में 32 कारों से सीरियल ब्लास्ट की साजिश थी

- **लाल किले के पास हुए कार विस्फोट की जांच में हो रहे हैं सनसनीखेज खुलासे**
- **सीरियल ब्लास्ट के लिये ब्रैत्ज़ा, स्विफ्ट डिज़ायर और आई-20 जैसी 32 गाड़ियां जुटाई गई थीं, श्रीनगर का रहने वाला एक और संदिग्ध डॉ. निसार भी फरार है।**

नई दिल्ली, 13 नवम्बर। लाल किले के पास 10 नवंबर को हुए कार धमाके की जांच में लगातार रोंगटे खड़े करने वाले खुलासे हो रहे है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, यह धमाका एक बड़ी और खतरनाक साजिश का छोटा सा हिस्सा था। आतंकियों का मकसद बाबरी मस्जिद विध्वंस की बरसी, यानी 6 दिसंबर को, दिल्ली सहित देशभर में 32 कारों में बम लगाकर सीरियल ब्लास्ट करना था। वे बाबरी का बदला लेना चाहते थे। इस धमाके में अब तक 13 लोगों की जान जा चुकी है। इस सीरियल रिवेंज अटैक के लिए ब्रैत्ज़ा, स्विफ्ट डिज़ायर और आई20 जैसी 32 गाड़ियां जुटाई गई थीं। 10 नवंबर को आई20 कार में हुआ धमाका इसी का हिस्सा था। जांच एजेंसियों को अब तक चार कारें मिल चुकी हैं। केंद्र सरकार ने भी इस ब्लास्ट को आतंकी हमला मान लिया है। इस बीच, हरियाणा के खंदावली गांव में एक और लावारिस गाड़ी मिलने से हड़कंप मच गया है, जिसकी जांच एनएसजी की टीम कर रही है। इस पूरे मॉड्यूल का केंद्र फरीदाबाद की अल फलाह यूनिवर्सिटी बन गई थी। यहीं असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मुजम्मिल गनी ने किराए के कमरे को विस्फोटक जमा करने का अड्डा बनाया था।

पुणे में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गई और आग लगने के कुछ सेकेंड में ही लपटों में घिर गई। ट्रक में आग लगने से इसका ड्राइवर बाहर नहीं निकल सका। लिहाजा उसकी भी जलकर मौत हो गई। पीछे एक यात्री वाहन था, वह भी आग की चपेट में आ गया। उसमें 17-18 लोग सवार थे। सभी घायल हुए हैं। इसके अलावा कुछ कारें और अन्य वाहन भी आपस में टकरा गए।

पंजाब में आईएसआई के आतंकी मॉड्यूल का खुलासा, 10 गिरफ्तार

चंडीगढ़, 13 नवम्बर। पंजाब पुलिस ने पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई द्वारा समर्थित हमले के एक नेटवर्क का बृहस्पतिवार को पर्दाफाश कर इस सिलसिले में 10 लोगों को गिरफ्तार किया। राज्य के डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि आरोपी पंजाब में अशांति पैदा करने के लिए ग्रेनेड हमला करने हेतु पाकिस्तान स्थित आकाओं के संपर्क में थे। गौरव यादव ने बताया कि आरोपियों में से तीन की पहचान कुलदीप सिंह, शेखर सिंह और अजय सिंह उर्फ अजय के रूप में हुई है और वे सभी मुक्तसर साहिब के निवासी हैं।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908